

प्रकाशक

श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संघ (अकादमी)

रेल्वे क्वार्टिंग, कोटगेट

वीकानेर (राजस्थान)

भाग १ : अंक २

अप्रैल : १९७३

वरस रो मोल १२'००

अक अंक रो मोल ३'००

मुद्रक :

मॉडर्न प्रिंटर्स, धारवा

सूचनिका

१. पृथ्वीराज में प्रणाम ।
श्री मनोहर जर्मा
२. श्री निरुचदजी भर्तृहरि
श्री मयनारायण स्वामी
३. बदनमाळ
श्री रामगिह
४. भीम - लखो जीरुण
श्री मरोणमदाग स्वामी
५. भीटा मयना, नारायणी
श्री उदयवीर जर्मा
६. योगानंदजी
श्री छत्रनारायण गुरोतरिण
७. भेदा गोपी, मग बृह उपाधी
श्री श्रीभारतगिह केल्लाखण
८. काशी भगवा
श्री दामोदर प्रसाद
९. गार्हपत्यकारी या तीर्थल - गार्हपती या ७३
श्री रामनाथ स्वामी भारिकर
१०. भयो हेतु दृष्ट्या ही
श्री मरुट भानाखन

प्रकाशक

श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

रेल्वे कार्सिंग, कोटगेट

वीकानेर (राजस्थान)

भाग १ : अंक २

अपरिम : १९७३

वरम रो मोल १२'००

थेक अंक रो मोल ३'००

मुद्रक :

श्रीराम प्रिन्टर्स, आगरा



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किष्की दिन
दीवानेर में
गोनै रो मूरज ऊग्यो,
राजमहल मे
सोनै रो घाल बाग्यो,
पृथ्वी पर
पृथ्वीराज रो अक्षररत्न हयो ।

भारतमाता रो
धो पाहलो सपुत
राजबश सूं गौरवाचिक नी हयो,
जिण भांत
धीर घणा ही राजपुत
महिमावान हया ।

हण महावीर
आप रें भुज-बट नू,
हण महापंडित
आप री रमान-नाथना नू,
हण परमभक्त
आप री देवा-गुहा नू

१७. ठैरघोड़ो बिन्दु (अनुवादित कविता)
श्री पावलो नरूदा
श्री नदलाल शर्मा
१८. भाग भुवाळी
श्री शिन्न पांडे
१९. कागण
श्री सांवरमल दाधीच
२०. धर मुरधर रा घोरिय
श्री रामसिंह
२१. वजात रो बीर
श्री सत्ताईसिंह घमोरा
२२. मूमल
श्री दीनदयाल ओझा
२३. अक नयो मठ
श्री मनोहर शर्मा
२४. हार को मानू.नी
श्री रामेश्वरदयाल श्रीमाळी
२५. प्यार 'मिनी'-वातां
श्री भोम अरोड़ा
२६. सोनसदे सोडी
श्री पद्मानाथ 'पद्मल'
२७. पाट कुण उतारसी ?
श्री मनुज राजस्थानी
२८. माय रो मोल
श्री गोपाळ राजस्थानी
२९. दिनचर्या
श्री भंडारमान गुप्ता 'भ्रमर'
३०. बनराय्या री अडाव
श्री मोहन भागोड
३१. हूं काश्मिरीकार हूं
श्री दीनदयाल शर्मा
३२. अमोर् अलीगढ़, अमोर् अलीगढ़
श्री अलीगढ़वासी अलीगढ़ी
३३. अमोर् अलीगढ़
श्री अलीगढ़वासी अलीगढ़ी



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किणी दिन
 धीकानेर मे
 सोने रो मूरज ऊग्यो,
 राजमहल मे
 सोने रो धाळ बाग्यो,
 पृथ्वी पर
 पृथ्वीराज रो अवतरण ह्यो ।

भारतमाना रो
 धो साइलो मपूत
 राजवण मू गौरवाभित भी ह्यो,
 जिन भान
 भीर घणा ही राजपूत
 महिमादान ह्यो ।

हण महावीर
 भाप रे भुज-बट मू,
 हण महार्पादन
 भाप ही क्यान-जायना मू,
 हण परमभन
 भाप ही देवा-दुवा मू

१७. ठैरघोड़ो बिन्दु (अनुवादित कविता)
श्री पावनो नरुदा
श्री नदलाल शर्मा
१८. भाग भुवाळी
श्री शिवा पाडे
१९. फागण
श्री सांकरमत दाधीच
२०. घर मुरपर रा घोरिय
श्री रामसिंह
२१. वजासँ रो वीर
श्री सत्तार्दिसिंह घमोरा
२२. मूमल
श्री दीनदयाल ओझा
२३. अँक नयो मठ
श्री मनोहर शर्मा
२४. हार को मानू. नी
श्री रामेश्वरदयाल थीमाळी
२५. प्यार 'मिनी'-वातां
श्री ओम अरोडा
२६. सोनमदे सोडी
श्री पद्मनाभ 'पद्मल'
२७. पाई कुण उगारमी ?
श्री मनुज रात्ररथानी
२८. मायँ रो मोल
श्री गोरगड रात्ररथानी
२९. दिनबर्ना
श्री पंढरनाथ गुपार 'पद्मल'
३०. अतराया री अडाअ
श्री मोहन भागोड
३१. हू माँदिसर हू
श्री दीनदयाल शर्मा
३२. अनेरू अनीरू. अनीरू अनीरू
श्री अनेरू अनीरू अनीरू
३३. अनेरू अनीरू
अनेरू अनीरू



पृथ्वीराज नै प्रणाम !

—मनोहर शर्मा—

किणी दिन
ढोकानेर में
सोने रो मूरज ऊग्यो,
राजमहल में
सोने रो घाळ वाज्यो,
पृथ्वी पर
पृथ्वीराज रो अवतरण ह्यो ।

भारतमाना रो
ओ लाटलो सपून
राजबन सूं गौरवान्वित नी ह्यो,
त्रिण भान
धीर घणा ही राजपून
महिमाप्राप्त ह्या ।

एण महावीर
आप रें भुज-बट सूं,
एण महापंडित
आप ही ग्यान-साधना सूं,
एण परमभक्त
आप ही सेवा-गुहा सूं

गौरव ग्रहण करधो,
 लोक-हिरदै मे प्रतिष्ठा पावो,
 गुण-गरिमा रो कीर्ति-मान धापित करधो ।
 इण महामनीषी
 श्रीकृष्ण-चरित्र रै पावन प्रकाश मे
 भारत री जनता नै
 गीता रो अमर सदेश
 फेरू दियो ।

इण दिव्य पुरुष
 आप रै मन्त्र-बळ सू
 आरज-भोम मे आपमर्त
 स्त्रापीनता-भूरज नै
 मळभळाट करतो राख्यो ।

राष्ट्ररक्षि पृथ्वीराज री याणी
 हिमाचळ रो गौरव-मान है,
 गंगा रो पावन पीन है,
 रतनाकर रो गभीर घोष है,
 भारती री बीजा रो दिव्य मुर है ।

भारती-महा पृथ्वीराज नै
 प्रणाम !
 बारबार प्रणाम !

राजस्थानी रा समर्थ सेवक

श्री शिवचंद्रजी भरतिया

—सत्यनारायण स्वामी—

(१)

आधुनिक राजस्थानी साहित्य रं इतिहास मे श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो नांत सोनै रं आसरा मे लिखीजसी । राजस्थानी रं आज रं साहित्य नं उणा अेक जबरदस्त मोड़ दियो । हिंदी-साहित्य रं समुत्थान और उण री थोवृद्धि मे जिको काम भारतेंदु हरिश्चंद्र करघो ठीक बो ही काम राजस्थानी साहित्य मे भरतियाजी करघो । भरतियाजी आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा प्रथम महत्त्वपूर्ण साहित्यकार है ।

श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो जन्म विक्रमी सवत १९१० री चैत सुदि सातम रं दिन ह्यो । 'फाटका-जजाळ' नाटक मे उणा आप रो परिचय इण भात दियो है—

'म्हारो जन्म बरिष्ठ वैश्यकुल मे हू अग्रवशी तथा ।

गोत्री सिंगल, बेंक छे भरतिया, 'विद्यानिवास' प्रया ॥

('विद्यानिवास' जिण की पदसी छे)

दादा गगारामजी, जिण को पुण्य अपार ।

जाया मुत बळदेवजी, कीनो बुळ-विस्तार ॥१३॥

उण को मुत शिवचंद्र है, बुळ मे शास्त्र-प्रवीन ।

बुळ की रीत मुधारवा, कीनो प्रय नवीन ॥१४॥

भरतियाजी च्यार भाई हा । च्यार भाया मे वं रागळा मू बडा हा । पिताजी री मृत्यु रं बाद उणा री सगळी संपत्ति छोटिया तीनू भाया आपस मे बाट सी और उणां रं हाय की नही आयो । इण कारण उणा ध्यापार करणो छोटने वकालत करणी सरू करी । पण वकालत मे उणां रो जी नही लाग्यो और उणा इशोर मे सरकारी नौकरी कर ली ।

भरतियाजी आप रं जीवण मे घणा ही ताता-ऊता उतार-चढाव देख्या । वं मनमोजी जीव हा । पराधीन रंयने जिण रं ही शार्थ काम कीनी कर सक्या । इण कारण वं ना तो अेक जाग्यां पूरी तरं टिकने काम कर सक्या और ना ही उणां कोई अेक ही तरं रो घधां करयो । जीवण मे उणा रं मोठो प्रज्ञान रंयो ।

कलाम उक्त गुणोदी गुणिया माहे पण अंधेरी गुण ने अरु कोण भावी राते, इन को अभिमान भाव मर्यादा ने लही जाई ?”

ओर भरतियाजी राजस्थानी समाज ने अंधेरी गुण मू बाहे मातृम मातृ कर्मर कपी ओर भाग री कलम री ज्ञानी कोर मू उक्त को भावें प्रकृत्य कर्मर को प्रकाश करयो, परफूट प्रकाश करयो ।

(३)

भरतियाजी री गुणोदी गुणिया री मर्यादा राजस्थानी में १, हिंदी में १०, मराठी में १३ ओर मगध में ३ है । सं० १९१३ में प्रकाशित 'मुद्राणा की मर्यादा' नाटक रं देहलें वृष्ट रं विज्ञान में उणा री रचित कृतिमा री विवरण इन प्रकार है—

'विज्ञेदुचरिका (मगध, मराठी), गीतापं-नदपावती (मराठी), केसर-विनाग (मारवाडी)— दूगरी वार इत रही रे, कनकसुंदर (मारवाडी), प्रकाश-मुमुमात्रमी मुख्य १० (हिंदी), मुद्राणा की मर्यादा नाटक (मारवाडी), मोरगा की कठी (मारवाडी), मुयंष्टक (मगध), राजारो;ण-प्रकाशित (मगध) मोरगाजन (हिंदी) ।

तिलकर तंमार—पाटका-जजाळ नाटक (मारवाडी), मतिस्वाम नाटक (मराठी), अनुत्तर तीर्यं मतक (मराठी), आर्या सहरी (मराठी), विनाग पागुवन (हिंदी) ।

तंमार हो रही छं—अब क्या करना चाहिए ? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली ओर मारवाडी; बोधदर्पण (मारवाडी) ।

भरतियाजी री जानरी छप्योदी पोषी 'सूर्यचक्रयेप' मिलें है जिनी उणां द्वारा आयोजित 'विचार-दर्शन' नांन रं अंक विनाल छप रो अंक अण है । उण रो विषय योग-विदधा ओर वेदात मू संबधित है ।

पुस्तक-लेखन कार्य रं अतिरिक्त उणां हिंदी पत्र 'बैशेषकारक' रं संपादन में भी घणो सहयोग दियो । सामयिक समस्यानां पर उणां रा जिका विचार हा र्यं मोरली कहाण्या ओर निबंधा रं रूप में उण में नियमित रूप मू प्रकाशित हुया हा ।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनानां में 'कनक-सुंदर' नांन री कृति राजस्थानी भाषा रो पैलो उपन्यास है ओर भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकें है । उण रो पैलो भाग ही छप सकयो, दूसरो भाग प्रकाश में नही आयो । ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो अद हिंदी में चद्रकांता-सतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी ओर जासूसी उपन्यासा रो बोलबालो हो । कनक-सुंदर सामाजिक उपन्यास है । इण में उण टैम रं मारवाडी समाज री कथा नै जिण सरस ढग मू प्रस्तुत करी है उण नै देखनै लोग घणा प्रभावित हुया । कनक ओर सुंदर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिका रो प्रारंभिक जीवन ही पैलें भाग में आ पायो है । उपन्यास रो प्रारंभ इण भात हुयें—“दोपहर को बसत । चारघां कानी लू चाल रही छे । हवा का जोर मू बाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर बी-का नत्ता-नत्ता टीबा हो रघा छे, ओर भीजण भी रह्या छे । मुह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । लू कपड़ा माहे वड़कर सारा सरीर ने सिकताव कर रही छे । धूप इसी जोर की पड रही छे के जमी ऊपर पग देणो

मुस्कल छे । रस्ता माहे दूर-दूर कठेही झाड को नात्र नही । बाळू उडकर जगा-जगा नत्रा टोबा होणे सू रास्ते को ठिकाणो नही । आदमी तो दूर, रास्ता माहे कोई जोव-जिनात्र को भी दरसन नही । इणे वगत अक ज्ञान आदमी जिण की उमर सोळा-सत्रा वरस की थी, माघो कपड़ा सू धंध्यो हुन्नो, हुण-हुण करतो-करतो अजमेर कानी चल्थो आ रहथो छे । रैती गरम होणे मूं पगा के धरका लागकर फोडा आ रहथा छे, तो भी जोर सू चाल रहथो छे ।”

उपन्यास मे आपणें देश मे व्याप्त पूट री जिकी कमजोरी ही उण तरफ भी भरतियाजी सकेत करण मे कोनी घुब्या—‘अपणा देश माहे अको नही जरा तो आपणी राज्यसत्ता पराया लोग के हाथ गयी …… देखकर सारा द्रष्ट बोल्या के आ तो ‘पूट’ छे । साहेब हसकर बोल्या के ओ इशो अनोतो पळ घारा देश माहे छे जरा तो म्हां लोग को राज हूवो ; नही तो म्हांकी कोई मगदूर थी सू हजार कोस पर आकर थांके ऊपर हकूमत करता ? इण माहे कोई पूट छे । इण पूट तो सारा देश को सत्यानास कर दीनो ।”

‘केसर-विलास’ (प्रकाशनकाळ सवत् १९५७) भरतियाजी री पैली राजस्थानी रचना और राजस्थानी री पैलो नाटक है । इण आदर्शोन्मुखी यथायंवादी नाटक री स्वाभाविकता और यथायंवादिता हिंदी री पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी नें भी पणा प्रभावित करथा । उणा ‘सरस्वती’ मे लिख्यो—रचना इसकी बहुत ही स्वाभाविक है । कही-कही पढ़ते समय, स्वाभाविकता का इतना आविर्भाव हो उठता है कि इस बात की विस्मृति हो जाती है कि यह कल्पित कथा पढ रहे हैं । [सरस्वती, अक्टूबर, १९०४, पृ० ३६८] इण नाटक मे अणमेल व्यास री समस्या उठायी है । अणमेल व्यास री बुराई बतायनें समाज नें उण सू विमुक्त करणो ही इण रो उद्देश्य है ।

और लगभग आ ही समस्या ‘बुढ़ापा की सगार्ई’ नाटक (प्रकाशनकाळ सवत् १९६३) मे उठायी है । भरतियाजी इण री भूमिका मे लिख्यो है—“इण माहे स्त्रिया की स्वतंत्रता की हृद, बी का परिणाम, बुढ़ापा माहे व्यास की इच्छा, बी को अविचार, सगार्ई, बी को बधन और बी बधन को परिणाम, इत्यादि सरळ मारवाडी बोली माहे दरगाया छे । जगा-जगा नीति, उपदेश, बोध, शिक्षा, धर्म और विचार को बण्यो जडे ताई उल्लेख बीनो छे । मारवाडी समाज की स्थिति, घर की और बाहर की बातें, विचार की भिन्नता, पचायन और स्त्री-पुरुष का बरलास पर पूब विचार बरके बधामाग इशो जमायो छे के जाणे आ इशो-बी-इशो कठे हुयोटी साबी दान छे ।”

‘पाटवा-जनाळ’ (रचना सवत् १९६४) भरतियाजी री तीसरो नाटक है । उणा इण मे मारवाडी समाज नें पाटवा (सट्टा) और इण मरीगा दूसरा दुगुंणा सू हुबणवाटी हाणा रो चित्र अंकित करथो है—“प्रेम अनुभव विना जाण्यो जावे नहीं । मधुपान करथा विना बी बी माधुरी मालम होखे नहीं । जिण सू अनिर्वचनीय आनंद होखे, जटीने हृदय पिचीदे, जिण के धास्ते प्रबळ हृत्ता उत्पन्न होखे, और जिण का नाम सू हृदय स्नेहपूर्ण होखे बी ही प्रेम । ओ भाव परस्पर को हृदय अक के कानी अक

गौरस्र ग्रहण करघो,
 लोक-हिरदै मे प्रतिष्ठा पायो,
 गुण-गरिमा रो कीर्ति-मान थापित करघो ।
 इण महामनीषी
 श्रीकृष्ण-चरित्र रै पावन प्रकाश में
 भारत री जनता नै
 गीता रो अमर सदेश
 केरू दियो ।

इण दिव्य पुरुष
 आप रै मंत्र-बल सू
 आरज-भोम मे आधमत्तै
 स्त्राधीनता-सूरज नै
 भल्लभलाट करतो राख्यो ।

राष्ट्रकवि पृथ्वीराज री वाणी
 हिमाचल रो गौरस्र-गान है,
 यगा रो पान्नन गीत है,
 रतनाकर रो मभीर धोप है,
 भारती री वीणा रो दिव्य सुर है ।

भारती-भक्त पृथ्वीराज नै
 प्रणाम !
 बारवार प्रणाम !

राजस्थानी रा समर्थ सेवक

श्री शिवचंद्रजी भरतिया

—सत्यनारायण स्वामी—

(१)

आधुनिक राजस्थानी साहित्य र इतिहास मे श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो नांव सोने र आखरा मे लिखीजसी । राजस्थानी र आज र साहित्य न उणा अक जवरदस्त मोड दियो । हिंदी-साहित्य र समुत्थान और उण री श्रीवृद्धि मे जिको काम भारतेंदु हरिश्चंद्र करघो ठीक बो ही काम राजस्थानी साहित्य मे भरतियाजी करघो । भरतियाजी आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा प्रथम महत्त्वपूर्ण साहित्यकार है ।

श्री शिवचंद्रजी भरतिया रो जन्म विक्रमी सवत १९१० री चैत सुदि सातम र दिन ह्यो । 'फाटका-जजाळ' नाटक मे उणा आप रो परिचय इण भात दियो है—

'म्हारो जन्म बरिष्ठ वैश्यकुल मे हू अग्रवशी तथा ।

गोत्री सिंगल, बेंक छे भरतिया, 'विद्यानिवास' प्रया ॥

('विद्यानिवास' जिण की पदस्त्री छे)

दादा गगारामजी, जिण को पुण्य अपार ।

जाया सुत बळदेवजी, कीनो कुळ-विस्तार ॥१३॥

उण को सुत शिवचंद्र है, कुळ मे शास्त्र-प्रवीन ।

कुळ की रीत मुपारबा, कीनो प्रथ नस्तीन ॥१४॥

भरतियाजी च्यार भाई हा । च्यार भाया मे वै सगळी सू बडा हा । पिताजी री मृत्यु र बाद उणा री सगळी संपत्ति छोटिया तीनु भाया आपस मे बाट सी और उणा र हाथ की नही आयो । इण कारण उणा ध्यापार करणो छोटने बकालत करणी सरू करी । पण बकालत मे उणा रो जी नही लाग्यो और उणा हठीर में सरकारी नौकरी कर सी ।

भरतियाजी आप र जीवण मे घणा ही ताता-ऊना उतार-चढाव देरया । वे मनमोजी जीव हा । पराधीन रंयने किण र ही सार्थ काम कीनी कर सकया । इण कारण वै ना लो अक जाग्या पूरी तर टिकने काम कर सकया और ना ही उणा कोई अक ही तर रो घघो करघो । जीवण मे उणा र मोहळो प्रज्ञाव रयो ।

एक अर्थ मान, जिन्हीं रें काण आता वना रें आते वरा ही लक्षणक रंगो, उणा रें श्रीवण में विदोय एन नू देणन और लक्षण-योग ही और वा ही उणा री विद्या-विद्यागिता । संव धावण नो उणा नै मोवडो मोम हो । रें हिरी, मराटी, महान और राजस्थानी—प्याक ही भाषावां वा भाषा लक्षणकार हा और एन प्याक ही भाषावां में उणा साहित्य-रचना करी । रें भदोरी वा लक्षणकार भी हा । 'प्याक-वंशाज' गाव रें संव रें उणवहार में उणा लिखो है—

भाषा मरेडी, निर मारवाड़ी, हिरी लण नुअर में मगाड़ी ।
रचना वना संव, निरध वधा, विद्या रें बुद्धि, वन नूव लषा ॥
देखा वना दु.ग उणो वराग, कीनो मरा पुनर-मिप्रवाग ।
गेध्या वना पदिन मापु मोम, भोग्या रिना राज-विनाग-भोग ॥

एन विद्याविद्यागिता रो वज्ज ही ममता रें रें आण रें श्रीवण रें अंग तक अेक कमठ साहित्यकार रें रूप में साहित्य-रंग में प्रतिष्ठित हुवणा । उणा रें मामने ही उणा री रक्षा री बेत मांगोसंग पुष्पित-यस्यविन हुवणी ही । अमीण्ड रें एणै 'माहेष्वरी' रें अनुसार सत्य वा अगाप विद्वान, मराटी वा कवि, हिरी साहित्य वा लेखक, मातृभाषा मारवाड़ी वा कवि-साम्राट्, उचंग्यात-भोगक, नाटक-प्रणेता, विद्या-निकात निरवध भरतिया थाण रें तर्मे वा महान विद्वान और लेखक हर ।

एन बहुमुखी प्रतिभा रें वणी री लोकप्रियता राजस्थान रें प्रतिभागाणी सपूत और हिंदी रें शुभसिद्ध लेखक मुनी अत्रमेरी रें एन पत्र नू आदी तरियां जानी जा सकै है—

धन्य धन्य निरवध कवि, धन्य भरतिया कुलभूषण ।
मदमद के आप रेंद्र हो नि.सदेह रहित रूपण ॥
अति अज्ञान तिमिर आवेष्टित अपना जान समाज अघोप ।
पद ! आपने काव्य-किरण से फैला दिया प्रकाश विघोप ॥
भाद्रपूर्ण माधुर्य सरस औ अति नैसर्गिक कृतकारी ।
भरी देशहित की बातें हैं जिसमें अनुपम उपकारी ॥
हे सामाजिक चरित चित्रकर ! रत्नवर्मा के मुद-भाई !
हे कविद्वार समाज-संशोधक ! करे कौन तत्र समताई ?

भरतियाजी री जीवन-सीला उणा री ६१ वरस री उमर में सत्रत् १९७१ में इंदौर में समाप्त हुयी ।

(२)

भरतियाजी रें जीवन री सब नू वडी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा । उणां साहित्य नै समाज सूर रती भर ही जुदो कौनी राख्यो । राजस्थानी जन-जीवन रें स्तर नै उणां आख्यां खोलनै देख्यो, और देख्यो कें राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळां नै लोग हीण दृष्टि नू देखै है । राजस्थानी जन री आख्यां खोलण सारू उणां कलम उठायी और लोग

नै दरसायो कै आपां रो समाज रसातल नै जाय रंयो है, 'मारवाडी' नांरु री महता घट रंयो है और आपणी भापा री तो सुटिया हो दूब रंयो है !

गैराई मुं सोचणै पर उणां नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था रो मूळ कारण अंत-पत ओ लाग्यो कै समाज मे अजं ताई अशिक्षा रो घोर प्रसार है । इण नै मिटाया बिना समाज सुधरण रो कोनी, मारवाड़ी 'मारवाडी' ही रंती । शिक्षा रै प्रचार-प्रसार साहू उणां जनता री बोली नै ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो । मातृभापा मुं आखी दूजी भापा किण तरं ह्य सकै है ? उणां री मींठ मे आ बात जायो कै 'मारवाडी' रो उद्धार मारवाडी भापा ही कर सकै है—

"मारवाडी भापा आपणी मातृभापा छे । मारवाडी भापा आपणी बोधदात्री छे ओर मारवाड़ी भापा आपणी स्थियां की सुधारकर्त्री छे । म्हारो तो सिद्धांत छे के आपां सोगां को लक्ष्य आपणी मातृभापा मारवाडी कानी नही रहणे सू आपणो समाज हाल ताई इशी हीन दशा मांहे पठघो ह्यो छे । मारवाडी भापा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा ताई भी पूग जाती तो घणाखरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता । आपणी मातृभापा ने हीण समझणे सू आपणो उद्धार किण तरे हो सके ?" (कनक-सुंदर' री भूमिका)

'किसर-बिनास' नाटक री भूमिका मे उणा री मातृभापा रै प्रति आ हूव इण रूप मे प्रगट ह्यो है—

"म्हारा दिल माहे हमेशा विचार आबता के आपा वाण्या के कुळ माहे जनम सीनो, रजगार-घघो मोकळो कीनो, दो-चार भापा को अभ्यास करने संकडों पुस्तका वाची और सस्कृत, मरेटी, हिंदी माहे रचना भी करी, कविता मोकळी कीनी, पण आपणी जनम-भापा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी कीनी नही । छोटी-मोटी कोई पुस्तक बणाय ने सरदारा के सामने रखणी तो खरी । देखा भला, आदर होत्रे के अनादर होत्रे ।"

मातृभापा मे रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कै अनिश्चित मारवाही और उणां री सुगायां तो इण रै अलावा भारत री दूजी भापावां नै जाबक-ई को जाणै ही नी, केर उण भापावां मे लिखण सू मारवाडी समाज नै काई फायदो ? अंक और भी सबळ कारण राजस्थानी मे लिखण रो उणां ओ बताया कै उण समै इण भापा रो साहित्य दूजी भापावां रै साहित्य सू जाबक ही थोड़ो लिख्यो जा रंयो हो । राजस्थानी रै गौरव नै भी दुनिया रै सामने लावणी हो । 'किसर-बिनास' री भूमिका मे उणां लिख्यो है—

"आपणो नोबोटी मारवाड़ और मारवाही बोली बटी के अधेरा माहे पढ़ी छे, मू आप जाणो नहो काई ? अंग्रेजी तो रंवा दपो पण बंगाली, गुजराती, मरेटी, हिंदी बानीं तो जरा नजर करो, बिशा-बिशा ब्रय इण भापा माहे तंवार हूषा छे और हो रथा छे निषां री गिणती मही । आपणी मारवाही बोली आज इण गुपार का

कलास ऊपर पूगयोड़ी दुनिया माहे पण अंधेरी गुफा के अंदर गोगा गानी रप्टे, इन को अभिमान आप सरदारों ने नहीं काई ?”

और भरतियाजी राजस्थानी समाज नी अंधेरी गुफा मूं धारें सात्रण साः कमर कनी और आप री फलम री जागती जोन मूं उण रो मार्ग प्रगल्भ करण रो प्रयाग करपो, परछुट प्रयास करपो ।

(३)

भरतियाजी री लिहयोड़ी पुस्तकों री सरया राजस्थानी मे ६, हिंदी में १७, मराठी मे १३ और संस्कृत मे ३ है । सं० १९६३ में प्रकाशित 'बुडापा की सगार्द' नाटक रें छेड़लं पृष्ठ रें विज्ञापन मे उणां री रचित कृतिया रो विश्ररण इन प्रकार है—

“सिद्धेद्रुचद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पदधावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकसुंदर (मारवाड़ी), प्रवास-बुगुमात्रली मुख्य १० (हिंदी), बुडापा की सगार्द नाटक (मारवाड़ी), भोत्या की कठी (मारवाड़ी), गुर्वंष्टक (संस्कृत), राज्यारोऽण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी) ।

लिखकर तैयार—फाटका-जजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलाम नाटक (मराठी), अनुताप तीर्थं शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी) ।

तैयार हो रही छें—अब क्या करना चाहिए ? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी; बोधदर्पण (मारवाड़ी) ।

भरतियाजी री आखरी छप्पोड़ी पोषी 'सूर्यचक्रवेध' मिले है जिकी उणा द्वारा आयोजित 'विचार-दर्शन' नाव रें अेक विशाल ग्रंथ रो अेक अण है । उण रो विषय योग-विदया और वेदात सू सबधित है ।

पुस्तक-लेखन कार्य रें अतिरिक्त उणा हिंदी पत्र 'वैश्यापकारक' रें सपादन में भी घणो सहयोग दियो । सामयिक समस्यावां पर उणा रा जिका विचार हा वैं मोकळी कहाव्या और निबंधा रें रूप मे उण मे नियमित रूप सू प्रकाशित हुया हा ।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावां मे 'कनक-सुंदर' नात्र री कृति राजस्थानी भापा रो पैलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकै है । उण रो पैलो भाग ही छप सकयो, दूसरो भाग प्रकाश मे नहीं आयो । ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी मे चद्रकाता-सतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी और जामूसी उपन्यासां रो बोलबालो हो । कनक-सुंदर सामाजिक उपन्यास है । इन मे उण टैम रें मारवाडी समाज री कथा नै जिण सरस दन सू प्रस्तुत करी है उण नै देखनै लोग घणा प्रभावित हुया । कनक और सुंदर इन उपन्यास रा नायक-नायिका है जिका रो प्रारंभिक जीवण ही पैलें भाग मे आ पायो है । उपन्यास रो प्रारंभ इन भात हुवैं—“दोपहर को बपत । चारथां कानी सू चाल रही छे । हन्ना का जोर सू वाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर बी-का नन्ना-नन्ना टोबा हो रपा छें, और भीजण भी रहया छे । मुह ऊचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । तू कपड़ा पाहे बढकर सारा सरीर ने मिःताव कर रही छे । घूष इसी जोर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो

मुस्कल छे । रस्ता माहे दूर-दूर कठेही छाड को नास नही । बाळू उडकर जगा-जगां नवा टीबा होणे सू राते को टिकाणी नही । आदमी तो दूर, रास्ता माहे कीई जीव-जिनाजर को भी दरसन नही । इशे वात अंक जप्तान आदमी जिण की उमर सोळा-सत्रा वरम की थी, माघो कपड़ा सू बंध्यो हुषो, हुश-हुश करतो-करतो अजमेर कानी चलयो आ रहघो छे । रेती गरम होणे सू पगां के घरका लागकर फोडा आ रहघा छे, तो भी जोर सू चाल रहघो छे ।”

उपन्यास मे आपणी देश मे व्याप्त पूट री जिकी कमजोरी ही उण तरफ भी भरतियाजी सकेन करण मे कोनो छुक्का—‘अपणा देश माहे थेको नही जरां तो आपणी राज्यसत्ता पराया लोणा के हाथ गयी देखकर सारा सट बोल्या के आ तो ‘पूट’ छे । साहेब हुसकर बोल्या के धो इशो अनोखो पळ थारा देश माहे छे जरां तो म्हा लोणा को राज हुवो ; नही तो म्हाकी काई मगदूर थी सू हजारो कोस पर आकर थाके ऊपर हकूमत करता ? इण माहे काई पूट छे । इण पूट तो सारा देश को सरयानाश कर दीनो ।”

‘केसर-विलास’ (प्रकाशनकाळ सवन् १९५७) भरतियाजी री पैती राजस्थानी रचना और राजस्थानी रो पैलो नाटक है । इण आदलोन्मुती यथापेवादी नाटक री स्त्राभाविकता और यथापेवादिता हिंदी रें पठित महावीरप्रसाद द्विवेदी नें भी घणा प्रभावित करघा । उणा ‘भरस्वती’ मे लिख्यो—रचना इसकी बहुत ही स्वाभाविक है । कही-कही पढ़ते समय, स्वाभाविकता का दृढ़ता आविर्भाव ही उठता है कि इण बात की विस्मृति हो जाती है कि यह कल्पित क्या पढ़ रहे हैं । [सरस्वती, अक्टूबर, १९०४, पृ० ३६८] इण नाटक मे अणमेल ध्यांघ री समस्या उठायी है । अणमेल ध्यांघ री बुराई थतायने समाज नें उण सू विमुक्त करणो ही इण रो उद्देश्य है ।

और लगभग आ ही समस्या ‘बुढापा की गगार्द’ नाटक (प्रकाशनकाळ सवन् १९६३) मे उठायी है । भरतियाजी इण री भूमिका मे लिख्यो है—“इण माहे त्रिपय की स्वतन्त्रता की हद, बी का परिणाम, बुढापा माहे ध्यांघ की ह्छा, बी की अविचार, गगार्द, बी की अघन और बी अघन की परिणाम, रत्यादि सरट मारझाही बोली माहे दरगाया छे । जगा-जगां नीति, उपदेश, बोध, शिक्षा, धर्म और विचार को बघनो जडे ताई उल्लेख बीनो छे । मारझाही समाज की स्थिति, घर की और बाहर की बीना, विचार की भिन्नता, पशायन और स्त्री-पुरुष का बरनाश पर लूब विचार बरके बयानाश इशो अमायो छे के जाले आ इशो-बी-एनी कडे हुसोरी हाकी बान छे ।”

‘पाटवा-जकाळ’ (रचना सवन् १९६४) भरतियाजी रो तीसरो नाटक है । उणा इण मे मारझाही समाज नें पाटवा (सट्टा) और इण सर्वांग इणग दुर्लभा सू हुबुबजाती हाणा रो बिच अविन बरघो है—“देस अनुभव बिना जणनो जहे नहीं । अनुभव बरघा बिना बी की माधुरी मालम होखे नहीं । त्रिण सू अविचरणीय अणमेल होखे, जटीले हृदय गिर्धीरे, त्रिण के बाने प्रबल ह्छा उन्म होखे, और त्रिण का अन्ध सू हृदय अनेपूर्ण होखे को ही देस । जो जाह परस्पर की हृदय अंक के बाने अंक

कलाय ऊपर पूगयोड़ी दुनिया माँहे पण अधेरी गुफा के अंदर गोवा गानी रये, इन को अभिमान आप सरदारां ने नही काँई ?”

और भरतियाजी राजस्थानी समाज ने अधेरी गुफा में बारें साग्रण मारु कजर कगी और आप री कलम री जागती जोन सूं उण री मार्ग प्रशस्त करण री प्रयाग करपो, धरपूट प्रयास करघो ।

(३)

भरतियाजी री लिखोटी पुस्तकां री सरया राजस्थानी मे ६, हिंदी में १७, मराठी मे १३ और संस्कृत मे ३ है । सं० १९६३ मे प्रकाशित ‘बुडापा की सगाई’ नाटक रे छेड़ले पृष्ठ रे विज्ञापन में उणां री रचित कृतिया री वितरण इन प्रकार है—

“सिद्धेदुचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पदपावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाडी)— दूमरी बार छग रही छे, कनकसुंदर (मारवाडी), प्रसास-गुगुमात्रली गुच्छ १० (हिंदी), बुडापा की सगाई नाटक (मारवाडी), मोत्यां की कटी (मारवाडी), गुवंटक (संस्कृत), राज्यारोक्षण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी) ।

लिखकर तैयार—फाटका-जजाळ नाटक (मारवाडी), मतिविलास नाटक (मराठी), अनुताप तीर्यं शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी) ।

तैयार हो रही छें—अब क्या करना चाहिए ? हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी; बोधदपण (मारवाडी) ।

भरतियाजी री आखरी छप्योड़ी पोथी ‘सूर्यचक्रवेध’ मिले है जिकी उणा द्वारा आयोजित ‘विचार-दर्शन’ नाम रे अेक विशाल ग्रंथ री अेक अध है । उण री विषय योग-विदधा और वेदात सूं संबंधित है ।

पुस्तक-लेखन कार्य रे अतिरिक्त उणा हिंदी पत्र ‘वैश्वोपकारक’ रे संपादन मे भी घणो सहयोग दियो । सामयिक समस्याता पर उणा रा जिका विचार हा वै भोकळी कहान्या और निबधा रे रूप मे उण में नियमित रूप सूं प्रकाशित हुया हा ।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावा मे ‘कनक-सुंदर’ नाम री कृति राजस्थानी भाषा री पैलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना माने जा सके है । उण री पैलो भाग ही छप सबयो, दूसरो भाग प्रकाश में नही आयो । ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी मे चद्रकांता-सतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी और जामूसी उपन्यासा री बोलवालो हो । कनक-सुंदर सामाजिक उपन्यास है । इन मे उण टैम रे मारवाड़ी समाज री क्या नै जिण सरस हग सूं प्रस्तुत करी है उण नै देखन लोग घणा प्रभावित हुया । कनक और सुंदर इन उपन्यास रा नायक-नायिका है जिका री प्रारंभिक जीवण ही पैले भाग मे आ पायो है । उपन्यास री प्रारंभ इन भात हूँ—“दोपहर को बसत । चारपा कानी सूं चाल रही छे । हवा का जोर सूं वाळू अटी-की-उठीने उड़-उड़कर बी-का नवा-नवा टीबा हो रपा छें, और भीजण भी रहपा छे । मुह ऊचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । सूं कपड़ा माँहे बड़कर सार सररीर छे । मुह ऊचो कर सामने चालणो मुस्कल छे । सूं कपड़ा माँहे बड़कर सार सररीर नै सिकताग कर रही छे । घूप इसी ओर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो

वंदनमाल

—रामसिंह—

(१) प्रेम रो दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हू घारें आगें खोलनें राखतां डरूँ हू—कठईं ये आ नी कं बंठो कं
इण नै तो में कदेईं देखूँ चूको हू ।

म्हारें गावणें मे मुरमग बयो हुन्नं इण रो कारण घारो आखियां रो कोर सुं बूझो ।

हूं घानें म्हारो वाक्य नही सुणाऊ हू ; मनं डर लागें है कं कठईं ये प्रशसा रा
पुळ बाधण नी लाग जातो ।

ये मनं ससार भर मे सगळा सू सुंदर समझो इण खातर हू घारें आगें मूढो लुकाय
लेऊं हू पण इण नै ये कदास लज्जा रो परिणाम नी समझ लेवो इण वास्तै हू घारें
आगें निश्चक हुयनें आऊ हू ।

निशीय रो नि स्तब्धता मे जद ये अकात मे म्हारें सू मिलण नै आशो तो म्हारी
इच्छा माग जावण रो हुन्नं । ये हस नै कंठो—आछो, जातो । जर्ण म्हारें मूढे सू
नीकळें—ना ! हू को जाऊ नी ।

जे हू बामूलण सजाय नै आऊ तो ये पूछो—आज अं आभूखण इता सुवावणा
बयो सागें है ?

ओर जे हू सादा वस्त्रां मे आऊ तो ये कंठो—ओहो ! आज ओ निष्कळक श्रममा
घरती सागें कठें सू ऊग बायो ।

फेर ये ही बतारो, हू घारें कनें किया आऊ ?

(२) प्रेम रो व्यवहार

जद हू जावणां नै की देखण नं जाऊ तो बं भी उणां रो पगन मे आ बिनं ।

ने खींचे। वीजळी का तार का ठोका के ज्यूं अंक का हृदय ऊपर अंक का हृदय को आघात करे। प्रेम को भाद्र, प्रेम को भाद्रुक और प्रेम की भाद्रना इणा माहे सूं अंक को भी लोप हो जात्रे तो फिर दूजो रहे नही।”

भरतियाजी री साहित्य-सेवा री मुख्य प्रेरणा समाज-मुधार और देश रो उत्थान है। विदेशी शोषण कानी भी उणां रो ध्यान हो—“अगरेज लोमा कानी तो जरा नजर करो, अठे सू माटी के नाई पाद्रड़ा सूं रुपया खीचकर आपका देस ने ले जाकर इन्द्रपुरी वणा दीनो छे। आपणा देस ने भिखारी कर दीनो छे।”

समाज-सेवा री भरतियाजी री कित्ती हूंस ही, ‘कनक सुदर’ री भूमिका रं इण उद्धरण सू आ आछी तरं जाणी जा सकै है—

“हाय पैसो! हाय पैसो!” करवाळा म्हारा सारा सरदारों ने राजा-महाराजा अर श्रीमंत वणाकर, हळका छल-छिद्र का वेपार सूं छुडाकर खरा-खरा वैश्य वणा दधूं, उण की सारी कुरीतां मेट दधूं, उणका घर को सुधार कर दधूं, उणकी फिजूल-खरची मिटा दधूं, उणकी राहरीत मुधार दधूं, उणका बाळविवाह रोक दधूं, उण का बेजोड व्यांभ नही होवा दधूं, मोटघारों ने विदधा सिलाकर स्त्रिया ने शाणी कर दधूं और वेश्या भी नही बोल सके उशा फीटा बोलां का गीत गावणा छुडा दधूं।”

स्त्री-शिक्षा रा वं गैरा हिमायती हा। नारी री हीण अन्नस्या देख-देखन उणां रो काळजो कटीग्या करतो। नारी नं उण री महानता और उण री जिम्मेदारी जतावणा रो उणां जबरदस्त प्रयास करभो हो। उणा ‘कनक-सुदर’ री भूमिका में इण बावत आप रा विचार प्रकट करचा है।

भापा रं संबंध में भी उणा रा विचार स्पष्ट नं महत्त्वपूर्ण हा। कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हुय सकै है जद उण री भापा अंक हुवै। ‘कनक-सुदर’ में उणा लिख्यो है—

“हर-अंक देश री सर्वत्र अंक भापा होणी अत्यंत आवश्यक छे। यूरोप, अमेरिका, विगेरा माहे अंक भापा होणे सूं उण लोगां की हृद अंकता होकर वे आज सारी दुनियां माहे थेट हो रचा छे। आपणा हिंदुस्तान की अंक भापा होती तो आज आपणा देश की इमी अन्नति होती नही।”

आपणं राष्ट्र रं इण भात रं मूर्धन्य विचारक और समाजसेवी और राजस्थान-भारती रं सपूत पूत री सेवार्ता रं प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जात्रंला जद कं उण री नं उण रं समं रा दूजा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारों री सारी रचनायां नं अशित्तव आर्द्ध-सू-आर्द्ध रूप में प्रनामित करायनं उणां रो प्रचार करांला।

राजस्थानी रं इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नं पुनःपुनः प्रणाम !

वंदनमाल

—रामसिंह—

(१) प्रेम रो दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हू पारं आगं खोलनं राखता डरू हू—कठई ये आ नी के बँठो के इण नै तो मै कदई देख चुको हू ।

म्हारं गान्धर्षे मे सुरभग बयो हूँ इण रो कारण पारो आखिया रो कोर मुं बूतो ।
हूँ पानं म्हारो बाध्य नहीं मुणाऊ हू ; मनं डर लागं है के कठई ये प्रयसा रा पुठ बाधण नी लाग जाओ ।

ये मनं समार भर मे सगळां मु सुदर समसो इण खातर हू पारं आगं मुको सुकाय लेऊ हूँ पण इण नै ये बदास लज्जा रो परिणाम नीं समस्त लेओ इण वास्तं हूँ पारं आगं निशक हुयनं आऊ हू ।

निशीय री नि स्तम्भता मे जद ये अंकांत मे म्हारं मु मिलण नै आओ तो म्हारी दृष्टा भाग जाधण री हूँ । ये हग नै बँधो—आओ, जाओ । जनें म्हारं मुँ के मु नीबळे—ना ! हूँ के आऊ नी ।

जे हूँ आभूखण सजाय नै आऊं तो ये पूछो—आज अं आभूखण इना मुवावणा बयो लागं है ?

ओर जे हूँ सादा वस्त्रा मे आऊं तो ये बँधो—ओहो ! आज ओ निष्कट्ट बन्दा धरती मायं बँठे मु उग आयो ।

पेर ये ही बतानो, हूँ पारं जनें शियां आऊ ?

(२) प्रेम रो व्यवहार

जद हूँ जावरा नै की देखण में आऊं तो ईं भी उगा रो पवन मे आ बँधे ।

ने रीचे । चीजली का तार का टोका के ज्यूं अंक का हृदय ऊपर अंक का हृदय को आघात करे । प्रेम को भाव, प्रेम को भावुक और प्रेम की भावना दणा माहे सूं अंक को भी लोप हो जाते तो फिर दूजो रहे नहीं ।”

भरतियात्री री साहित्य-सेवा री मुख्य प्रेरणा समाज-सुधार और देश री उत्थान है । विदेशी शोषण कानी भी उणां री ध्यान हो—“अगरेज लोगा कानी तो जरा नजर करो, अठे सूं माटी के नाईं पातड़ा सू दया गीचकर आपका देश ने ले जाकर इन्द्रपुरी वणा दीनो छे । आपणा देश ने भित्तारी कर दीनो छे ।”

समाज-सेवा री भरतियात्री री कित्ती हूय ही, ‘कनक सुंदर’ री भूमिका रं इण उदरुण सूं आ आछी तरं जाणी जा सकं है—

“हाय पैतो ! हाय पैतो !” करवाळा म्हारा सारा सरदारा ने राजा-महाराजा अर श्रीमत वणाकर, हळका छळ-छिद्र का वेपार सूं छुटाकर सरा-सरा वैश्य वणा दघूं, उण की सारी कुरीता भेट दघूं, उणका घर को सुधार कर दघूं, उणकी फिजूल-सरवी मिटा दघूं, उणकी राहरीत मुधार दघूं, उणका बाळविवाह रोक दघूं, उण का बेजोड़ व्यांन नही होवा दघूं, मोटघारां ने विदघा सिपाकर स्त्रियां ने शाणी कर दघूं और वेश्या भी नही बोल सके उणा फोटा बोलां का गीत गावणा छुटा दघूं ।”

स्त्री-शिक्षा रा बँ गंरा हिमायती हा । नारी री हीण अन्नस्या देख-देखनं उणां री काळजी कटीज्या करतो । नारी नं उण री महानता और उण री जिम्मेदारी जतावण री उणा जबरदस्त प्रयास करघो हो । उणा ‘कनक-सुंदर’ री भूमिका मे इण बाबत आप रा विचार प्रकट करघा है ।

भापा रं सबध में भी उणा रा विचार स्पष्ट नं महत्त्वपूर्ण हा । कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हूय सकं है जद उण री भापा अंक हुवै । ‘कनक-सुंदर’ मे उणा लिख्यो है—

“हर-अंक देश री सर्वत्र अंक भापा होणी अत्यंत आवश्यक छे । यूरोप, अमेरिका, विमेरा माहे अंक भापा होणे सू उण लोगा की दृढ अंकता होकर ये आज सारी दुनिया माहे थ्रेष्ठ हो रघा छे । आपणा हिंदुस्तान की अंक भापा होती तो आज आपणा देश की दृशी अन्ननति होती नही ।”

आपणं राष्ट्र रं इण भात रं मूर्धन्य विचारक और समाजसेवी और राजस्थान-भारती रं सपूत पूत री सेवार्ता रं प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जात्रंला जद कं उण री नं उण रं सभं रा दूजा प्रवर्तासी राजस्थानी साहित्यकारां री सारी रचनात्रां नं अविलंब आर्द्य-सू-आर्द्य रूप मे प्रकाशित करायनं उणा री प्रचार करावा ।

राजस्थानी रं इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नं पुनःपुनः प्रणाम !

(४) दरिद्र रो दान

जे जात्रणो ही हो तो आया बयो हा ?

जद-कदैई ये आत्रो तो विदा मांगता ही आत्रो ही ।

याचक ! में तो घारी दान-क्षीरता री घणी प्रशंसा सुण राती ही, फेर आ उळटी रीत बयो ?

जे जात्रणो ही हो तो आया बयो हा ?

म्हारो और धारो कोई पैना रो संबध है काई ? और जे नही, तो बस म्हारें ही बनें मागण नै बयो आत्रो हो ?

हूँ दरिद्र, दरिद्र सूं भी दरिद्र, हूँ और ये हो म्हारा सत्रंस्त्र । तो, देखो ! इण वार धारें हो त्यागनें त्याग रो यादगं देलाळ हूँ ।

जे जात्रणो ही हो तो आया बयो हा ?

बै हाथ आग करे और हूं उणां रै कानी देखू भी नहीं हूं ।

सगळा जणा दान लेयनें जास्रें परा जद हूं उणा नै कंक हूं—थे आप दे सगो हो उण नै मागण नै आत्रो हो । हूं धाने जाणूं ह ।

बै चोखा-चोखा उपहार लेयनें आस्रें और म्हारै आग हाथ जोडियां ऊभा रंभ्रें । हूं व्यंगपूर्ण हसी हसनै कंक—ह आप दे सकू हूं उण नै थे मने देवण नै आथो हो । हूं धाने जाणूं ह ।

ढळतोड़ी रात मे ओस सू भोजियोडै शिरीष रै पूलां री सुगध लेयनें समीर म्हारै घरें आस्रतो हो । म्हारी आंख लागी और में सपनें मे उणा नै कंभ्रता सुणिया—काई तूं मनें प्यार करे हे ?

थे इसो प्रश्न पूछो हो जिण रो उत्तर थे हो जाणो हो—में झुझायनें उचळो दियो ।

फेर भी धारै देवण-लेवण मे और कंभ्रण-सुणण मे अंक अपूर्व आनंद है—इयां कंय-नें बै म्हारी नीद रै साग-साग कुण जाणे कठीनें रम जास्रें ।

(३) तूं और धारी बेना

तूं चिणा चूटे जद धारी छोटी-छोटी बेनां नीब री नान्ही-नान्ही डाळियां माथें बेठी-बेठी गीत गास्रें । उणा रो गीत बंद हसी जद ही धारो काम समाप्त हुसी और तूं उणा रै साग-साग आवां रै कुंज कानी उड जासी ।

वेसा तूं छायोडी धारी झुंपडी रै द्वार माथें गाय डीकें है और धारी वाछी ऊपर सटकतें पूल में जीम सू पकड़णो चास्रें ।

धान माथें पडती धकी मूरज री आपरी म्भ्रण-रमिया धारै केसा और कपोलां माथें, और धारी बेनां रै कठां और पायां माथें, पडे ।

रात में प्रकृति धां गगळां री आरमा में विधाम करे और धा ही धारै दिमाग मे दूर देगां रा सपना भरें ।

वाकाश धारै निलाड नै, और निगापति धारी निमीलित आगियां नै, धूमण नै आस्रें ।

तारा धारै अत्रित्त पुपराटा बेनां मे आगनीबणी रमै ।

फेर उणा आपनें धारै कोमल बरोवा नै म्भ्रं करे, जद तूं नदी रै चितारै माथें

(४) दरिद्र रो दान

जे जात्रणो ही हो तो आया क्यों हा ?

जद-नदेई ये आत्रो तो विदा मांगता ही आत्रो हो ।

माचक ! मैं तो पारो दान-वीरता री घणी प्रसंगा गुण राणी ही, पेर आ ज्यटो रीत क्यों ?

जे जात्रणो ही हो तो आया क्यों हा ?

म्हारो और पारो कोई पंता रो संबध है काई ? और जे नहीं, तो बस म्हारं ही कर्न मागण नं क्यों आत्रो हो ?

हूँ दरिद्र, दरिद्र सू भी दरिद्र, हूँ और ये हो म्हारा सखंस्त । लो, देखो ! इन वार पानं ही त्यागनं त्याग रो आदर्शं देखाऊ हूँ ।

जे जात्रणो ही हो तो आया क्यों हा ?

मौत : नयो जीवण

—नरोत्तमदास स्वामी—

चांद आंध्र

पण पूजे दिन भळें ळगिपात्रं ।

यादळ वरस जात्रं

पण भळें भरीजणं

पृथ्वी नें हरी-भरी घणाक्षण नें आ पूगें ।

ठाळी रा पूळ कुमळायोज जात्रं

पण वा भळें पूला सू लदीज जात्रं ।

दियो दिनुंगें बुझ जात्रं

पण रात हुतां ही भळें प्रकाश देतण लागें ।

मौत जीवण रो अंत नही,

वा हीज तो जीवण नें नयो जीवण देतें ।

भरीजण नें वरसं हे मेघ

पूल कुमळात्रें विगसण नें

जगायीजण नें दीपक बुझें

आंध्रें चांदो ळगण नें

मौत नहि जीवण रो अस्तान

करे वा ही नव-जीवण दान

मीठा सपना, खारा गीत

—उदयवीर शर्मा—

(१)

धक्के इग्यारवी कक्षा रँ परचँ मे नूई शैली रा निबंध आया । पांच शीर्षका माय सू अेक मायँ निबंध लिखणो हो । अेक शीर्षक हो 'मीठा सपना, खारा गीत ।' अेक विद्वेषार्थी प्यार निबंधा नँ छोडनँ इण नँ ही इण भांत लिखियो—

(२)

मीठा सपना बिना जीवण सूखो है । रुत बारँ सू हरियाळो लागता धका भी माय सू थोथो हु ज्यावं जिया ही मीठा सपना बिना मिनत बारँ सू सजीवतो लागता धका भी भीतर सू भिळियोडो रँवँ । मीठा सपना री रस-मगा मे मिनत ग्हावतो रँवँ जणा ही सुरग घरा मायँ उतरियोडो लागँ, नही तो नरबोडी ही समझो । मीठा सपना देखणा जीवण रो आनद है, मार है अर आशावादी मारग है पन मीठा सपना मे जे विशोक पह ज्यावं तो जीवण बोसो है । गुह मे किरकिर आ ज्यावं तो मत्रो ही जातो रँवँ जिया ही जीवण मे खारा गीत गायोजण लाग ज्यावं तो जमारो गयो । मीठा सपना जिदगी है तो खारा गीत मीन है । रण प्रसंग मे अेक कथा याद आयगी जिधी अटँ बाँचो—

अेक शेखबिल्ली हो । आप रँ गाँव रँ मारग बगँ हो । खानडा-खानडा अेक घी रो व्यापारी आप रँ बाँधँ मायँ घी रो घरो निदा उण नँ मिनियो । व्यापारी अेकरी सू अेक-अेकनातँ हो रँयो हो । अेक मञ्जूरियँ आदमी नँ टानो बगँ देवनी व्यापारी बोखियो—भाया ! जे तू ग्हारँ घी रँ घई नँ आगनँ गह गहँ नँ खाने तो अेक खाने रा परँना मञ्जुरी रा दू । शेखबिल्ली मुणना ही हा भर भी । घरो व्यापारी रँ बाँधँ सू उतरनी शेखबिल्ली रँ गिर मायँ आदम्यो । दोनू खान्दा गहँ ।

अबं शेरबिल्ली सोषण लागियो—अंक आनं री अंक मुरगी रारीदनं सासू । मुरगी रंडा देसी । थोळी मुरगियां हु ज्यासी । थोळा रंडा देसी । थोळा वेचसूं । थोळा पर्ईसा आसी । पर्ईसा जोडनें पर बिणासूं । बंठक, चौबारा, चौक, चौघरा सै उण हेली रें हुरी । फेर आप रो ब्यांत्र करसूं । टावर हुरी । फेर हूं मजुरी करणो छोट देसूं । बंठक मे बंठो-बंठो होको ठरइसासू । टावरियां री मा म्हारं खातर तीवण तीस-बत्तीस वणासी । म्हारलो छोरो रुइयो मनं जीमण नं बुलावण आसी । होकं री मौज मे झूमतो हूं पैली नट जासू । वो फेरूं आसी । हू फेरूं कै देसू—तू घाल, हूं आऊं हूं । थोड़ी देर उठोकरं छोरें री मा आप बुलावण आसी । जणां हूं थोड़ी-सी दिवावती रीस करनं नाड री लटको करतो कसू—अवार कोनी आऊ, होकं मे पान आ रेंयो है ; तू घाल, हूं आऊं हूं ।

शेखचिल्ली रो लटको करणो हो कै घी रो घड़ो छट धरती पर आयो और पूटग्यो । घी धरती मार्थ फंलग्यो ।

व्यापारी देखतो-रो-देखतो रेंग्यो । थोडो सावचेत हुयनं पूछियो—अरे ! ओ काई करघो ? घडो फोड दियो । घी रा पर्ईसा कुण देसी ? शेखचिल्ली बोलियो—थारं पर्ईसां री लाग रेंयी है । म्हारो तो निठ वणियो घर दहीजग्यो । अबं म्हारो घर कुण बांधसी ? दोनू अंक-दूसरें सू लइता-अगइता आप-आप रें मारग लाग ।

इयाल शेखचिल्ली रा मीठा सपना खारा गीतां मे बढळ ग्या । मीठा सपनां सेतो उण रो मनडो कठे और-ही जागा झूमतो हो । मार्थ पर राखियोडें बोझं रो उण नं भान ही को हो नी । नाड कद हाली, कद के हुयो, उण नं काई ठा ? मीठा सपनां री वाडी में वो तो फळ तोडें हो अर खानें हो । इयांल ही भारत री आजादी रें पैली लोग राम-राज रा सपना लेयनं मोद मनाया करता पण बं सै हवा हुग्या ।

(३)

इण प्रसंग मे अंक कथा और लिखनं विषय नं की गभीरता सू खुलासा करणो चाऊ हूं—

अंक गात्र मे दो भाई रेंव्रता हा । बडोडो व्यापोडो हो, छोटकियो कत्तारो । बडोडें रें सात छोर हा । पण सैं कत्तारा । भाई भी मायलं कारणं सू कत्तारो रेंग्यो । चाणचकी बडोडो भाई सैं नं अनाथ वणायनं खालतो रेंयो । अबं घर मे रेंग्यो छोरों रो कत्तारो बाको, मा, अर बं सातू भाई ।

अंक दिन छोर री मा बोनी—बेटा ! ये तो अबं बडा-बडा हुयाया, चत्तरी को चउ मरुने नी पण म्होडियं भाई नं परणाय सो तो घर में नूई रोसणी आ जावें, पीडी खात जावें ; हूं किनाक दिनारी हूं ? पाने भी रोसियां रो आराम हु जावें, म्हारा दिन नी बटूं मूं बोल-बनटां र सावळ बट जावें ; बटू आणी तो घर में साल चीज आती,

म्हारे परपीत्रने आने रे बाद आज तक कोई यह इन घर री देखी नै तांघने को आयी नी ; म्हारी मनम्या है के ह्योटिये नै ध्यातां ; ध्यांन ह्युमी , मंगळा गजन-गनेही मेळ-मिनानी, पात्रणा-गही घर में आनी ; मंगळ-गान ह्युमी , घर-री ईंट-ईंट गुमिया मनामी, हं नी ध्यात्र मे कमीन-कारवां नै दे-नेयने मन री कादगू ; अवार ताई में री ले-लेयने ही ग्यात्रवा रंया हा, बदे मो म्वात्रणो भी पायोर्जे , इन वास्ते ह्योटिये रो ध्यात्र कर दो; येन में वाकडी-मनीरा, मिट्टा-कठी ह्युते पण कुण खाते ? पड़िया ही रंके, बेचना पई, टावर ह्युते तो पाय लेते ; यह तो डोलती ही चोखी लागे, ये तो म्हारी कंणो मानो अर धारे ह्योटिये भाई नै लपेट दो ।

पैनी तो सै भायां इन वात रो विरोध करियो पण मा री जिद भी मानणी पई । छोरी दूदने ध्यात्र रच दियो । काको इन वात सू रुमग्यो के मनै पूछियो क्यों कोनी । घणो मनायो पण काको मानियो नही अर आ जिद कर ली के ध्यात्र सू पैनी मनै घर मे पांती दो । आखर ध्यात्र तो करणो ही हो । पाती भी करणी पडी । घर रा दो टुकड़ा हुयग्या । काको न्यारो हुयग्यो । ध्यात्र मे बरात कोनी गयो । ध्यांन हुयग्यो । यह परै आयगी ।

बहू नूई रोसणी री ही । आता ही घर में चानणो हुयग्यो ; चहल-पहल-सो हुयगी । आतो-जाती री पायल छम-छम वाजे लागी । सातू भाया नै घणी खुसी हुयी । छऊ जेठ बहू रा लाट लडावण घोखी-चोखी चीजा लागे लागे । उण री सुख-सुखिया रो सै ध्यान राखता । मा रे मोद रो तो ठिकाणो ही कोनी रंयो, नित उठ मंगळ-वारणा लेखती । वास-गळी रा भी इन वात सू घणा राजी हुया । सुणता जिका ही इन वान नै आछी अर टंम-सारु बतावता । नूई चीज सै नै चोखी लागे ।

धीरे धीरे भात्र बढळिया । सातू भाई लड मरिया । बोलणो बढ कर दियो । वात के ? अक कंवे—मे ध्यात्र करियो । दूजो कंवे—म्हारी हिम्मत विना ध्यात्र हुतो ही कोनी । साता रा सान मना । माता री सात पारटियां वणगी । गात्र रा लोग भी कानी-कानी साता रा सीरी हुयग्या । राड बघगी । पण काई ह्युते ? मा बंटी-बंटी से वातां देखे अर सोचे के जे बहू नही लावती तो ही ठीक ही । क्यों तो सावजी न्यारा हुता, क्यों मातू भाई आपसपरी मे लडता, क्यों न्यारा हुता, क्यों सातां री सात पारटियां वणगी, क्यों गात्र मे भाता घसता ? पण अबे पछताया काई ह्युते ? अबे तो मोटा सपना रळग्या । घर मे पारा गीत गायोजण लागग्या । बूडली मा बंटी दिन-दिन पिसतावे ।

इन बाणी रे लिखणे रो सार भी ओ हो है के मोटा सपना सारा गीता मे बढळनां लाळ के लगारै नी ।

आज भारत-मा रो हाल भी ओ हीज है । भारत आजादी नै पमद करी । टुकड़ा हुया । टुकड़ा बरदास करिया तो घर-घर मे पारटी वणगी । बैर बघग्या । प्रात-प्रात मे

अब शेरचिल्ली सोपण सागियो—अक आनं री अक मुरगी मरीदनं सामू । मुर
 ईटा देसी । घोळी मुरगियां हु ज्यासी । घोळा ईटा देसी । घोळा बेचसूं । घोळा पर्ई
 आसी । पर्ईमा जोडनें पर चिणासूं । वंठक, चौबारा, चौक, चौघरा सें उण हेलो
 हुसी । फेर आप रो ब्यास करसूं । टावर हुसी । फेर हूं मजूरी करणो छोड देसूं । वें
 मे वंठो-वंठो होको ठरडासूं । टावरिया री मा म्हारें खातर तीवण तीस-वतीस वणासूं
 म्हारलो छोरो रुडियो मनें जीमण नें बुलावण आसी । होकें री मोज में झूमतो हूं प
 नट जासूं । बो फेरू आसी । हूं फेरू कें देसूं—तू चाल, हूं आळं हूं । थोड़ी देर उडी
 छोरे री मा आप बुलावण आसी । जणां हू थोड़ी-सी दिसावटी रीस करने नाड
 लटको करतो कसूं—अदार कोनी आळं, होकें मे पान आ रैयो है ; तूं चाल, हूं आळं

शेरचिल्ली रो लटको करणो हो कें धी रो घड़ो झट घरती पर आयो और फूटग्यो
 धी घरती माथें फैलग्यो ।

व्यापारी देखतो-रो-देखतो रंग्यो । थोड़ी सातवेत हुयनें पूढियो—अरे !
 काई करधो ? घड़ो फोड़ दियो । धी रा पर्ईमा कुण देसी ? शेरचिल्ली बोलियो—
 थारें पर्ईसां री लाग रैयी है । म्हारो तो निठ वणियो घर ढहीजग्यो । अब म्हारो
 कुण बांधसी ? दोनू अक-दूसरें सूं लड़ता-झगडता आप-आप रें मारग लागा ।

ह्याल शेरचिल्ली रा भीठा सपना खारा गीतां मे बदळ ग्या । भीठा सपनां से
 उण रो मनडो कठें और-ही जागा घूमतो हो । माथें पर राखियोई बोझें रो उण
 मान ही को ही नी । नाड कद हाली, कद के हुयो, उण नें काई ठा ? भीठा सपना
 वाड़ी मे वो तो फळ तोई हो अर खानें हो । ह्याल ही भारत री आजादी रें प
 लोग राम-राज रा सपना लियनें मोद मनाया करता पण बं सें हत्ता हुग्या ।

(३)

इण प्रसंग मे अक बया और लिखनें विषय नें की गभीरता सूं खुलासा कर
 पाऊ हूं—

अक गात्र मे दो भाई रैवता हा । बडोडो व्यापोडो हो, छोटकियो कन्नारो
 बडोडे रें सात धोरा हा । पण सें कन्नारा । भाई भी मायलें कारण मू कन्नारो रैयग्यो
 पाणधकी बडोडो भाई सें मे अनाप वणायनें खालनें रैयो । अब पर मे रैयग्यो छो
 रो कन्नारो बाही, मा, अर बं सातू भाई ।

अक दिन दोरां री मा बोरी—देटा । मे तो अब बडा-बडा हुग्या, पवरी क
 खड गतो नी पण ह्दोदिये भाई नें परनाय सो तो घर में मूर्ई रोगणी आ जावें, पी
 खान जावें ; हूं जिनाक दिनारी हूं ? बानें भी रोदिया मे आराम हु जावें, म्हारा दि
 धी बडू सूं बोप-बपटारें गात्रक बट जावें ; बट आगी तो घर में साण थीर आ

योगानंदजी

—ब्रजनारायण पुरोहित—

(१)

कचेडो मे भगवों अलफी पैरियोडा अेक महाराज आया करता हा । रंग मुक्की, मूरो गोळ, नाक लांको, चैरो चमकनो, आंखिया चमकदार और भारी गटियोडो । असी री उमर में ही रोज च्यार-पांच घीत रो पेंडो करता । कचेडो आदण रो शौक हो एण वास्तु घणी धार उणा रा दरसन हुता । हां ! हाथ में छड़ी री जाग्यां लो रो पोटो राखता, कोई दम धारें केर रो । उणां रो नाम हो योगानंदजी ।

‘भगवं नै आदेम ह्यै’ पण उणा नै सोग सिर नव्रांजता बंदगी रा व्रतळा समझने । एण बात मू बें खुद वाकफ हा । बें कैया करता—मैं भगवों नेयने भीष मागणी सरु बगी, अंक धार अेक जणें मोमो मारियो कै मोटो-तगड़ो जबान है और मांगनें खावें, एण बात मू मैं सीम ली और उण दिन मू ही भीरु मूं पिहो छुटायो । हूं निठलो बंटणआळो घोरो ही हो । एण वास्तु बंदगी रो हुतर सीखनें एण शरीर नै पोसण लागो ।

उणा नै धान पर धान घणी ऊतनी । बें विचारक हा । उणा रा विचार घणा मुटियोडा हा । बें बहृम्ल हा । थोछा विचारा रें दायरे मूं निसरनें बें विशाल सोत्र मे घुमणआळा और हा । हरेक सप्रदाय रें साधु-मता मूं उणा रा भेडा हुता ।

आप री बंदगी रें धारें मे बें बंदता—अें बंद और टागदर म्हारी बात काटे । एण वास्तु म्हारें रियस्टेशन रो मकाल आयो जद मनै एणा मूं टक्कर लेवणी पडी । बें मनै ‘बी बयाम’ मे रखावणो खावता पण मैं सगळों रें सामनें उणा नै कैयो कै हूं मगता री लोक जणु हु, हु घोरे री बसाई नही खाऊं हूं, म्हारी उचन मूं काम चलाऊं हूं ।

सोग उणा रें धारें मे बें ब्रता बें बाबोंजी भिन्नाओ अयथा संतियो फूकने देखे है । एण रो उचळो बें दिया बरला—ये टा बयो नही सगाओ कै हूं कोई देऊ हु; पण अेक बात बहर है बें त्रिण चीत्र मे धारण री सपती नही हुवे उण में जीवावण री सपती

भेद पत्नी लागो । भाग्य का भागी मैं भाई है, पत्न है/ी उषो स्वयंभूत करण देर को
 लगावे भी । 'अपनी-अपनी दृष्टि और अपनी-अपनी राग' अगली जावे गाली । का
 के आजादी आनी ? आरगवागी गणना तो रामरान का देरी हा पत्न रामरान बडे ?
 जगता रे रात्र को लाल देवलो भी काग भी गाले । दगो आजादी नै मैं हाप जोरे
 लागत । मैं दल नै भीठा गणना, गारा गीत' बगवे गाला ।

(४)

निबंध पूरो हयो । विदुषापी रो गूढ नूई ही । बरुणा नूई ही । अभिप्यक्ति नूई
 ही । विषय रो मोलिवता आप रे बंग री ही । मिगनी रो बंग नूवो हो । विदुषापी
 री नूई गूढ गाथे परीदाकजी पना राजी हया ।

योगानंदजी

—ब्रजनारायण पुरोहित—

(१)

हो मे भगवती अलफी पैरियोडा अक महाराज आया करता हा । रंग मुसकी,
ऊ, नाक नाबो, चँरो चमकतो, आखिया चमकदार और शरीर गटियोडो ।
उमर मे ही रोज च्यार-पाच मील रो पैडो करता । कचेही आग्रण रो शोक
वास्तु घणी वार उणा रा दरसन हुवा । हा ! हाय मे छडी री जाग्या लो रो
गणना, बोई दम बारै मेर रो । उणा रो नाम हो योगानंदजी ।

गणने आदेम हूँ पण उणा नें लोग मिर नप्राइता बंदगी रा पूतळा समझने ।
तू बँ खुद वाकफ हा । बँ बँवा करता—मैं भगवाँ मेयने भीय मांगणी मरु
मेक वार अक जणे मोसी मारियो बँ मोटो-लगडो जवान है और मागने चारै;
तू मैं सीय मी और उण दिन तू ही भीय तू रिहो छुटापो । हूँ नित्तो
उलो थोडो ही हो । दण वारने बंदगी रो हुनर सीगने दण शरीर नें पोमण लापो ।

उणा नें बाल पर बान घणी ऊतती । बँ विचार हा । उणा रा विचार पण
पोहा हा । बँ बह्युत हा । ओटा विचारा रँ दापरै तू निखरने बँ विचार लेव
गणआळा थीव हा । हरेक सप्रदाय रँ साधु-मता तू उणा रा भेदा हुना ।

आप री बंदगी रँ बारै मे बँ बँवता—अँ बँद और बाहर रह्यापी बान बँटै ।
वारने रह्यारै बँडरुशन रो सवाल आयो अद मनै दणा तू टकर मेहणी परी ।
नै 'बी बणाग' मे रणावणो आग्रना पण मैं रणउरी रँ समने उणा नै बँरो बँटै
नै री सोय जाणु हूँ हूँ धारै री बमाई मरी आऊँ हूँ, रह्यो उवन तू बँय बणऊँ हूँ ।

लोग उणा रँ बारै मे बँवना बँ बाबोकी भिय'हो अदवा कनिजे सुदने देई हूँ ।
रो उचजे बँ दिया करना—दे टा बनी मही मणा'हो बँ हूँ बँई देऊँ हूँ, पण बँद
नै कहर है बँ विज थी'क मे मारण री कदमे मरी हूँ दे टल मे बँ'हण री कदमे

भेद पणपे लागो । भारत रा यासी सँ भाई है पण वरी ज्यों व्यस्रहार करता देर को लगातँ नी । 'अपणी-अपणी डफली अर अपणी-अपणी राम' अलापी जातँ लागी । आ के आजादी आयी ? भारतवासी सपना तो रामराज रा देखै हा पण रामराज कठे ? जनता रँ राज रो नास देखणो भी डोंग-सो लागे । इसी आजादी नै सँ हाय जोड़ें लागे । सँ इण नै 'मीठा सपना, सारा गीत' बतातँ लागे ।

(४)

निबध पूरो हुयो । विदधार्थी रो सूझ नूई ही । कल्पना नूई ही । अभिव्यक्ति नूई ही । विषय रो मौलिकता आप रँ ढंग रो ही । लिखण रो ढंग नूँसो हो । विदधार्थी रो नूई सूझ साथे परीक्षकजी घणा राजी हुया ।

योगानंदजी

—ब्रजनारायण पुरोहित—

(१)

कचेडो में भगवी अलफी पँरियोडा अक महाराज आया करता हा । रंग मुसकी, मूरो पोळ, नाक लाँदो, चैरो चमकतो, आखियाँ चमकदार और शरीर गठियोडो । अस्सी री उमर में ही रोत्र प्यार-पाच मील रो पैडो करता । कचेडी आवण रो शोक हो इण वास्तुँ धनी वार उणां रा दरसन हुवा । हाँ । हाथ में छडी री जाम्मा लो रो घोडो राख्ता, कोई दम वारें सेर रो । उणां री नाम हो योगानंदजी ।

'भगवें नै आदेम है' पण उणां नै लोग सिर नत्रांत्रता वंदगी रा पूतळा समझनै । इण दात मू वें खुद वाकफ हा । वें कैया करता—मैं भगवाँ केवने भीम मागणी सरू बरी, अक वार अक जण मोसो मारियो कं मोटो-तगडो जतान है और मागनै तारुँ; इण वान मूं में सोख ली और उण दिन मू ही भीख मूं पिडो छुडायो । हूं निटली बँटणआळो बोहो ही हो । इण वास्तुँ वंदगी रो हुनर सीखनै इण शरीर नै पोसण लागो ।

उणा नै धान पर धान धनी ऊकतती । वें विचारक हा । उणा रा विचार पणा मुळनिपोहा हा । वें बहुधृत हा । ओछा विचारं रें दायरें मू निसरनै वें विशाल क्षेत्र में घूमणआळा जीव हा । हरेक सप्रदाय रें सामु-संतता मू उणां रा भेदा हुता ।

आप री वंदगी रें वारें में वें कँवता—अँ वंद और डागदर म्हारी धान काटे । इण वामनै म्हारें रजिस्ट्रेशन रो मन्त्राल आयो जद मनै इणां मू टक्कर नेत्रणी पही । वें मनै 'दी बचाम' में रगावणो चाक्रता पण में सगळां रें सामने उणा नै कैयो कँ हु गमळा री सोच जाणू हूं, हूं घोई री कमाई नही खाऊँ हूं, म्हारी उजव मू काम खताऊँ हूं ।

सांग उणा रें वारें में कँवता कँ बाबोजी भिलाशो अघडा सखियो पूबने देवें है । इण रो उमळो वें दिया करता—ये टा बयो नही सगावो कँ हूं काई देऊँ हूं, पण धेरु बाप बहर है कँ जिन चीज में मारण री समती नही हुवें उण में जीवावण री सगनी

किण तरं हुवं ? हां ! भूरण-राटा और जुकाम ठीक करणआळा गोळी-गुटका हं नही वणाऊं ।

(२)

उणां री कई वाता अजीब लागती । उणां रो दन्नाई देवण रो तरीको तीन लोक सूं न्यारो हो । उणां री प्रंबिटस दुनियां सूं न्यारो हो । कोई रोगी उणां कर्न पूगतो और इलाज करान्नण री बात कंभ्रतो तो बं उण री तरफ गोर सूं देलनं पूछता—क्यों ! सगळो जाग्यां आ आयो ? परं ! हं धारो इलाज करसूं । केर बं उण सूं बोड़ी देर बातचीत करता अर आउर मे पूछता—दन्नाई ऊपर धो लेसी क तेल ? धो लेवणो हुवं तो धो-ही-धी लेवणो पडसी और तेल री इछपा हुवं तो तेल-हो-तेल । आ बात सुणनं रोगी सकपकीज जावतो पण बं कंभ्रता कं धो अघना तेल नं गळें सूं हेठें उतारण रो जिम्मेदारी धारो और पूठो बारं नही आन्नण देवण री घांटी म्हारी ।

जद कोई पूछतो कं धो कंकिर खावणो तो बं कंभ्रता कं खीचडी में, लापसी में, रोटी में, दाळ में, मीठें में और धारो मरजी हुवं तो गुटकं-गुटकं; पण अक शतं है कं जीमंतं बलत, जीमण रं अक घटो पैलां ताई और जीमण रं तीन घंटां बाद ताई पाणी पीवण री सक्त मनाई है; इण बात रो पाळण करणो घणो जरूरी है ।

अक बार अक रोगी पूछियो कं तेल किसो लेऊं ? उणा उथळो दिमो कं घासलेट और मोत्रिल-आयल नं छोडनं हरेक तेल चलं जिण सूं कपडो चीकणो हुय जावं । कारण ओ है कं आपा नं तो कपडो (शरीर रो मायलो भाग जिको कपडो ही है अक तरं सूं) चीकणो करणो है । थोडी देर बाद उण रोगी पूछियो कं दूध पियो जावं तो ? इण बात पर बं झट बोलिया—तनं ठा हुवंना कं गळनं सूं चायं जित्तो दूध छाण लां पण गळनो चीकणो न्हों हुवं और जे धो पावणो हो छाणा तो वो झट चीकणो हुय जावं; इण वास्तं धी लेवणो चापीजं ।

उणां री दन्नाई ऊपर स्नानपान मे, ऊपर लितायोड़ी वाता रं सिताय, की परेज नी हो । गुड-सटाई री मनाई बं को करता नीं । बं कंभ्रता कं म्हारी दन्नाई ऊपर कंरी रो अचार ई भनाई रातो ।

दवाई देवणी गरु करण सूं पैना बं पीग रं नात्र अक लोट लेवता, मूगो-धम्म विरू तापोहो (मी रविदांआळो) ।

(३)

उणां रं हाथ में जम हो । बं रोगी नं दन्नाई लेवण री तरकीब ई समजावता । दन्नाई रं गळें माय सूं अक मोटी बननं पैता गुद सायनं बनारना, ताई उण रं देवना ।

अक बार उणां बहदहजमी रं अक रोगी रो इलाज करियो । दलाई देवण सू पैलां उण नं पुछियो कं घी रो किसी मिठाई रो शौक है ? उण उयळो दियो कं खात्रण रो शौक तो घणो ही मोतीपाक रो है पण हणै कुण सत्रासं ? आ मुणनै उणां कंयो कं अक वडो घूमचो मोतीपाक रो डळवाय सँ, सत्राय घी रो, म्हारी दलाई मोतीपाक सागं ही दिरोजमी ।

बं कंभता कं रोगी नं जिण चीज रो शौक हुरं उण चीज सागं ही दलाई देवणी चायीजं; कारण ओ है कं ठीक हुयां पछं बो उण चीज नं खात्रण री इच्छा करसी हीज, ओर जे कदास पछं खायां नुकसाण हुय जावें तो ? इण बातें पैलां सू ही वा चीज सत्रासणी ।

जीमती टंम ओर जीमनं बाद मे पाणी नही पीवण रं वारं मे बं तर्क देवता कं बरं नं गिठण नं जिस्तं पाणी री जरूरत हुरं उरं रो जुगाड तो प्रकृति आपं-ई कर देवें—करं नं चावण सू गिठण लायक कर देवें; ओर देखो तो सही कं इण बात रो ग्यान तो जिनाबरो तक नं हुरं, सावती वेळो बं पाणी नही पीवें ।

बं कंया करता कं मिनाग आपं मरं, बेमारो-मेमारी मे वणं जिस्तं ताई मुंडो चलावता ही रंरं; इती अकल तो डांटां में ही है कं पोडी-मीक बेमारी हुता ही बं चारं-पाणी में मुंडो ही नही मारं, गाय नं जे मुत्राळो हुय जावें तो वा वांटो गावणो ही बंद कर देवें, चरणो तो बंद करं ही ।

(५)

बं बँवता कं पैलां आदमी मांथं नं इलां ओर पेर मांथो आदमी नं बरइ मेवें ।

बं घणी बार कंया करता कं आदमी उण बलत ताई बीसं जिण बगन ताई उण रं मन मे मरण री नही आवं । जिण रोगी रं मन मे मरण री बगन बग बावें, पेर उण नं कोई टीक नही कर सवें । अक बार बं अक हमे ही रोनी नं देमन नं बडा । बो कई दिनां सू बेमार हो । बं उण कनं बेउटा ओर बानचीन बरग-बरग दुदियो—बाई सावण-पीवण री मन मे आवं है ?

'ही महाराज ! म्हारी तो बाई रंदणा बोली ।'

'बाई देवण-ओइण री ?'

'नही महाराज ।'

'बाई बोल-तमागो देलक री ? अचहा ओर कोई इच्छा ?'

'अबै बाई देला ?... ... लफइ तो बरगवा हो रंदा ।'

किन तरें हूँ ? हाँ ! भुरग-गाटा और बुझाव टीक करनवाटा गोली-गुटका हूँ नही बनाऊँ ।

(२)

उणां री बर्द वाता अजीब लागनी । उणां रो दबाई देवण रो तरीको तीन लोक सूं ग्यारो हो । उणां री प्रीकित्त दुनियां सूं ग्यारी ही । कोई रोगी उणां बर्न पूगनी ओर इमाज करावण री वात कंदता तो बं उण री तरफ गोर सूं देगनं पूदना—बर्नो ! गण्डी जाग्यां जा आयो ? हाँ ! हू धारो इमाज करसूं । फेर बं उण सूं घोड़ी देर पातचीत करता अर भागर में पूदना—दबाई ऊपर घो तेमी क तेम ? घो सेवणो हुँ तो घो-ही-घो सेवणो पड़गी और तेम री ददपा हूँ तो तेम-ही-तेम । आ वात गुणनं रोगी सकपकीज जावतो पण बं कंदता कं घो अपवा तेम नं गळें सूं हेठें उतारण री जिम्मेदारी धारी ओर पूठो बार्न नही आवण देवण री प्रांटी ग्यारी ।

जद कोई पूछतो कं घो फीकर रावणो तो बं कंदता कं रीचडी में, सापसी में, रोटी में, दाळ में, मीठें में और धारी मरजी हूँ तो गुटक-गुटक; पण अंक घतें है कं जीमते वखत, जीमण रं अंक घटो पैलां ताई और जीमण रं तीन घंटा बाद ताई पाणी पीवण री सकत मनाई है; इण वात रो पाळण करणो घणो जरूरी है ।

अंक बार अंक रोगी पूछियो कं तेल कित्तो लेऊ ? उणां उपळो दियो कं घासलेट और मोबिल-आयल नें छोडनं हरेक तेत चलं जिण सूं कपडो धीकणो हुय जाई । कारण ओ है कं आपां नें तो कपडो (शरीर रो मायलो भाग जिको कपडो ही है अंक तरें सूं) चीकणो करणो है । घोड़ी देर बाद उण रोगी पूछियो कं दूध पियो जाई तो ? इण वात पर बं झट बोलिया—तनै ठा हुँला कं गळनं सूं चार्यं जित्तो दूध छाण ला पण गळनो चीकणो नही हुँ और जे घो पावानो ही छाणा तो वो झट चीकणो हुय जाई; इण वास्तं घो लेवणो चायीजं ।

उणां री दबाई ऊपर खानपान में, ऊपर लिखियोड़ी वाता रं सिखाय, की परेज नी हो । गुड़-खटाई री मनाई बं को करता नी । बं कंदता कं ग्यारी दबाई ऊपर कौरी रो अचार ई भलाई खावो ।

दबाई देवणो सरू करण सूं पैला बं फीस रं नात्र अंक लोट लेवता, मूंगो-धम्म बिच्छू खायोडो (सो रुपियाआळो) ।

(३)

उणां रं हाय में जम हो । बं रोगी नें दबाई लेवण री तरकीब ई समझावता । दबाई रं गाळें मांय सूं अंक गोळी करनं पैलां खुद खायनं वतावता, पछें उण नें देवता ।

अब वार उणां बदनहजमी रँ अबक रोगी रो इलाज करियो । दब्राई देखण मूं पैलां उण नै पूछियो कं धी री किसी मिठाई रो शोक है ? उण उयळो दियो कं खात्रण रो शोक तो घणो ही मोतीपाक रो है पण हणें कुण खत्रात्रै ? आ सुणनै उणां कंयो कं अबक बडो घूमचो मोतीपाक रो डळब्राय लँ, सत्रायँ धी रो; म्हारी दब्राई मोतीपाक सागँ ही दिरोबसो ।

बै कंब्रता कं रोगी नै जिण चीज रो शोक हुबँ उण चीज सागँ ही दब्राई देखणी चायीजँ; कारण ओ है कं ठीक हुयां पछँ ओ उण चीज नै खात्रण री इच्छया करसी हीज, ओर जे कदास पछँ खायां नुकसाण हुय जात्रँ तो ? इण वारतँ पैलां सू ही बा चीज खत्रात्रणी ।

जोमनी टँम ओर जोमनँ बाद मे पाणी नही पीवण रँ वारँ मे बै तकँ देखता कं बरँ नै गिटण नै जित्तँ पाणी री जहूरत हुबँ उतँ रो जुगाड़ तो प्रकृति आपँ-ई कर देवँ—बरँ नै खात्रण मूं गिटण लायक कर देवँ; ओर देखो तो सही कं इण बात रो ग्यान तो जिनाबरा तक नै हुबँ, खात्रती वेळां बै पाणी नही पीसँ ।

बै कंब्या करता कं मिनत आपँ मरँ; बेमारी-सेमारी मे वणँ जित्तँ ताई मूंडो खत्रात्रता ही रँवँ; इत्ती अकल तो बाँदां में ही है कं थोडी-सीक बेमारी हुतां ही बै चारँ-पाणी में मूंडो ही नही मारँ; गाय नै जे मुखाळो हुय जात्रँ तो बा बाँटो खात्रणी ही बंद कर देवँ, चरणो तो बंद करँ ही ।

(४)

बै कंब्रता कं पैलां आदमी मांचे नै हातँ ओर पेर मांचो आदमी नै पणइ सेवँ ।

बै घणी वार कंब्या करता कं आदमी उण बरतत ताई बाँवँ जिण बरतत ताई उण रँ मन मे भरण री नही आवँ । जिण रोगी रँ मन मे भरण री बाज कम जावँ, पेर उण नै कोई टीक नही कर सवँ ! अब वार बै अब हसँ ही रोगी नै देखण नै मया । ओ कई दिनां मू बेमार हो । बै उण बने बैउया ओर बाजपीन करतँ-करतँ पूछियो—बाई खात्रण-पीवण री मन में आवँ है ?

'ही महाराज ! म्हारी तो बाई इच्छया कोनी !'

'बाई देख-ओइण री ?'

'नही महाराज !'

'बाई खेल-सगातो देखण री ? अचहा ओर कोई इच्छया ?'

'अबै कंबई देला ? ... सकाइ तो सहाजी से देला ।'

किण तरं हुन्नं ? हां ! धूरण-साटा और जु
वणाऊ ।

(=

उणां री कई वातां अजीब लागती । उ
सूं न्यारो हो । उणां री प्रैक्टिस दुनियां सु
इलाज करान्नण री वात कँन्नतो तो बँ उण
सगळी जाग्यां जा आयो ? खैर ! हू धारो
वातचीत करता थर भाखर में पूछता—दत्ता
हुन्नं तो धी-ही-धी लेन्नणो पढ़सी और तेल री
गुणनं रोगी सकपकीज जान्नतो पण बँ कँन्नता
उतारण री जिम्मेदारी धारी और पूठो बारं

जद कोई पूछतो कँ धी कीकर खान्नणो
रोटी मे, दाळ मे, भीठें मे और धारी मरजी
जीमतं वखत, जीमण रं अक घटो पैलां ताई
पीन्नण री सकत मनाई है; इण वात री पाळ

अक वार अक रोगी पूछियो कँ तेल कि
और मोजिल-आयल नँ छोडनं हरेक तेल चर्ल
कारण ओ है कँ आपां नँ तो कपडो (शरीर
तरं सू) चीकणो करणो है । थोडी देर बाद
इण वात पर बँ शट बोलिया—तनं ठा हुन्नं
पण गळनो चीकणो नही हुन्नं और जे धी पा
जान्नं; इण वास्तं धी लेन्नणो थापीजं ।

उणां री दघ्नाई ऊपर खानपान मे, ऊपर
नी हो । गुड़-साटाई री मनाई बँ को करता
रो अचार ई भनाई साधो ।

दघ्नाई देवणी गरु करण मूं पैला बँ पं
विष्णू सादोडो (मो रविपात्राळो) ।

(=

उणां रं हाथ में जग हो । बँ रोगी नँ
रं गळें माद मूं अक सोटी बनने पैला

मुल्ल ? मैं भगन्ना लिया है ससार रा दुग छोडण नै; इण वास्तै दुल-दुल छोड दिया, अबे मुल्ल भोगसूं ।

बे डरता किण सू ही कोनी । खरो कंठण मे बे अचूक हा । बे कम बोलता पण बोलता जद मुणणिया उणा सू प्रभात्रित हुया बिना नी रैवता । अक वार किणी उणा नै पूछियो के घोळा बयो आने ? बे हंसिया और कैयो के भायै नै घणो रगडियां सू घोळा आने; जिको माये सू काम ही नी लेने उण रै घोळा नी दीसै । और घोळा सू किमी बुडापो गिणोजे ? भेड रै जलम सू ही घोळा हुवे और बकरी रै मरे जित्तै काळा-रा-काळा ही रैवे, घोळा नी हुवे ।

जोडण रै आखरी दिना मे बे सबंधा निरलेप हुयने रैवण लागिया । आप री जापदाद सू मोह हटापने बे निजोखमा हुयिया और दो-अक दिना री साधारण हरारत सू ही इण सगार सू विदा हुयिया ।

ओ उथळो मुणनं वै उठे सूं उठनं पाधरा वारं गया परा । उण रे घरआळा सागं गया और दत्ताई री वात पूछी । जद उणां झट कैयो—म्हारी दत्ताई कीं काम नी कर सकं अबं; जिण नं सत्तार री कैई चीज में आसक्ति ही कोयनी और जिको आ वात झाल बैठियो है कै अबं मनं मरणो है, उण नं कुण वचाय सकं ?

आ कैय नं वै आप रे थानं-मुकानं गया ।

वै खुद की विशेष जीमता और कौशता कै ओ शरीर तो बोरी है, इण नं तो भरता जाओ ठूस-ठूसनं; फेर बोरी विना सामरं ही ऊभी रंसी; और खाली बोरी ? ... वा ऊभी नहीं हुय सकं ।

खाक्षण-पीत्रण रं विषय री उणां अेक घटना सुणायी—हू ज्ञान हो जद मनं घूमण रो शोक हो; रोटी खायनं अेक गात्र सूं टुरतो अर दूसरं गात्र मे पाणी पीत्रतो । अेक दिन घणी खोटी हुयी । सदा ज्यो टुरियो पण गात्र नहीं आयो सो नहीं आयो । घर-कूचा, घर मजलां करता-करतां सूरज विसृज्यो । सिभया पडगी । आतर अेक झूपडो निजर आयो । हूं खायो-खायो उठे गयो और झूपडै रं वारं ऊभे बेली कनं पाणी मागियो पीत्रण खातर । बो मांय सूं गुणियो खायो अर पाणी पात्रण लागो । हू डकळ-डकळ पीत्रतो गयो अर गुणियो खाली । बो दूजो भरनं लायो और दूजो ही खाली । आ देख नं बो रोळा करतो गात्र कानी भाजियो । हूं ही तारं नाठो । इण वास्तं यो गिळ्याघण लागो । इत्तं मे ही गात्रआळा कई जणा भेळा हुयग्या । वात जिण रं ही समझ में कौनी आयी । आतर में उणां नै समझाया कै ओ म्हारं सूं डरतो भाजियो है कदाग । मनं भूत समझियो है इण बेली । हूं भूत-पलीत नहीं हूं, मिनरा हू । तिस घणी ही इण खानं पाणी की विशेष भायो । आ मुणनं उण बेली रं सांस मे सांस आयो । वै उठनं म्हारं हाय मगायो—वा देखण नं कै हूं मिनरा हू अघत्रा नहीं ।

(५)

योगानदरी हुनिया घणी देगी ही । वै कंदगा कै जे स्थान में पूरण हुवणी हुवं तो 'कचेडी-मोठ' मे स्थितो । गीता रो पूरो स्थान इण मोठ में भिनं । कोट-कचेडी-आळा तो निच्छेन हुवं ।

वै कंदगा कै दिरो भाया घणी गीगीवें उण रे भूषण रो वर हर कणन रंवे । इण काने उण नं घोरणी पई और अस्वभाव करणा पई पण मातृभावा कदेई नी हुयोवें । "ऊ.....ऊ मोरो !ऊऊ बाडी ! ऊ.....ऊ वा ! " कै कदे दिला ही; बाबा वर दूध भो, वात ही रंगी ।

योगानदरी: अेक हुने नी मोठ नी और उण मे रंइण लागत । अेक वार अेक जनी काने काने उण उण उच्छेन दिरो कै अघत्रा मोठी कणन या दूध शोरीवें कणन

मुख ? मैं भगवत्ता लिया है संसार रा दुग छोडण नै; इण वास्ती दुग-दुग छोड दिया, अबे मुख भोगनू ।

बं डरता किण सूं ही कोनी । खरी कंठण मे बं अनूक हा । बं कम योनता पन बोरता जद मुणणिया उणां सू प्रभासित हुया विना नी रैत्तता । अक वार किणी उणां नै पूदियो कं घोळा बयों आत्रे ? बं ह्मिया और कंयो कं मायं नै घणो रगडिया सू घोळा आत्रे; जिहो मायं सू काम ही नी लेत्रे उण रं घोळा नी दीसै ! और घोळा सूं किमो बुडापो गिणीजै ? भेड रं जलम सूं ही घोळा हुवै और बकरी रं मरं जित्तै काळा-रा-काळा ही रैसै, घोळा नी हुवै ।

जीवण रं आवरी दिनां मे बं सत्तथा निरळप हुयनै रैत्तण लागन्या । आप री जायदाद सू मोह ह्टायनै बं निजोत्तमा हुयग्या और दो-अेक दिना री साधारण ह्मरात सू ही इण ससार सूं विदा हुयग्या ।

ओ उचळो गुणनं धै उठे शू उठने पायरा वारं गया परा । उण रं घरआळा सागं गया और दत्ताई री यात पूदी । जद उणां द्दट कंयो—म्हारी द्दत्ताई कों काम नी कर सकं अबे; जिण नं संसार री कई चीज मे आसक्ति ही कोयनी और जिको आ वात क्षाल वंठियो है के अबे मनं मरणो है, उण नं कृण वंचाय सकं ?

आ कैय नं धै आप रं धानं-मुवानं गया ।

वै खुद की विशेष जीमता और कंठता कं ओ शरीर तो बोरी है, इण नं तो भरता जाओ ठूस-ठूसनं; फेर बोरी विना सायरं ही ऊभी रंसी; और खाली बोरी ?
.... वा ऊभी नही हुय सकं ।

खातण-मीक्षण रं विषय री उणां अक घटना सुणायी—हू ज्ञान हो जद मनं घूमण रो शोक हो; रोटी खायनं अक गात्र सू टुरतो अर दूसरं गांव मे पाणी पीत्रतो । अक दिन घणी खोटी हुयी । सदा ज्यों टुरियो पण गात्र नही आयो सो नही आयो । घर-बूचा, घर मजला करता-करता सूरज विसूज्यो । सिभया पड़गी । आखर अक झूपड़ो निजर आयो । हूं खायो-खायो उठे गयो और झूपड़ै रं वारं ऊभे वेली कनं पाणी मागियो पीत्रण खातर । वो माय सू गूणियो लायो अर पाणी पात्रण लागो । हूं डकळ-डकळ पीत्रतो गयो अर गूणियो खाली । वो दूजो भरनं लायो और दूजो ही खाली । आ देख नं वो रोळा करतो गात्र कानी भाजियो । हूं ही लारं नाठो । इण वास्तं वो गिरळारण लागो । इत्तं मे ही गावआळा कई जणा भेळा हुयग्या । वात किण रं ही समझ मे कोनी आयी । आखर मे उणा नं समझाया कं ओ म्हारं सू डरतो भाजियो है कदास । मनं भूत समझियो है इण वेली । हूं भूत-पलीत नही हूं, मिनख हू । तिस घणी ही इण वास्तं पाणी की विशेष भायो । आ सुणनं उण वेली रं सास मे सास आयो । वे उठने म्हारं हाय लगायो—आ देखण नं के हूं मिनख हू अथवा नही ।

(५)

योगानदजी दुनिया घणी देखी ही । वै कंठता कं जे ग्यान मे पूरण हुत्रणो हुवं तो 'कचेडी-लोक' मे विचरो । गीता रो पूरो ग्यान इण लोक मे मिलं । कोट-कचेडी-आळा तो निळोप हुवं ।

वै कंठता कं जिकी भाया भणनं सीखीजे उण रं भूतण रो डर हर वखत रंसे । इण वास्तं उण नं घोसणी पड़े और अम्यास करणो पड़े पण मातृभाया कईई नी भूलीजे । "ऊं.....ऊं लोटो !ऊं.....ऊं धाळी ! ऊं.....ऊं मा !" नै धार्य कित्ता ही बरसा वाद पूध लो, याद ही रंसी ।

योगानदजी अक हुरेली मोल ली और उण में रंरण लागो । अक वार अक जणे तानो मारियो जद उणां उचळो दियो कं भगवा तेयने संसार रा दुन धोधीजे अथवा

कालो चसमो

—दामोदरप्रसाद—

यूरोप और उत्तरी अमरीका रें उत्तरी देशों में बरस में नत्त महीना जमीन बरफ री सफेदी सूं ठकियोड़ी रेंने । अबर घुष और शीणा वादळां सूं दूधिया लखावें । सूरज री हळकी रोसणी भर झळकें । पण सूरज उत्तरी गोळार्य में प्रवेश करे तो यूरोप रा बर्फाणी देशों में गरमी री मुखदायी मौसम आवें । हिमखळां री बरफ झरणां रें मिस दाळ में दळें । इणी गळी-अधगळी बरफ रें ऊपर सूरज री तेज रोशनी पडे तो मौसम-बहार रा सैलानिया री आखियां पर 'जमचमाट' करती बरफ रो पळको पडे अर यूरोप रा सैलानी काळा खसमा धारण कर घूमण नें निवळें । आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड रा तटवासी समुद्र-स्नान रें खातर भरी-दोपारी में निवळें तो काळा खसमा लगावनें निवळें जिन सूं आखियां री धुप सूं रदा हवें और समंदर रो दरसाव भी गुहावणो लखावें ।

यूरोप दगैरा देशों में काळा खसमा खाग जरुरत रें कारण बापरीजें । गरम देशों में सा'ब लोग धूप रें खंचाव ताणी हण रो उपयोग करे । पण हिंदुरान री अन्नक माया है; अट कोई मुई वात फंगन वणनें आंगे और कडि वणनें जडा जमा बेटे । बिलायती बाहुवा रें मुखई अर पिरुम-जगत रा अभिनेतावा रें दीवार पर काटे खसमै री सजावट देखनें भारत रा लोखानां रें भी हण वात रो अनून सवार हणो अर बालेजा रें विट्पायी-दगं में लकीर री खबीरी लखीव हुयी ।

आज शहर री सडका पर, गांव री दृढारां में, होटलां और होटलां में, आभिजा नें सजावणहार काळा खसमाधारी खंजन-परतन बाहु सोणां री भीड-भाड़ देमोवें । दिन भर री खेबळ अर बस-वणहार सजूरां री 'सलाम' सूं सेवनें खेडेह अरमरा रें 'खेबडु' ताई हण री पुग है । अ्यार-दख महीना सेमी अर देट-अट्टण विज्या अ सेवनें खेबपावैटी, लबली बही-खाताधारी बोपारिया लाई हण रो रडाव है । छान-निलक-आरी, पांख टैम माळा पेरणिया पहा-मुजारिया सूं सैरनें हण्ट नें खेदेवणो खबीला ताई हण रा अदमुन आनक है । खोटी-खोटी-धारी, बाली बरमुगं अ हणिकारी

चेढा रोपो, मत बूँट उपाड़ो

—सौभाग्यसिंह शेखावत—

चेढा रोपो, मत बूँट उपाड़ो
राली सीक्री, मत गुदड़ी फाड़ो
बाग लगाणो अत घण दोरो
विधूस मचाणो सरळो सोरो

सीत-नीत काकड़ मत फोड़ो
भाठो, साधो, चाधो, जोड़ो
कण-कण जुड़ियां मण वण जात्रं
तिणको तिहें थोणदो ह्य जात्रं

ऊनण दीठा मत घड़ियो ढोळो
फरड़ो शींग फाड़ दे भोळो
टग-तकड़ी रो गयो जमारो
भोपां डोकर मत-ना घारो

कर मे तिघयो बाग यताहें
घी-मासी घोटो घपराहें
पुरो तोली, मन टस्का मारो
बोनम घोड़ा मत गिणमारो

गिता गीतकी रियगा देवें
दीड़ी मीनट बग कर तेवें
आनाग अरुण रो आडू इतोड़ो
दापर बटो, मन ऊबक दीड़ो

व्यग्नवादा मेवादा हे पाप भी हूँ जो कई इत्तार गरी है । गार्मी पुणो तो मुद बावु मोला रं की भी हूँ जो कोई ब्रवाव गरी है ।

बादा अगमापारी बावुदा रं पूर-पूरनं देगनं मूं मरव बायं पाननी मुपानं परेमान है और बादा अगमापारी गादरन-मवाती मूं पीरर रो दुंदिन-मुनिन-कर्मवारी भी हेगन है । अं गोर नं र्नाद देगन-प्रादा गादरन-मवात दिनी मूं टकराये अगमा इना रं मारग में कोई पूरो-बादा आ जात्रं तो बंचना देर मी नो लगायें—अये ! अया है वा, देगने अम !

धात्रने गाने अंधः हरितं हरितं परमति—गादिर्य री अक्षकारोविन में कंदा तो बादा अगमापारी बावुदा नै मगळें 'अगमति' अंतवार हो निरर आरं । अे सांपरत मे भी मुपनो देरे । मयानं मे भी बरुपना कोरं । उपां नै सकेद पीत्र भी बाळो, रंपदार भी बदरग, सगात्रं । प्रकाश में भी अघकार-नो भाभूम परं । और रात रो टैम तो 'अधेन सगतावृत' री उक्ति परितायं हूँ । उपां पर 'कतर ग्लाईट' रो बासेय भी लगायो जा सकै है ।

कई लोग काळो चसमो आदन रं मुजव सगात्रं तो कई फंशन रं सातर । कई सजात्रट रं सारू काम सेत्रं तो कई रोव दितात्रण वास्तं इण री दरवार समनं । काळो चसमो व्यक्तिव अमकात्रण मे मददगार हे तो नेत्र-दोपा नै द्विपात्रण में सहायक भी । नेत्र-रोगां रं प्रति तो काळो चसमो कत्र व-सो लाभकारी है । 'पादेन सजः' री भात 'चमुपा काणः' भी अग-विकारां मे आवं । अेक तिकार रं योग में संस्कृत व्याकरण री तृतीया विभक्ति अपने-आप चाली आवं इयाई 'अेकाक्षो' सातर काळो चसमो भी । समाज मे आयो मितल तो दया और सहानुभूति रो पात्र है, 'सूरदास' रं मिस आदर और धडा रो पात्र भी, पण काणं रं प्रति समाज मे क्रूरता और कुटिलता रा भास निहित है । 'मूण-सास्तर' मे भी काणं रो दरतण चोखो नै मान्यो है, इण वास्तं काणा आदमी उपहास और व्यंग रा पात्र रंमा है । इण सगळी वातां री रामबाण औलव है काळो चसमो ।

तुर्नं रो क्रांतिकारी कमालपाशा काळे चसमं रो प्रेमी हो । मुगोलिनी अर तीजो जिसड़ा हिक्टेटर भी काळो चसमो धारण करभा करता हू । मौलाना आजाद, राजाजी और जाकिर हुसेन भी इण रा प्रेमी हूमा है ।

आल रं काळे चसमं रो आत्रिप्कार यूरोप मे हुयो और भात्रनात्रा रं काळे चसमं रो ईजादकर्ता भारत है । इण साधारण काळे चसमं मूं ज्यादा शसकारी है भात्रनात्रा रो काळो चसमो । इण मे साधारण काळे चसमं रा अंय तो सगळा है पण मुण अेक भी कोनी । इण रो परिणाम भी दूरगामी हूँ और पीडी-दर-पीडी विकसित हूँ । भारत देश रो इतिहास इण बात रो साक्षी है ।

स्वामी दयानंद सरस्वती मूर्तिपूजा, बाळविवाह, पूनाष्टन त्रितडी सामाजिक बुरादया रो विरोध करने हनी-निशा आदि रं समर्थन मे गुपारवादी कदम उठाया तो

पुराण-पथी लोग इणी काळें चसमं नें चढाय नें आयंसमाज मूं टक्कर ली और राजा राममोहन राय रो भी इणी वामनं विरोध हुयो । प्रार्थनासमाज, ब्रह्मसमाज और वेदान्तसमाज नें इण काळें चसमं रें कारण थाफतां उठानी पडी । महारमाजो रें सत्याग्रह और स्वराज्य रो भी अेक अरसें ताई विरोध हुयो । जिन्ना सा'ब और उणां रो सस्था मुस्लिम लीग इणी 'द्विराष्ट्रवादी' काळें चसमं नें लगायनें पाकिस्तान रो माग करी और अत में भारत रो विभाजन हुयो और दगा-फसाद हुया । अं सब भावनात्मक काळें चसमं रो काळी करतूता ही । आज भी अनेक लोग अंग्रेजी रें मद में भूनिया यका देशी भाषाभाा रो हंसी उडावनें और राजस्थानी रो विरोध करे ।

आज रुडिवादी, पुराणपथी लोगा रो आंत मूं उठनें काळें चसमं रो करतूतां नबी रोमणी रो औलादा, तथाकथित मुधारत्तादिया और समाजवादी नेतातां पर भी उत्तर आयी है । पुगणपथी रुडिवादी समाजमुधार रो हर बात रो विरोध करता, उणी तरें आज समाजवादी मुधारक हर पुराणी बात रो विरोध काळो चसमो लगाय नें आंत भीचनें करे । अं भारत रो हर बात नें इंगलैंड, अमरीका, रूस अथवा चीण रो निजर मूं देखे । इण वास्ते काळें चसमं रा रग-रूप भी बदळग्या है; अवं लाल और पीळें रग रा चममा भी आयग्या है । विदेशा रें प्रति आपां रो अघ-भक्ति इण कदर बघणी है कं मेह भलाई मास्को में वरमो, छत्तो आपां भारत मे ताणां, भलाई अठे अबाग माफ कयो नी हुत्तो । काळें चसमं रें पाण बवई नें हालीबुड, दिल्ली नें लंदन, बडबर्स्त नें मास्को दणायनें देला और भारत नें यूरोप रो मुलक समझां !

जरा महारानी राखो भाई सा'ब ! आप काळें चसमं रें चसकंदार चक्कर मे हो । आप नें यथार्थ रो टा नी है । जरा अंनक उतारनें कोरी आंगियां मूं इण देश नें देखो—ओ इंगलैंड बोनी, अमरीका बोनी, रूस बोनी, चीण बोनी ; ओ भारत है ।

यणपत्राळा नेतावां रें पास भी इण रो कई इलाज नही है। सावी पूछो तो खुद बाबू सोगा रें कनी भी इण रो कोई जबाब नहीं है।

काळा चसमापारी बाबुवां रें पूर-पूरतें देखणें सूं सडक मायें चालती सुपायां परेमान है और काळा चसमापारी साइकल-सवारां सूं चौनड रो ट्रॅफिक-मुलित-कर्मचारी भी हिरान है। अं सफेद में स्याह देखणजाळा साइकल-सवार किणी सूं टकरातें अघसां इणां रें मारग में कोई वूडो-वाळक आ जातें तो कंब्रता देर भी नी लगान्तें—अये ! अंधा है क्या, देखके चल !

ध्यानणे भासे अंधः हरितं हरितं पश्यति—साहित्य री अलंकारोक्ति में कैंनां तो काळा चसमापारी बाबुवां नै सगळे 'असंगति' अलंकार ही निजर आवे। बें सापरत मे भी सुपनो देखें। यथायं मे भी कल्पना कोरें। उणा नै सफेद चीज भी काळी, रपदार भी बदरग, लखाळें। प्रकाश में भी अंधकार-सो मालूम पड़े। और रात री टैम तो 'अंधेन तमसावृत' री उक्ति चरितार्थ हुन्नं। उणा पर 'कलर ब्लाइंड' रो आक्षेप भी लगायो जा सकें है।

कई लोग काळो चसमो आदत रें मुजब लगानें तो कई फंशन रें खातर। कई सजावट रें सारू काम लेन्नं तो कई रीब दिखातण वास्तै इण री दरकार ममन्नं। काळो चसमो व्यक्तित्व चमकातण मे मददगार है तो नेत्र-दोयां नै छिपातण में सहायक भी। नेत्र-रोगा रें प्रति तो काळो चसमो कतब-सो लाभकारी है। 'पादेन खजः' री भांत 'चसुया काणः' भी अग-विकारा मे आवें। अेक विकार रें योग मे संस्कृत व्याकरण री तृतीया विभक्ति अपर्ण-आप चाली आवें श्याई 'अेकाक्षी' खातर काळो चसमो भी। समाज मे आपो भिनख तो दया और सहानुभूति रो पात्र है, 'सूरदास' रें मिस आदर और श्रद्धा रो पात्र भी, पण काणें रें प्रति समाज मे क्रूरता और कुटिलता रें भास निहित है। 'सूण-सास्तर' मे भी काणें रो दरसण चोखो नी मान्यो है, इण वास्तै काणा आदमी उपहास और व्यंग रा पात्र रैया है। इण सगळी वाता री रामबाण औलद है काळो चसमो।

सुर्भी रो क्रांतिकारी कमालपाशा काळें चसमं रो प्रेमी हो। मुसोलिनी अर तोजो त्रिताटा डिक्टेटर भी काळो चसमो धारण करपा करता हा। मौलाना आजाद, राजाजी और जाकिर हुसेन भी इण रा प्रेमी हुया है।

आंग रें काळें चसमं रो आधिप्यार यूरोप में हुमो और भातनात्रा रें काळें चसमं रो ईबादबतां भारत है। इण साधारण काळें चसमं सूं जनादा प्रागवारी है भातनात्रा रो काळो चसमो। इण में साधारण काळें चसमं रा अंब तो सगळा है पण गुण अेक भी बोनी। इण रो परिणाम भी दूरगामी हुन्नं और पीडी-नर-पीडी विभक्ति हुन्नं। भारत देण रो इतिहास इण वाग रो माली है।

ग्यानी इवानद मरम्बनी सुर्गिपूता, कालिब्याह, छामाष्ट्र त्रिमडी मामात्रिच कुटारपा रो दिरोध करनै स्त्री-मिता धारि रें ममपेंन मे सुपात्रकारी बदम उठाया तो

कपड़ा राखण की काच की अलमारी में गोरकी रो ओकरकोट और कपड़ा अेक छद्र-
 फुट तकई फौजी रो पौसाक जिमा हा । अलमारी मे नीच अेक जोड़ो ऊंचा बूट
 राखियोहा हा और खुटियां माथे फेन्ट रो नाइट-कैप और रेलबाबू रें जिमा दो टोप
 हा । खुणें मे अेक ऊचो बेंन ही । सामलें पासी अलमारी मे गोरकी नें भेट मे मित्ती
 मामझी मे हिंदुस्तानी मूर्तियां और पीतळ की बछा रा फूलदान हा । इणां रें अताइ
 हाथीदान, चमडो, रेमम, लकड़ी, चांदी, गीर आदि रो अनेक फूठरी चीजां राखियोही
 ही जिजा चीण, फाम, जमंनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशा की ही ।
 मोक्षण रो कमरो और रंखण रो कमरो अेरु ही हो, कारण लिखना-लिखतां पाकेतो
 आदता ही सारखी आराम-कुरगी और छोटी मेज-कुरमी माथे उणां नें नींद मे उठनं
 लिखण की आदत ही । कमरें मे अेक आठ-फुटो पल्लव हो जिबो मागे और सफेद ऊनी-
 सूनी चादरां सू ढकियोहो ही । मेज रें मिराणें वनै छोटी-गीक मेज माथे गोरकी रें
 पुत्र मंत्रिमम की तमबोर ही । आ वात नैणा मे अळ भरता उणा की जोडापन म्दानें
 दिगोप रूप मू बतायी ।

गोरकी आखरी दरगा में नीचनी मजल माथे रंखना, कारण गून रो दोरें और
 दमै की मिजापन हुखण मू ऊरखी मजल माथे आदतनी मना हुनगो हो । वाता-ही-
 वाना में सदाजदा पेशोका म्दानें अनायो वें गोरकी दिन भर मोटा मू लिखती कणा
 बाखाना, गाथा, गेता मे आप रा मोट ले दिदा करला और लिखण की कपड
 गगला मोट मेज माथे राखने लिखता आदता । कर्ण-कर्मई छोटी माथे गान-गीता
 गंनाण करता, और लिखाई मे काम पुगे हुता ही गगला मोट रही की टोचनी अ अर
 देना, और अदीनदार में आरें आप रें खीबुबीच उणा की छोटी आदता । गगला
 टाकरा में और होस्ता में कुलादता और गेदा रा कला कर्दी कापी बंरखारजी
 लगादता और टट्टा-मसाकरी करता । कर्दीई मे गेदा रा कौदा की कलाई वें गुर
 करता । आप की कृताही मू मजीब रा अदला मे क ल बाखन रा कौद उणा नें बना
 हो । आप रा मोल भेसता और कुमना रंखता ।

साहित्यकारों से तीरथ : गोरकी से घर

(गोरकी साहित्य-यात्रा से उत्तरायण)

—रामनाथ व्यास 'परिकर'—

मैक्सिम गोरकी से नाथ सत्तार से मोटा साहित्यकारों में तिरं गिणीजे । गोरकी जिगमासा नै पूरी करण सारू गोरकी-विश्व-साहित्य-सत्यान से उणां से पोती सू मिलण नै गया । गोरकी गुजराती भायला थी अतुल सबानी सागे हा । सोवियत-काया कल्तूरा (सोवियत सस्कृति) समाचार-पत्र से सत्राददाता कुमारी लेविना इण आयोजन से सगळी व्यक्तस्था करी ।

मैक्सिम गोरकी से नाथ जितो ऊचो और ओपतो उणा से घर रूस से सगळा सू वडे रईत से महल हो । घर में बडता ही मैक्सिम गोरकी से वेरें से बहू नदाज्दो मैक्सिम पेयकोव्वा और गोरकी से पोती घर्ण आदर सू गोरकी लोगा से अगवाणी करी । पूरो घर अंक स्मारक से रूप है, जिन से देखभाळ अंक संग्रहालय से रूप से करीजे ।

गाय बडता ही घर से आंगण में खुलता दो हाल (बडा कमरा) है, अंक में गोरकी से साधना-स्पष्ट और दूजे से उणां से निजी पुस्तकालय है । गोरकी से साधना अंक मोटी और ऊचो मेज माये हुनी, कारण वें अंक केफई से मिनख हा और राजयदमा से रोगी हा । उणा से छत्र फुटे कद से भाफक जमी सू तीन फुट ऊचो कुरसी माये सीधे वेरुण से टाइटरो मलाह मुजव आ रचना ही । मेज से कोई सास साज-सजावट नही ही, अंक कमरा रावण से सकड़ी से दे, दो पेठ पानां से, अंक दो खणा से दवातदान, रगविरंजी वेगलां रावण मानर सकड़ी माये नाथ से काम से गिलास—बस आ ही ऊचो मेज से मामरी ही । मेज से छत्र हाथ माये कई पोवियां अर नोट हा अर अंक से राधियां ही ।

मेज से नीचे अंक मोटी टोहरी रही सारू ही । कुरसी से पारें अंक सांघी बाज से अतमारी में जितोवो से बजारो मागियां ही । हाथे हाथ पाती अंक पनी मोटी बाज से गिटर्नी बाज से शाकनी ही, जिन माये पड़दो नी हा । कमरे से दो दरवाजां माय सू दूरो रंजन से कमरे से नुने । जीवने हाथ पागी मोटी आठ-फुटी

कपड़ा राखण की काच की अलमारी में गोरकी रो ओवरकोट और कपड़ा अके छत-फुटे तकड़े फोजी की पोसाक जिसा हा । अलमारी मे नीचे अके जोडो ऊंचा बूट राखियोडा हा और खूटिया मार्थ फैल्ट की नाइट-कैप और रेलबाबू रँ जिसा दो टोप हा । खुर्च मे अके ऊंची बेंच ही । सामने पासी अलमारी मे गोरकी नै भेट मे मिली सामग्री मे हिदुस्तानी सूतियां और पीतल की बज्जा रा फूलदान हा । इणां रँ अलातें हाथोदांत, चमडो, रेगम, लकड़ी, चादी, सोप आदि की अनेक फूठरी चीजां राखियोडी ही जिका चीण, फ्राम, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशां की ही । सोत्रण रो कमरो और रंक्ण रो कमरो अके ही हो, कारण लिखता-लिखतां थाकेलो आब्रता ही सारली आराम-कुरमी और छोटी मेज-कुरसी मार्थ उणां नै नोद मे उठनै लिगण की आदत ही । कमरें मे अके आठ-फुटो पलंग हो जिको सादो और सफेद ऊनी-सूती चादरा सू ढकियोडो हो । सेज रँ सिराणें कनै छोटी-नीक मेज मार्थ गोरकी रँ पुत्र मँक्मिग री तसवीर ही । आ वात नैणा मे जळ भरता उणा री जोडापत म्हांनै विभेप रूप सू चतायी ।

गोरकी आखरी दरसा में नीचली मजल मार्थ रंक्ता, कारण खून रो दौरँ और दर्भ री शिकायत हुषण सू ऊरली मजल मार्थ जाग्नयो मना हुयग्यो हो । वातां-ही-वाता में नदाज्दा पेशकोला म्हांनै बनायो कँ गोरकी दिन भर लोगां सू मिलती बलत बारखानां, गाब्रां, मेना में आप रा नोट मे लिषा करता और लिखण री बलत सगळा नोट मेज मार्थ राखने लिखना जाब्रता । कर्ण-गर्भई नोटो मार्थ लाल-लीला संनाण करता, और लिखाई रो काम पूरो हुनां ही सगळा नोट रहीं री टोररी मे भर देता, और अदीतकार नै बारँ, बाग रँ बीबुबीच, उणा री होळी जगाबना । सगळा टाबरां नै और दोरतां नै गुलाबता और मेघा रा पत्तां सागें मोटी कँपनायर-नी लगाबना और टट्टा-मसबरी करता । बगीचें में मेघां रा पोपां री सभाळ बँ गुद करता । आप री कुहाही सू मजीब रा जगळां मे रूप बाटण रो शीत उणां नै पणो हो । बरफ रा खेल सेवता और घूमना रंक्ता ।

आगण रँ शर नीचें री मजल मे गोरकी रो निजी पुत्रबानप हो, जिण मे प्यारु मेर भीन री जागा काच की अलमारिया पोषिया सू अटी-दटी हो । बीच मे बंदाकार आबनुस री मोटी मेज ही जिण रँ प्यारु मेर मोहणी कुरदिया ही । बटे री घणबरी पोषियां मार्थ गोरकी रँ हाथ रा संनाण और बिनारें रा हादिना मार्थ टीपा लिखियोटी मिलै । घणो खुगी री बाग का है बँ एण पोदिना री टोरा मार्थ गोरकी रँ दिमाग और चिन्त री बोध सारना बोस बरसा सू बरोबर हुन रहीं है । मारन रा रबीदनाथ टाकुर और गाधीशो काबन बँई टोरा इणा री बलन मे मिलै जिणा मार्थ बोधप्रबध एण दिना गोरकी-विश्वनातिप-सम्पदन रा बिद्वान स्वार काता हा । एण रँ अलातें भारत-सबधी, बई हुजी क्यारुका रा, एण टट्टै हा जिणा मे रोमना रोपा री मुसब महात्मा काधी रो मूज रनि और सबधी बिबेबानद री रं-इणकवा, जिरी

साहित्यकारों से तीरथ : गोरकी से घर

(गोरकी माथे से साहित्य-यात्रा से उत्तरार्थ)

—रामनाथ श्याम 'गरिब'—

मैंसिम गोरकी से नात्र संसार से मोटा साहित्यकारों से गिरि गिरीये । हे गोरकी त्रिपाया ने पूरी करन साह गोरकी-विषय-साहित्य-साधना में उना से पोती गू मिनन ने गया । गोरकी गुबराती भायसा थी अतुन तबानी सापे हा । गोत्रियस्काया कल्चुरा (गोत्रियत संस्कृति) समाचार-पत्र से सदादशाता कुमारी सेविता दण आयोजन से सगळी ध्यतस्या करी ।

मैंसिम गोरकी से नात्र त्रिसो ऊने और ओपतो उना से घर हस्त से सगळा मुं वडे रईत से महल हो । घर से वडतां ही मैंसिम गोरकी से बेटे से बहू नदागडा मैंसिम पेशकीमा और गोरकी से पोती घने आदर से गू गूहा सोगा से अगवाणी करी । पूरो घर अंक स्मारक से रूप है, जिण से देखभाळ अंक सप्रहालय से रूप में करीजे ।

माथ वडता ही घर से आगने में खुलता दो हाल (बडा कमरा) है, अंक से गोरकी से साधना-स्थळ और दूजे से उणा से निजी पुस्तकालय है । गोरकी से साधना अंक मोटी और ऊची मेज माथे हुती, कारण वं अंक फेफडे से मिनल हा और राजमहमा से योगी हा । उणां से छव फुटे कद से माफक जमी से तीन फुट ऊची कुरसी माथे सीधे बैठन से डाक्टर से सलाह मुजव आ रचना ही । मेज से कोई खास साज-सजावट नहीं ही, अंक कलम राखण से लकड़ी से ट्रे, दो पेड पानां से, अंक दो खणां से दशातदान, रंगविरंगी पन्थलो राखण सातर लकड़ी माथे ताल से काम से मिलास—बस आ ही ऊची मेज से सामग्री ही । मेज से डावे हाथ माथे कई पोथियां अर नोट हा अर अंक ट्रे राखियोडी ही ।

मेज से नीचे अंक मोटी टोकर से रही साह ही । कुरसी से लारे अंक जांबी काच से अलमारी में किताबों से कतारा लागियोडी ही । डावे हाथ पासी अंक धणी मोठी काच से लिडकी बाग से झाकती ही, जिण माथे पड़दो नी हो । कमरे से दो दवाजां माथे से दूजो रंखण से कमरे में खुले । जीवण हाथ पासी मोटी आठ-फुटी

कपडा राखण की काच की अलमारी में गोरकी रो ओवरकोट और कपडा अंक छद्म-फुटें तकड़ें फोजी की पीसाक जिसा हा । अलमारी में नीचें अंक जोडो ऊचा बूट रातियोडा हा और खूंटिया मार्थ फेस्ट की नाइट-कैप और रेलबाबू रं जिसा दो टोप हा । घुर्ण में अंक ऊची बेंत ही । सामने पासी अलमारी में गोरकी नैं भेंट में मिली सामग्री में हिंदुस्तानी मूतिया और पीतल की कल्ला रा फूलदान हा । इणां रं अलात हाथीदात, चमडो, रेसम, लकड़ी, चादी, चीन आदि रो अनेक फूठरी चीजां रातियोडी ही जिका चीण, फ्रांस, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान और जापान देशा की ही । सोवण रो कमरो और रं वण रो कमरो अंक ही हो, कारण तिखता-तिखता याकेलो आनता ही सारली आराम-कुरसी और छोटी मेज-कुरसी मार्थ उणां नैं नोद में उठने तिखण की आदत ही । कमरे में अंक आठ-फुटो पलंग हो जिको सादो और सफेद ऊनी-सूती चादरा सू डकियोडो हो । सेज रं सिरार्थ कने छोटी-नीक मेज मार्थ गोरकी रं पुत्र मंगिम री तसवीर ही । आ वात नैणा में जळ भरता उणां री जोडायत म्हानें विशेष रूप सू वतायी ।

गोरकी आखरी बरसा में नीचली मजल मार्थ रं वता, कारण खून रो दौरें और दर्म री शिकायत हुवण सू ऊपरली मजल मार्थ जानगी मना हुयग्यो हो । वातां-ही-वाता में नदायदा पेशकोडा म्हानें बनायो कं गोरकी दिन भर लोगा सू मिलती वयत बारखानां, गाद्यां, घेता में आप रा नोट ने लिया करता और लिखण की वयत सगळा नोट मेज मार्थ राखने तिखता जानता । कर्ण-रर्णई नोटां मार्थ साल-तोला संनाण करता, और लिखाई रो काम पूरो हुता ही सगळा नोट रही री टोररी में भर देता, और अदीतदार नैं बार्, बाग रं बीचूबीच, उणा री होळी जगावता । सगळा टाबरा नैं और दोस्ता नैं बुलावता और मेघां रा पतां सार्थ मोटी कंफकायर-नी सगावता और टट्टा-मसकटी करता । बगीचें में रोवां रा पोधां री सभाळ धें गुन करता । आप री भुहाडी सू मजीक रा जगळा में रूप बाटल रो गीत उणां नैं घणो हो । बरफ रा खेल खेलता और घूमता रं वता ।

आगण रं पार नीचें री मजल में गोरकी रो निजी पुनजाय हो, जिन में क्याक मेर भीन री जागां काच री अलमारिया पोधिया सू अटी-दटी ही । बीच में खंटाबार आबनुस री मोटी मेज ही जिन रं क्याक मेर सोवणी कुरनिया ही । अट्टे री घणकरी पोधियां मार्थ गोरकी रं हाथ रा संनाण और बिनार् रा हाजिया मार्थ टीप लिखियोडी मिलें । घणो खुनी री बाग आ है कं हण पोधियां री टीपां मार्थ गोरकी रं दिमाग और बिगन री शोध सारसा बीत बरसां सू बरोबर हुन रही है । भारत र रबीइनाय टाकुर और गाधीजी बाबन कंई टीपां हणां री कलम में सिने जिण मार्थ होपबबब उण दिना गोरकी-बिबन-हाजिया-संन्याय रा बिदखन ह्यार बरना हा हण रं अलातें भारत-मकरी, कई हुजी भाषणां रा, हण उट्टे हा जिण में रोड्या रोत री पुनक महात्मा गाधी री मुट्टा प्रति और ह्यारी बिबेकानंद री शोधकथा, बि

गोरकी नै भेंट में मिली ही, म्हानें दिवायोजी । शोध रो दूजो विषय देश-विदेश रँ हजारों साहित्यकारा, राजनेतात्रां अर कलाकारा सूं हुयोडो गोरकी रो पत्रव्यवहार है । इण विषय मे रूसी, अंग्रेजी और दूजो भाषात्रां मे गोरकी रा पत्र छप चुका है । सेनिन रँ सागँ गोरकी रो दोस्तानो हो । ओ पत्र-व्यवहार भी गोरकी-साहित्य रो अँक प्रमुख अग है ।

आंगण सू ऊपर जान्नण रो रस्तो रूस री भन्न-निर्माण-कळा रो जीवती-जागतो चितराम है । भन्न रो मालक रूस रो मोटो रईस हो जिकँ इटली रा कारीगरां सू पगोधिया री नाळ और हाथ धरण रो लँरदार सामरो बणवाया हा । हरथ रंग रँ मकरार्ण में रगबिरंगी धारियां री समुद्री लँर रो ओ कटकडो म्हारँ जीवण में जोयोड़ी अदभुत कळानिधि ही । आजकाल इण नाळ नै काम में नहीं लायोजँ, जिण सू बारलँ पासो लोव री नाळ मारंकर म्हे ऊपरली मंजल मे गया, जठँ खार्ण री मेज म्हारँ स्त्रागत में सजी-सजायो त्यार ही । भात-भात रा पदारयां मे रूस री चँरी, सेत्रा और फळा रा मुरब्बा, चटणियां, अर मोठी-नमकीन डबल-रोटियां, गोरकी री मनभात्रण, म्हारी भी भात्रण बणगी ही । 'समोन्नर' मे राखियोड़ी चाय और मनभात्रता फळा रा रस पाणी री ठोड़ । दही, दूध, माखण, पनीर, सूका मेवा, सँत, साप री छतरिया, आलू री पापड़िया और कासा (दळियो) भारतीय मैमानां रो विशेष भोजन पैली सू ही त्यार हो ।

ऊपरली मजल में अँक बडो कमरो साहित्यकारां रँ चितरामा सू च्यारू मेर सजियोडो हो । भारत रँ प्रेमचदजी रो साधारण-सो फोटू वतावता श्रीमती पेशकोत्रा म्हानँ कँयो कँ अमृतरायजी वादो तो करियो पण आ सीगात भेजी । प्रेमचद रो सोन्नियत-संघ में विशेष सनमान है,—कारण यँ जन-समस्यात्रा रा लेखक और जनवादी द्रष्टा गिणीजिया है । चतुर्वेदीजी इण बात रो कौल करियो कँ चोले कँनतास मार्यँ रंगीन चित्र सप्रहालय सातर अमृतरायजी नै कँयनँ भिजतासी । जनवादी साहित्यकारां मे तमिळ और तेलुगू रा सोन्नियत काति रा दिनां मे छपियोडा ट्रैक्ट और पुस्तिकात्रो अठँ घणा संभाळनँ रावियोडा है । हरेक मुलक री पोषियां, जिकी गोरकी रँ हाया मांयकर निकळी और जिणा रा अनुवाद गोरकी करवाया, अठँ सार-सभाळ सू रावियोड़ी है ।

सीय री वयत गोरकी-अंन री इण लागीनी सुगाया रँ सागँ म्हा गोरकी रँ साहित्यकार नै सीस नवायो ।

घणो हेत टूटण नै

—नरेंद्र भानावत—

मिनस रो हिरदो भांत-भात री भावनावा सूं रगियोडो है। उण मे रस भी है और रीस भी, लाट भी है और लडाई भी। समय पायनं सै भावनावां आपणो रूप और शक्ति प्रगट करे। सब सूं जवरो और रूपाळो रूप प्रेम-भावना रो है, सब रें सार्थ हेताळू घणण री मनोभावना रो है। हेत मे जादू भरियोड़ी ताकत छिपी रैसै। वा याकियोडा मना मे दौड़ण री हंस भर दे, निराशा री अघेरी गळियां मे आशा रो सूरज धमकाय दे। ससार रा सै प्राणी हेत री बूड सूं भीजियोडा है।

आपणी गृहस्थी रो काई रूप है? घणी-घणियाणी हेत री डोर सूं बधियोडा है। टावरां री किलकारी उण डोर नै और घणी रूपाळी अर मजबूत बणावै। मा-बाप, भाई-बहन सै मिलनं गृहस्थी री फुलवाडी नै गंरी सीचें और हरी-भरी बणावै। सगळीं रें हिरदं मे हेत रो रेळो वेंचें। हेत रें कारण हीज बेटी नै विदा देती वसत मा रो हिसडो भरीज आवै, हेत रें कारण हीज भाई रें परदेस जावनी वसत बहन री आंघियां भीलो ह्य जावै, हेत रें कारण हीज मरण होले री प्रतीक्षा मे बाग उढाय-उढाय नै पाक जावै—

हाहृदियां बे पक्कियां बाग उढाड उढाड।

हेत हीज सीता नै राम रें मार्ग वन मे भेजी और दशरथ नें तइका-तइपाय नै गुरग पुगयो। हेत री लो लागण रें कारण-हीज सीरा बँचल साथी—

मेरे लो गिरधर गोपाळ दुसरो न कोई।

और बबीर अमरता री अनुभूति करण सागिया—

हरि न भरे, हम बाहे को भरिहै।

प्रेम मे बा शक्ति छिपियोड़ी है जिकी मिनख नै देखता बणाय दे । नामी कबि मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम रो बखान करतों कैंयो—

मानुस पेम भये वैंकूठी । नाह त काह, छार अक मूठी ॥

प्रेम रै प्रभाज सुं ही मिनख दिव्य बणयो अन्यथा अक मूठी खाक सुं बत्ती उण री कीमत कोनी ।

रेती नै रूपो बणावण री ताकत प्रेम में है । प्रेम लोहै नै मोम बणाय दे । जिका तरतार सुं बस मे नी हुय सकै वं प्रेम री मार सुं बणवतीं बण जावै । प्रेम रै गूंद सुं सैं मिनख आपस में जुड जावै । प्रेम नी हुवैं तो सैं मिनख आपस में लड़ने कट-मरै । कौरव और पांडव प्रेम री कमी रै कारण आपस में लड़िया और खतम हुया । पृथ्वीराज और जयचंद री फूट भारत री दुर्गति रो कारण बणी ।

प्रेम री आ सारी महमा कद है ? जद प्रेम आपणी सीमा और मर्यादा मे रैवै ; वो धीरे-धीरे बधतो-बधतो हठ और स्थायी बणै । जिको प्रेम अकदम बधनै गैरो रूप ले लेवै उण रै उतरण रो खतरो उत्तो ही बध जावै । 'ढोला-मारू रा दूहा' में इण भाव रा घणा सटीक दूहा है—

ढूंगर केरा चाहळा ओछां केरा नेह ।

बहता बहइ जतासळा, शटक दिख्ताबइ छेह ॥

पहाडी नाळा अर ओछा पुरपा रो प्रेम बंजता तो घणी तेजी सुं बंनै पण तुरंत ही आप रो अंत दिताय दे । दूजो दूहो है—

प्रिय छोटा रा अहंता, जेहा काती मेह ।

आडवर अति दासबइ, आस न पूरइ तेह ॥

भागहीणां रा प्रियतम काती भास रै मेघ रै जिसा हुवैं जिका आडवर तो घणा दिख्तावै पण बरमनै आगा पूरी कोनी करै ।

आपणा बहेरा आप रै औषण रै अनुभव नै सोकोकिया और कहावनां मे गुणनै अमर बणाया है । अक कैंवत है—घणो हेत टूटण नै, मोटी आस पूटण नै, अर्थात् घणो प्रेम टूटण ग्वातर हुवैं । जिण मे सीमा नू घणो हेत हुवैं वो कद-न-कद विरोध मे बट्ट जावै । इण भाव नै हीन दरमावणआळो अक कैंवत अथेजी भाया मे है—
friendship that flames, goes out in a flash. मस्टत भाया री सोरोकि है—
अति मबेन कजेंदेन् । इण भाव नै प्रकट बरणआळी राजम्पानी भाया में कैंवत है—
घणी बरी पण गुण नी आनी ।

इण मोरोकिया सुं आपा नै प्रेम रो साबो मरम ममलणो चाहीवै । अंश सोगां री कमी कोनी बिबा हो करनै उण रो बेजा पावदो उटावै, पण आगर मे लो उण।

नं दुख हीज देखणा पड़ें । कई अन्नसर ताकणिया लोग भना मिनखा सू सबध जोड़नं उणा रा मिन वणं, माहो-माय घणो हेत वधानं, आपणो काम सारं और पछें मूठो फेर देखें तक कोनी । अंडा लोगा सू सबेत्त रंक्षण री जरुरत है । उणा री जालमाजी और नकली विवहार सू समाज में अविश्वास और अशांति बधे ।

हूं अंडी दो सुगाया नं जाणू हूं जकी आमं-सामं रंक्षती ही । दोना मे घणो हेत हो । अंक-दूजी नं देखिया वगैर उणां रं गळें पाणो तक नी उतरतो । बी सदा साथं रंक्षती । उठणो-बैठणो, खात्रणो-पीबणो, सीबणो-पिरोबणो सौ साथं-साथं चालतो । दोनु सहेलिया बंनो ज्यो रंक्षती । आपस मे आपो खोन वाता करती । अंक दिन छोटी सहेली वाता-ही-वातां मे बढी बंन नं आप रं घर रं गंगा-गाठा रो सगळो भेद बता दियो । रात पढिया दोनु रोजीनं री भांत कन-कनं सूती । रात रो पैलो पोर वाना मे वीतियो । पछें छोटी नं हो नीद आयगी पण बढी री अग्विया आमं तो वो चमचमाट करतो गंगो तिरतो हो । बा चुपकं-सी उठी, छोटी रं सिराणं सू कूबिया रो दूमको उठायो, पेटिया री सभाळो नियो और सगळो गंगो-गाठो फाड आप रं घरं जाय खूणं मे पढियोडं पिहारं रं भाय चुकाय दियो । परभास हुता-हुतां दोनु सहेलिया रं घणं हेत रो वो फळ ह्यो !

घणो हेत सोभ रं रूप मे बदळ जात्रं जद घणो दुसदायी वण जात्रं । धन रं प्रति घणो हेत मिनख नं जिनाकर वणाय देखें । दूरां री सपत्ति हुडपणं री कोसीमां मे उण नं जेळ री हज्रा छात्रणो पडें । पेटू मिनख नं मुफतियो राणो मिन जाधें तो वो दूम-दूसनं पेट नं पिटारी वणाय दं और मांदो पट-पड अकाळ-भोन रो भागीदार वणं । रम रं खातर घणो हेत भन्नर नं कबळ माय बाप सारं, रूप सू घणा रीतियोडं पनगा नं बळबळती लो मे बळणो पडें, सगीन री माधुरी मे डूबियोडं हिरणा नं तीर रो धातक वार सहणो पडें । फेर मिनख रो काई कणो ? वो तो सबद, रम, रूप, मय, परस आदि सगळां रो घणी है ।

हेत रो उचित उपयोग विवेक विगर बोनी बरीज सबं । विवेक नं छोड जिजा हेत करं बी सपळ बोनी ह्य सबं । काची उमर मे घणो हेत बरनिया धोली साधे, बी आप रं अमोन जीवण नं बरबाद कर देखें, आप रं जीवण-मरण सू दूर जाय पडें ।

अंक जवान छोरी ग्हारं पाडोसी रं छोरें बनें आया-जाया करतो । आवनी जद उण रं पगां मे थोब देखती, मुटब-मुटब घणी बाजां करती । बायं बरस राखी बाधनी । घरआळा दोना नं भाई-बंन ज्यो समजना । पण गात्र रा सोब उणा रं हेत रो मोटो अरथ सगळना और तरं-तरं ही बाजा वणावजा । खामता दोनु बदनाम हुषण लाविया । अं दोनु हेत री सीमा और भरजादा मे रंक्षता तो आ दशा बोनी बणती ।

मिनरा नै हर घात री अपिकता सूं वषणो चाहीजै । कौप्रत है—घण जायां बुळ-
 हाण, घण घूठां कण-हाण । घणी संतान हुप्रण सूं वंश री हाण हुवै और घण वरमण सूं
 फसल नै हाण पूगं । घणी संतान और घणी विरता कृणी काम री कोनी । प्रेम रो
 दोत्र भी अंडो हीज है । घणो लाठ-व्यार करण सूं टावर विगड जात्रै, घणा झूठा
 आश्रतासन देवण सूं राजनेता रो दोत्र हाय सूं निकळ जात्रै, घण पकण सूं आवा सड
 जात्रै, घणी रांघण सूं डोरी दूट जात्रै—घणी सांची दूटै । इणी भांत घणो हेत
 दुसमणी मोल सावै—घणो हेत सडाई रो मूळ ।

हेत सूं स्वारय भी जुड़णो चायीजै । स्वारय रो सिपाही हेत रो हद नै
 उळांप लै जद उण री मरजादा दूट जात्रै । हेत रं नाळै नै आप री हद में हीज वंशणो
 चायीजै ।

सह-अस्तित्व

—अन्नाराम मुदामा—

(१)

गाय, भैम, घोडा और गधा सात अणसंधी, अकदम ओपरी और अजाण घरती पर उद्युत-उचळ अठवेल करना, मस्ती मे चरता रोज देवा । सूघ तो सूघ री जागा, मुखी और सोरा किसान । स्वतन्त्रता-मुक्त री इण सुगध सू ही तो आ घरती आनदमयी और अयंभती वर्ण । अं ही नही, मोको पडघां मोर और साप, हिरण और बाघ जिमा जलमजात विरोधी वर्ण आप रं सभात नं बीमर'र सार्ग रं सकं ।* आश्रमा मे तो हमी मगळ-द्वि बारू' मास ही विराजमान ही । बाकई बा रूपद्वि मिनख री सगळा सू ऊची साधना-भूमि सू जलमी और जुडी ही, उण मे पशुवां री विशेषता को ही नी । 'फळाहारी बाबा आश्रम', 'मानस सेना आश्रम' और 'हरिजन हितकारी आश्रम' रा टगियोडा हसा साइनबोर्ड तो अवार भी महानगरां रं काळजं में, जई सिनेमाघर, दारू रा ठेका और मर्यादा री हत्या पर मचळता भीताबजार मई, नेता, बाबा और समाज-मुधारका री निजर नीचं कटं-कटं ही नही, पणा ही, चिलकं पण उणा रं मायली मेलबाई रा किनाड नही मुल तो ही ठीक है ।

सिध और बकरी बारू मास अक घाट पाणी पीवता, रामराज री इसी कळपना तो अवार किताबा री बाया मे ही जीवती सार्धं—'रहिह अक सग गत्र पचानन' और 'खग मृग सहज वयस विमराई'—इतिहास री इसो खुलो खजानो मिनख नं विवेक रं हाथा सू मूटणो चायीजे । पण आज रो मसीन-श्रेमी ओ दुपगो जिनावर उण अस्तित्व रं रीर-गागर नं सदेह री दृष्टि सू ही नही देखं पण कूडी और बगोल-वस्त्रित समझ उण नं बूरण मे लागियोझे है और आप रं अह री मंती, मूगली और मद सरिता नं

* बहलाने अकत वरान, अहि मयूर मृग बाध ।

जगत तपोवन सो बियो, दीरघ दाघ निदाघ ॥—बिहारी

मिनरा नै हर घात री अपिकता सूं वषणो पाहीजै । कंदत है—पण जायां कुळ-
 हाण, पण घूटां कण-हाण । घणी संतान हुषण सूं वरा री हाण हुत्रं और घणं वरगण सूं
 फसल नै हाण पूगं । घणी संतान और घणी विरता किणी काम री कोनी । प्रेम रो
 दोत्र भी अंडो हीज है । पणो साह-प्यार करण सूं टावर विगड़ जावै, घणा झूटा
 आरतान देत्रण सूं राजनेता रो दोत्र हाथ सूं निकळ जावै, घणं पकण सूं आंवा सड़
 जावै, घणी सांचण सूं खोरी दूट जावै—घणी सांची दूट । इणी भांत घणो हेत
 दुसमणी मोस सावै—घणो हेत सड़ाई रो मूळ ।

हेत सूं स्वारथ नी जुड़णो चायीजै । स्वारथ रो सिपाही हेत री हद नं
 उळांघ लै जद उण री मरजादा दूट जावै । हेत रं नाळें नै आप रो हद में हीत्र वंघणो
 चायीजै ।

दुब्रं, वें समर्थ है तो जानै गुण वनै; पण बळ्ळें मिरकें ही कठे। फेर तो घरनी री आबादी री समस्या गुळ्ळी ही पडो है। भगवान नें आ ही माळा फेरो कं घणवरा समर्थ और सीग ऊगियोडा चांद पर जानै परा और गरीब सपूता री जप्तानी मुक्त हुय'र सोरा मास लेवै।

(२)

सह-अस्तित्व सू म्हारो मुतलब अेक पर-धरमी जात दूमरी सागें, अेक काळो अेक गोरें सागें, अेक आदिवासी अेक नूबं सागें, अेक साम्यवादी अेक गैर-साम्यवादी सागें साव्रळ घास कर माण सू अेक-सैं हक-हकूका री छाया मे वसै, साथं सू साथो मिला'र चाल मकं। सोषण री बात है कं घरती पर आयोडो आदमी घरती छोड'र कठे जानै। कूबो-खाड करं का फासी खा'र मरें? घरती पर रक्षण नें दो पात्रडा जाग घातं का नी? और बा सोरें सास कोई देखणो को चातै नी, सह-अस्तित्व रा कोरा प्रस्ताव पास करपा तो की वटं नही।

लका ससार रें नकसं मे अंगूठो टिकं जितो देश है, वो आयें दिन भारतीया नें गोदाम सू विक्री री बोरपा निकाल्लें ज्यो निकाल दे। बोरपा तो बापडी निर्जीव है, अठे तो सजोव रो हाल ही बेहाल है। बर्मा काल ताई बापणें घर रो ही अेक सूबो हो, आज उण भारतीया नें, कोई हरथं भेत सू गघा नें काडें जिया, काड दिया। धन-माल जबत, वो पटपो रस्तो, कूकीजं जितो कूको कठे ही। किसीक बात है। जमंगी यहूदिया नें, अर अगरेजा दक्षिणी अफ्रीका मे इमी राफडलीला घाली कं जाणें घरती माथं गोरा काळा रा गाव्र ही न्यारो वसता हुवें। कबीर रें शब्दा मे* जाणें गोरा रें आत्मण रो रस्तो ही न्यारो हुवें। काळा री खाल वासतो हुवें और गोरा कोई सोनै री मीगणी करता हुवें! नीपो अमरीकन नें ऊभो ही को सुत्रावै नी, आतैं-नीं कठे ही धिया पडगी और बोड लाग्यो तो किसीक हुनी? आयी तो ही छाध नै, वणगी धिरियाणी! इगलंड रो रक्षा खातर लडो, कटो, भररो हिंदुस्तानी, भोज लूटो और मजा करो अगरेज! साव्रण नें सूर कूटीअण नें पाटा! जोर धीगणो और सोघापणो किसीक? ससार रें इतिहास मे कठे मिल एसो अनूठो उदाहरण? ओ सह-अस्तित्व जिता दिन निर्भे?

पैला कूबें जिकें री गाय, गाय हुबो भला ही विण री ही। अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, बनावडा, अमरीका, जटैई पोल साथी, घग बँटपा। अगरेज उणां रा दूजा भाईवध। बठे रें मूळवास्या नें कूट-पीट'र काड दिया, रक्षण दिया तो डागरां सू ही माड़ा कर परोटपा और अजं उण साणण ही साठी सू बियाई पराव्रं जाणें वें सैं अेवड रो भेशं

* जे बाम्हण लू बामणी जाया, आन बाट काहे नटिं आया।
जे सुरक लू सुरकणी जाया, भीतर खनना क्यु न करताया।

पोह-बीह-मी मायी और मा है दुध-मी बिदोष माने । इन से मुक्त कारण, उन से मायना विविधोही है जोरें मुक्त वर और भायना उन से भायी उपार वर, भायी हवा वर । हृदि उन से देवीविभव से बाध वर जादः और मायने से प्रेम पर कम । जान उन से देवीरोज वर पना और गरीब, अगहाय से दुली मुक्त पर कम । आमी पेतना उन से अनागतः मेधा से जोरें तावभाष, और प्रोमेडा से बेदः । इन मानर ही तो अंत वरें दूरे वरें मायें, अंत वरें दूरे वरें मायें, अंत राष्ट्र दूरे राष्ट्र मायें, अंत पार्टी दूरी पार्टी मायें, अंत वाद (गार्हितिक हउो पासे राजनीति) दूररें वाद मायें सावळ गुणवार्द मू पिहना भोगा हुयना । पिके है, भरता-दुयना, पन साथे से मात्र से वार्द भरोगे, जठे ही घोटे-नै हवायें से भार वरयो, मुद से रोटी नै गिहनाय कम साप्यो (Interest clash) तो गळू गटें भंग मारता गाळू ही तिसी ? आ समरना मनिन से नही, इन आयें जुग से अर उन से त्रनम्ये वारो मानगे से है । से देगे, मं भोगे, माय रा माय दूने, कोसीत कम रोडो पनो ही वरें । पनो दाया जायो वीगडो मना ही, गुपरण नै कठे ?

जुग से यात चालगी जद कंगो पठे, जुग तो जुग ही है; जितो सराव्रो पोटो, जितो धुपकारो मातो कम, वस, कतार इती ही है कं है आधो, बाकी वमत्कार नै नमस्कार तो करणो ही पठे । सिनेमा से सागं यदुपा जिते तो घर वस्योडो, वारं नोकळपा पछे माडी-सी छणगी, तलाक, पर इतो साकडो हुयग्यो कं दोनू दोरा-दोरा ही को मातें नी पण मीको पडघां भापण तो सह-अस्तित्त रा ही छाटसी । टैम ही संवचर से है अवार ।

इन जुग से आदमी जद चाद पर आप-रा गोरा, गधहीण चरणारत्नद राख दिया और बठे बसण से वात करण लागग्यो तो आ वात अचभे से तो काई ठा है क नहीं पण आशका से जरूर है । हू सोचू, जिको आदमी अठे सिचळो को वस सकें नी वो चाद पर जात्रतो ही सुधो देखता वण जासी, आ कम ही जचें; कम काई, डोळियो देखतां तो जवण नै जाय्यां ही कठे ? महल से थोडी पर बैठघो कागलो हस हुयो आज ताई तो किण ही को सुण्यो नी, आगं ठाकुरजी जाणें । बठे पूगणआळा से हुसी तो कोई अमरीकी सिरदार ही, का कोई रूसी, का कोई अगरेज मावडी से जायो ही । घरती पर, अंत-दूजे नै देख्या तो जिका से आख्या से लूण वरसें और बठे पण घरता ही उणां रें नैणा से नेहू से नदी ऊमड पडसी, आ किया वणे ? बठे भी तो अठली कमाई रा पुद्गळ ही काम करसी । अमरीका आप से वाड वचासी और रूस आप से । अगरेज रा वात्रनी पण तो इन कामा से घरती पर नामी रैयोडा है । वाड वधाणी सावळ तावे नी आयी तो दोना में लडाई रा लाडू तो वाट ही देसी । कंभण से मुतलब, बठे गया पछे ऊगियोडा सीग और वधसी और बं आपस से अळूमया विना को रेंसे नी । फेर का तो ऊपर फेव्ये काकरे-सा से पाछा ही नीचे, और का सारें साथ रा राजी-खुसी रा समचार आत्रणा ही ओखा, बठे ही पापो पाप समोसमा । राम करे इती नही

दोपदी रं चीर-सी सांघटीजं ही नही । लिप्सा री साथ समझ री बाढ़ मे लाग्यां पर्ये सारं उवरं अणसमझ री राख, बा नागाई री पून मे भलां ही धाप'र उदावो । वातां घरम-करम री । इण सु काई ? लाभ तो भाव में है और वो घर में ही बीगढग्यो । पस्तून कैंके, स्वतंत्र हुयग्या, अबं म्हांने ही म्हांरी पून मे सोरो सास लेत्रण दो । आ गुणं जद भाईजी चमकं । दाडियां मे भळें धाडियां । इण मे अचूभे री काई वात ? अं तो हुमी ही, भीन्न ही इमी लागियोडी है । फिटोळा रं केंद्रणं सू अेकर बगात (पूर्वो) नं ही मसाणियो वंराग ऊपड़घो, मजब रा भगवां पंर'र दावोजी वण बंठघो । आप री घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फंख्या । ठडें माघं सू सोच्या ही सारो को छूटघो नी, चौईस-पच्चीस सालां री खायो पीयो सो नीबळग्यो । नीबळग्यो जिको तो नीबळग्यो, घरआळो और उजाढ बंठघो । समझं तो है लोग पण कूट खायां पर्ये ।

धीण कूटं तिब्वतिया नं, उणां रं ही देश मे । हुवाकू ही आय-आयनं हिदुस्तान में बसग्या । आ ही कोई बात हुयो ? लवा, वर्मा, कांगो, बेनिया, युगांडा, स्पेन, पुर्तगाल मगळां नं हिदुस्तान मोने री बिछी दीसं, पांख्यां खुमगी तोई सारो को छोडें नी । पण डूजां नं दोष ही काई देवां, घरआळा ही को समझं नी, सिक्खस्तान, जाटस्तान, काई टा काई-काई तान छेड़ें । आसाम अेक रा तीन हुयग्या, पजाब अेक रा दो, आंध्र सभाल करण नं तदार । प्रानां रं पून जनभं । बडो तमामो है, नीबडगी तो कुण जाणं विमारु ? रंवाह्या और विदेशी कूटनीतिज्ञां मुफ्त री जैर देवण री हुवानां ग्यागी-ग्यारी खोन राखी है; गह-अस्तिरव नं बंमार करण खातर । तान तादी, तमसा गांड़ी । देवां, कियां ताबं आबं ।

आस्ट्रेलिया मे सिखा अगरेजां रं कोई बस ही को गबं नी, जाणं उण नं दिभी अगरेजणी ही जण्यो हुवे । गह-अस्तिरव रं अस्तिरव मे विजोबलो करण री उट्टो पाट छेकड़ घाल्यो बठे नू ? घणखरो पस्विम रं गांध्याज्यशादी देवां नू । उरविहंजवादी देवां री अळगो रगी घालियोडो है बं अलदी-सीब गूटां जद पंर पाल्यो ही काई ? कोरिया दो, बियतनाम दो, भारत दो-नीन, जमंती दो और अई ताई छेड़िन दो । बसावणो ताबं नही आबं तो विचाळें भीर घाल र ही नही । बिदावणो जिबं री काई नांभ ? दक्षिण री गूठना और बी ताबं नी आबं तो धान री सड्ड लो बिदाव ही रं । पुट घालो और राज बतो — ओ छोटी और मूट मज अदरेजा घरनी नै बिदेव कर नू दिव्यो । उणां री गुण कियां भूलीबं ? पूजा हुवणी बादीबं उण री लो । ताबं नही आबं बा वान ग्यारी है । उदारवादिता लु बगुंवे कुटुंबकम् री गव बरदिता लो अकल-बापरा अेकादिया हा । बी घरनी रं बंभर नं सभसे ही काई हा ? उणां री टा रनिहास ही बरळ दिवो । घर री राकरा न घाट रा । इण अंतर हो इण रं सभ से बदेई मुख को छिदो नी पक सुबो री बान नै मक्या परं पाट दिवो अलो ? मुख देवता धिरगी हो दीख्यो । बादीहा लो बादीहा लो रं सभसे बदे-न-बदे ।

दुबं । ऊन कागतां जुग भीतया, तोई पाप को भापी नी । नागाई चारो ही आमरो ।
 संयुक्त-राष्ट्र-नाय, विश्व-व्याप्य-वस्थान-नास्था त्रिणी दीगत री गूठरी संपादा सोन
 लोभी-भोड़ी घातां दमके, सातां रगियां रो परमाद प्रोवेँहा री प्रतिमा रं भोग
 सागावं । विश्वधर्म-सम्मेलन, नाटो, लोटी ओर कुग जार्ण कित्ता-कित्ता कुड़वा रवं ।
 सह-प्रतिस्तर और सारं रंघोईं भोगां में स्वस्थ और तबद्ध वणाग्रण रा बिन पास करं,
 योग्यापन ह्यार करं, मिगन भेजं, मुसकां नं क्वाप नं क्षुगना-टोरी घाटं और घर में
 भूषाजी मा रं जायी त्रिसो फिरं । सद-विचार रो डोरो ही डोल पर हूईं त्रिसो पोल
 पड़ी है । बंठा-बंठा होळी-नीक नीचसो यागन दनो बंघो तिततरावं कं मरं जिजा तो
 मरं, धम्मीइ ओर मोर्त । परं उणां नं सोग-दितारं रा होळी-सोक बुचकारं न्यारा
 ही—बघों, लागी तो को नी ? आप भूमं आंतहृषा ताई, पण दूजां नं समझावं 'दमा
 पाळो' । आ राजनीति है, साप और स्नेह रं तुळी लयात्रां । कागजी काम पक्को हुबणो
 चायीजं; जमानं री मांग है, आपो जुग आ हो पात्रं । जयानो आपो, हन्ना बोळी,
 जोड़ी मिली रे जोगिया ! मांग'र राबो ।

पाकिस्तान काल ताईं मिनत री पुछ-सो कठे ही को दीततो ही नी । आज
 भारत मे उण भारत रा बाड़ा कर'र प्रजा सागण पण घजा नूक्षी धारण कर ली । साथे
 रंघतां पीढयां गळगी; काका, बाबा, केय-कैय'र कित्ती ही सदियां गुजार दी, जवार इसा
 काईं पुर वधया हा कं साथे उठणो-बंसणो मुसकल हुयग्यो । धरम सतरं मे है, सह-
 अस्तित्व को निर्भेनी—अं आग-वगाळ सुर कठे मूं निकळया, जिकां करोडू मिनतां री
 समझ री ढिगली मे चिणख नाख दी और आप ओग सू परिया तमासो देखण नं दूर
 जा बंठया । सकीर्णता इयांईं कम को ही नी, धरम रं तांत्र पर थोर साकडी हुयगी;
 नहीं, कर दी । कोई बात नी, चारो अस्तित्व रंघणो चाहीजं, पण अंकर कोई पूछं तो
 सरी उणां नं कं अवं सोरा हो का पैला हा ? दो जुगां सू घणा हुयग्या, आज्ञादी री
 मोटियार ज्ञान लुगाईं अजं चुनात्र रं टाबर रो मुडो को देख्यो नी, ये बात करो सोराई
 री । चालो, वाडिया मिलग्या, पण उणां सू पाप कठे ? भळं वधाळ चावं, लड़ परा'र,
 कूक परा'र—जियां ही तावं आवं । गुड दे नहीं तो छोरी हुय जासू—आ कित्ताक दिन
 निर्भे ? काचर रा बीज जागां-जागां लुक्पा ऊभा थापी देनं, वान मे समझात्रं कं अस्व-
 शस्त्र म्हे देसां, साप सगाग्रण रो सगळो सामान म्हारं कनं है, परसो ही को लेत्रा नी ।
 गुगा रे भूगा ! गात्र मत बाळो, भलो चेतायो । बस, गुगसाड नं इत्तो ही चायीजं ।
 म्हारी अंक पूटं तो पूटो भला ही, सामल री दोनू नहीं रंघणी चाहीजं । रोटी, कपडो
 और रंघणनं जागा, इणा री चिंता नहीं, शस्त्र-प्राप्ती भेळा करो; भगद, उधार और
 मांग'र कियां ही । इसी समझ सोधी ही को साथे नी ।

आजें दिन भारतीयां नं ही नहीं, अंगियावांसिया नं नी कोई-न-कोई करचुणं में देय'र
 काद दे, कोई कीं करं तो करो देला । समझात्रं बो फरद और पड़े । भोहा घणा और
 धडी साकडी । आगला ही पींचीजं, तोई सरकार वापडी बसात्रं ही । पण समरया

दोपदी रं चीर-भी मावटीजं ही नही । लिप्पा री माय रामन री बाड मे लागीं पदं
 पारं ठबरं अणममल री राग, बा नागाई री पून मे भला ही घाप'र उदाओ । बाता
 परम-वरम री । हण मू बाई ? नाम तो भाव मे है और जो घर मे ही बीसहयो ।
 पचून बंभे, मन्नन ह्यगया, अबे म्हाते ही म्हांरी पून मे सोरो माम लेखा दो । अ
 गुण जद भाईजी समरं । बाटिया मे भळ बाटिया । हण मे अधुभे री बाई वान ? अ
 तो हुमी ही, नीत्र ही ह्नी मागियोही है । किटोळा रं बंभण मू अकर बगल (पूडा)
 न ही मगाणियो बेराम काटयो, मजब न भगवां पैर'र बादोजी वन बंठयो । अद री
 घर बळण मागियो जद बेको ह्यो, पूर फेंचया । ठई भायें मू गोव्या ही लागे को
 छुटयो भी, खोईग-यच्छीम मानां री गालो पोयो भी नीबळयो । नीबळयो जिओ तो
 नीबळयो, घरआळो और उखाड बंठयो । समसं तो है लोण दण कुट ग्यां पं ।

चीण वृष्टि निरवधियां मे, उणां रं ही देण मे । ह्नाए ही काए-काए निरवधियां
 मे वगाया । आ ही बोई काग ह्यो ? सवा, दमा, बांगे बेनिटा ह्नाए मेर ह्नाए
 मगळा मे हिह्नाए गोन री बिरी हीम, पाण्या कुन्नी कोई मगो को कोई भी ।
 पण ह्ना मे दोप ही बाई देखा, घरआळा ही को कचई ही निरवधियां वगाए
 बाई टा बाई-बाई तान सेई । आगत अक न मीन ह्नाए उख ह संव न ही वान
 मन्नन वरण मे ल्याए । प्राता रं पून जगम । एते मन्ना है म्हांरी को कुन न ही
 बिगाए ? ईलाएयां और निदेही कुन्नीतिजा ह्युए न को ईर देण ही ह्ना मे मगो
 ग्यारी लोप गामी है; म्हा-प्रवियाए मे म्हाए वरक मन्ना न न ही वरक मन्ना ही
 देना, बियां तावे आरं ।

हुई । उस काली नुस की-भया, मोई धान को खाये नी । गन्धर्व भांगे ही प्रणयो ।
 सङ्घ-साधु-सर्व, विद्वत्-सङ्घ-सङ्घ-साधु भावा विगो दोभन मे सुदो गन्धर्वो मोन
 भावी-भोही काग सगवे, गन्धर्व-सर्वो मे वगधर दोदोहा मे सविदा र मोन
 सगवे । विद्वत्-सर्व-सर्व-सर्व, गन्धर्वो मोरो और सुन सर्व विगो-विगो सुदका र्थ ।
 गन्धर्व-सर्व और गन्धर्वो मोरो मे वगधर और गन्धर्व-सर्व-सर्व रा विन पम करे,
 धोपगन्धर्व सगवे कर्त विगो सर्व, भुवका मं इदम मे सुदगा-सर्वो वार्त और पर मे
 भुवको मा र खाये विगो विरे । गन्धर्व-सर्व मे वगधे हो दोन पर हुई विगो दोन
 परी है । वेग-सर्वो होई-सर्वो भीवयो वगधर हगो मेरो विगो-सर्व के मरे विगो हो
 मरे, पगधीर और कोन । परे उगा मे मोन-विगो मे होई-सर्वो भुवकार न्याता
 ही—वयो, गन्धर्वो तो वो भी ? धान भूमि प्रगदधरा ताई, वन दूखा मे सगधर्व वना
 पायो । आ राखनीर है, गन्धर्व और गन्धर्व र सुदो सगधर्व । कागधी काम पायो हुवनी
 चाधीर, जमाने री गग है, भायो नुस भा ही गधर्व । जमानो भायो, हवा बोली,
 ओही भिमी रे ओगिया । माकोर गधर्वो ।

पाकिस्तान काग ताई मिनग री पूरा-गो बडे ही को दीगतो हो नी । धार
 भारत मे उन भारत रा बाहा कर'र प्रजा गगण पण पना नुदी पारण कर सी । सर्व
 र'वता पीउपा गळणी, कावा, वावा, वेप-कैप'र बिती ही सदिया गुजार ही, अवार इमा
 काई शुर गधया हा के मापे उठगो-सर्वो मुसकम ह्यग्यो । धरम सतर मे है, सह-
 अतिरस को निर्भनी—अं भाग-सगळ गुर कठे मू निकळपा, जिदा करो, मितयो री
 समझ री दिगती मे चिगर नात दी और आप ओग मू परिया तमासो देवन मे दूर
 जा घंठपा । सकीणता हपाई कम को ही नी, धरम रे नात्र पर और सांकड़ी हुयगी;
 नही, पर थी । कोई बात नी, धारो अस्तित्व र'वणो चाहीजे, पण अंतर कोई पूछे तो
 सरी उगा मे के अवे सोरा हो का पैला हा ? दो जुगा मू घणा हुयग्या, आजारी नी
 मोटियार जवान सुगाई अजे बुतात्र रे टावर रो मुडो को देख्यो नी, ये बात करो सोराई
 रो । चालो, वाडिया मिलग्या, पण उगा मू पाप कठे ? भळो वधाळ चाहे, लड परा'र,
 कूक परा'र—जिया ही तावे आर्त । गुड दे नही तो छोरो हुय जाम्—आ कित्ताक दिन
 निर्भ ? काचर रा बीज जागा-जागा सुवया ऊभा घायी देवे, वान मे समझावे के अस्त्र-
 शस्त्र भेहे देसा, साम सगधण रो सगळो सामान म्हारे कने है, पईसो ही को लेना नी ।
 गुंगा रे गुगा ! गांभ मत बाळी, भलो चेतायो । वस, मूगसाठ नै इत्तो ही चाधीर ।
 म्हारी अंक पूटे तो फूटो भला ही, सामले री दोनू नही र'वणी चाहीजे । रोटी, कपडो
 और र'वणने जागा, हणा री चिता नही, शस्त्र-पाती भेळा करो, नगद, उघार और
 मांग'र कियो ही । इसी समझ सोपी ही को साधे नी ।

आपे दिन भारतीयो नै हो नही, अतिवासासियो नै भी कोई-न-कोई करचुण मे देप'र
 काठ दे, कोई कीं करे तो करो देता । समझावे वो कस्तू और पड़े । मोडा घणा और
 मदी सांकड़ी । आगला ही पीचीजे, तोई सरकार वापसी वसावे ही । पण सधया

परी रं बीर-सी सांगटोजें ही नही । लिप्सा री साप समझ री बाइ मे लाग्यां पछें
 रं उवरें अणसमझ री दास, बा नागाई री पून मे भलां ही घाप'र उडाओ । वाता
 रम-करम री । इण सूं काई ? लाभ तो भाद्र में है और वो घर मे ही वीगढग्यो ।
 स्तून बंखें, रत्नतंत्र हुयग्या, अबं म्हांन ही म्हांरी पून में सोरो सास लेत्रण दो । आ
 पुण जद भाईजी चमकें । बाहियां मे भळें वाडियां । इण मे अचूंभे री काई वात ? अ
 ही हुमी ही, नीत्र ही हुमी लागियोडी है । फिटोळा रें केंत्रणें सूं अेकर बंगाल (पूर्वी)
 में ही मसागियो बेराग ऊपट्ठपो, मजब रा भगव्रां वीर'र बाबोजी वण बँठघो । आप री
 घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फंक्पा । ठडें मापें सूं सोच्या ही सारो को
 छूटपो नी, चौईन-यच्चोम सातां री सापो-पीयो सो नीकळग्यो । नीकळग्यो जिको तो
 नीकळग्यो, घरआळो और उजाड बँठघो । समझें तो है लोग पण कूट सायां पछें ।

धीण बूटें तिन्वतिया नें, उणां रं ही देश मे । हुजारू ही आय-आयनं हिदुस्तान
 मे वसग्या । आ ही चौई वात हुयी ? लवा, बर्मा, कागो, केनिया, युगाडा, स्पेन, पुर्तगाल
 गगळां रं हिदुस्तान मोने री बिडी दीसं, पाख्यां खुसगी तोई सारो को छोडें नी ।
 पण इजां नें दोप ही काई देसां, घरआळा ही को समझें नी, तिन्वस्तान, जाटस्तान,
 काई टा काई-काई तान छेडें । आनाम अेक रा तीन हुयग्या, पजाब अेक रा दो, आंध्र
 सभान वरण नें रपार । प्रातां रं पून जयमें । वडो तमासो है, नीत्रइसी तो कुण जाणें
 बिमाह ? ईमाहया और बिदेकी बूटनीतिकां मुपत री जंर देत्रण री हुकानां ग्यारी-
 ग्यारी घोव रागी है; गह-अहिपत्र नें बंमार करण खातर । तान ताबी, समझ साकडी ।
 देसां, बिचां तावें बाहें ।

आगुंलिया मे गिद्रा अगरेजां रं काई वस ही को सकें नी, जानें उण नें किणी
 अगरेजणी ही जण्यो हूहें । गह-अहिपत्र रं अहिपत्र मे विजोक्लो करण री उळटो पाठ
 ऐबइ थाप्यो बटै गू ? घणतरो पश्चिम रं साम्राज्यवादी देसां सूं । उपनिवेशवादी
 देसां को अळटो हुगो घालियोडी है बं अलदी-सीक मुळसं जद देर पाल्यो ही काई ?
 बोर्निया दो, बियननाम दो, भारत दो-नीन, जर्मनी दो और अठे ताई कैं, बलिन दो ।
 बलाबलो तावें मही बाहें तो विचारें भीन पाल र ही मही । विगाइणो जिकें रो काई
 नाह ? दजियें रा मुटला और बी तावें नी बाहें तो घान रो मघाड तो विगाड ही दें ।
 पुट घानो और रात्र बरो — ओ सोरो और मूळ मत्र अगरेजा घरणी नें विशेष रूप सूं
 दिवो । उणां री कुण बिचां झुनीजें ? पूजा हूबणी चादीजें उणा री तो । तावें नही
 बाहें बा बाव ग्यारी है । उदारबलिपत्रा तु बमुधेंव कुटुंबकम्' री राग बरगिया तो
 अबन-आरा अेवागिया हा । बी घरणी रं बंमह नें खपलें ही काई हा ? उणां री तो
 रो'हाह हो बरुट दिवो । घर रा राबरा न घाट न । इण खातर ही उणां रं रात्र में
 बरीं सुत्र को दिवो नी एक मुबो री बान नें मर्या पछें ताळ बिठीव रखी ?
 पूज देवण विरगो हो दीसो । बापोहा तो बाटला ही पवें, मोहा-बंसा बरं-
 न-बरे ।

आप की भाषा की भाग इसी पायी के लोगों परआळी ठढाई की उळ्डी करणी सुरू कर दी । जुगां गूं दगूं-यीसूं भाषां जिके उपमहाद्वीप में तीजणी-सी पूठरी सह-अस्तित्व की आस्था रो इमरत पी'र हसती-मुळकती ही, अगरेजी अकेली उणां रो सार्ग बसणो मुसकल कर दियो । गर्ब रो पूछ पकड़ायो तो इसो के मूड पर लातां कित्ती ही पड़ो, सोर सास छोडां जद झाल्यो ही काई ? आप रे स्तार्थ सातर आदमी रो 'स्व' कित्तो साकडो हुन्न ! 'स्व' जित्तो ही सत्रीणं, सह-अस्तित्व नं बित्तो ही डर । 'स्व' रो बिस्तार सह-अस्तित्व रो आधार । हू केंऊ जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचै जिकी ठीक—वस, अे विचार ही पनपणा चायीजै, घाकी नहीं । सह-अस्तित्व नं फेर आसरो कठे ? अबार आ ही अन्नस्था नागी हुय'र धरती पर नाच घालै; देखां, किया पार पडै ? दत्राई जद ताई उळ्डी, वेमारी बधसी ही ।

तो, धरती छेकड़ चात्रे काई ? विभिन्न वर्गों रो सह-अस्तित्व, उणां रो सार्ग विकास-वैभन्न, और साची पूछो तो इण चात्र और सदभात्र सूं ही उण विषाता-बागवान आप की कळा रो बिस्तार करघो है—ओ 'विश्व-बन' । पण जद सगळां सूं स्याणो, समझदार मिनख-विरत्रो आप जिसै वर्ग सार्थ को रैय सकै नी, उण वेळा आह और उसासां की पून इण वाग सूं अेक दुरगंध लेय'र ऊपर उठती सरमात्रे, बाग की सार्थकता इण मे कठे ? मिनख रो मोल ही दूजा नै सुख पूगावण मे है, आप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है । The glory of human life is to serve others and not to be served—सात्र जचती है । कोसीस तो आ हुन्नणी चायीजै के देवता मिनख की धरती पर उतरण नै मूडो घोन्नै, और हुन्नै आ है के मिनखां नं देख'र डागरा ई चमकै । फेर तो बाजो किया पार पडै ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं मिनख रै इसै पारमाथिक प्रयास की अेक दिव्य गध जद-कद उठ'र अनत मे फैलै जणा ही सह-अस्तित्व की वाजरी रै माननी वैभन्न रा सिद्धा नीकळै; गंधव्रती धरा रो अर्थ फेर ही समझ में आत्रे और फेर ही हुन्नै मिनख रो मोल ।

जीवन रो सूरज, दुख रा बादल

—दीनदयाल ओझा—

सामनन रें बादलां ज्यू
कद-कद
जीवन रें सूरज मायें
दुख री घटावा बावें ।

मदमाती घटावां
आप रें सागें
घणै हेंत स
बाळें अधिदारें में
मुळाय लावें,
गळें लगावें ।

पण समें रें बावरें रो
हापेटो लागै जद
जीवन रो सूरज तो
हेमाळें ज्यू
धिर भाव स
अद्विय उभो लागै ।

दुला रा बादलिया
लाव मीबी किया
करें रें सुमा ज्यू
बट-बा-बटें भावें

आप की धरती की धरती वाली वाली के मोला परावर्ती दर्शाई की उज्ज्वली करती कर
कर दो । बुद्धा मू दृष्ट-वीर्य धरती जिसे 'गणतन्त्र' में मोरनी-मो बुद्धी गृह-अभिज्ञ
की आध्या सो इतरन पीर हृदयी-मुञ्जको ही, अदोको श्रेणी जगो सो कार्य बनते
मुमकर कर दिने । धरती सो पूरा गणतन्त्र तो इगो के मूँ पर गागा कियो ही परी,
गोरे गाग सोदा अद साफो ही काई ? आा ई लार्थ गणतन्त्र माननी सो 'रद' कियो
गागको हृषे । 'गद' कियो ही गरीने, गृह-अभिज्ञ ने कियो ही कर । 'गद' सो विस्तार
गृह-अभिज्ञ सो आधार । हृ केंद्र त्रिरी गाव, गृहारी वाली मोर्षे त्रिरी टीक—बग,
अ विचार ही पनपना भावीने, बाही गरी । गृह-अभिज्ञ ने केर भागरो बडे ? अवार
भा ही अवरया गागी हृषे'र धरती पर गाव पाने, देना, कियो पार पडे ? दर्शाई अद
ताई उज्ज्वी, येनारी कपनी ही ।

तो, धरती देकर पावे काई ? विविध वर्गो सो गृह-अभिज्ञ, उना सो साँवे
विभाग-व्यंभव, और सापी पूरो तो इण पाव और सदभाव मू ही उन रिपाता-
बागवान आप की कृष्णो सो विस्तार करणे है—ओ 'विश्व-धन' । पण अद सगळा मूं
ग्याणो, समझदार मिनत-विरयो आप जिते वणे गार्थ की रैव गके नी, उन बेडा अह
और असाया की पून इण वाव मूं अंक दुरगध लेप'र ऊपर उठती सरमार, बाव की
सायंकता इण मे कटे ? मिनत सो मोल ही दूजा ने गुण पूगावण में है, आप सो वेड तो
कागला-कुत्ता ही भरै है । The glory of human life is to serve others and
not to be served—गाव जचती है । कोमोस तो आ हुतनी चापीजे कं देवता
मिनत की धरती पर उतरण ने मूढो धोत्रे, और हृषे आ है कं मिनतां ने देख'र बापरा
है धमके । फेर तो बाजो कियो पार पडे ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती मू मिनत रं
हरी पारमायिक प्रयास की अंक दिव्य गध अद-कद उठ'र अनत में फेले जणा ही
मह-अस्तित्व की बाजरी रं माननी वंभव रा सिट्टा नीकळे, गधनती धरा सो अर्थ फेर
ही समझ मे आसं और फेर ही हुने मिनत सो मोल ।

जीवन रो सूरज, दुख रा वादल

—दीनदयाल ओझा—

सात्रण रं बादळां ज्यू
बदे-बदे
जीवन रं सूरज माये
दुख री घटावा आवे ।

मदमाती घटावा
आप रं सागे
घणे हेत मू
बाळे अधियारं नै
मुळाय लागे,
गळे लगावे ।

पण तामे रं बापरं रो
हापेटो लागे जद
जीवन रो सूरज तो
हेमाळे ज्यू
धिर भाव मू
अहिन ठमो लागे ।

दुखा रा बादळिया
नाद नीची बिया
बई रं पृमा ज्यू
बटे-रा-बटेई माये

आप री भाषा री भांग इती पायी कं लोगां परआळी ठंडाई री उळ्ठी करणी सक
कर दी । जुगां सू दगूं-वीगूं भाषां जिकें उपमहाद्वीप मे तीजणी-सी पूठरी सह-अस्तित्व
री आस्था रो हमरत पी'र हंसती-मुळरुती ही, अगरेजी अंकली उणां रो सामें बसणो
मुगकल कर दियो । गर्ब रो पूछ पकड़ायो तो हमो कं मूठें पर लाता कित्तो ही पड़ो,
सीरें सांस छोटा जद झाल्यो ही काई ? आप रें स्त्रार्थ सातर आदमी रो 'स्त्र' कित्तो
साकडो हुन्न ! 'स्त्र' जित्तो ही संकीर्ण, सह-अस्तित्व नें वित्तो ही डर । 'स्त्र' रो विस्तार
सह-अस्तित्व रो आधार । हू कंकु जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचें जिकी ठीक—बस,
अं विचार ही पनपणा चायीजें, बाकी नही । सह-अस्तित्व नें फेर आसरो कठें ? अबार
आ ही अन्नस्था नागी हुय'र धरती पर नाच पालें; देखां, किया पार पडें ? दत्ताई जद
साई उळ्ठी, वेमारी बधसी ही ।

तो, धरती छेकड चान्न काई ? विनिघ चर्गा रो सह-अस्तित्व, उणां रो सामें
विकास-वैभन्न, और साचो पूछो तो इण चान्न और सदभान्न सू ही उण विघाता-
बागवान आप री कळा रो विस्तार करघो है—ओ 'विश्व-वन' । पण जद सगळां सू
स्याणो, समझदार मिनख-विरन्नो आप जितें वर्ग सार्थ को रेंय सके नी, उण वेळा आह
और उसासा री पून इण बाग सूं अेक दुरगध लेय'र ऊपर उठती सरमानें, बाग री
सार्थकता इण मे कठें ? मिनख रो मोल ही दूजा नें सुख पूगावण मे है, आप रो पेट तो
कागला-कुत्ता ही भरें है । *The glory of human life is to serve others and
not to be served*—सान्न जचती है । कोसीस तो आ हुतणी चायीजें कं देवता
मिनख री धरती पर उतरण नें मूढो घोन्न, और हुन्न आ है कं मिनखा नें देख'र डांगरा
ई चमकें । फेर तो बाजो किया पार पडें ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं मिनख रें
इतें पारमायिक प्रयास री अेक दिव्य गध जद-कद उठ'र अनत मे फीलें जणा ही
सह-अस्तित्व री बाजरी रें माननी वैभन्न रा सिट्टा नीकळें; गधवती धरा रो अर्थ फेर
ही समझ मे आन्न और फेर ही हुन्न मिनख रो मोल ।

जीवन रो सूरज, दुख रा बादल

—दीनदयाल ओझा—

सावण रें बादळां ज्यू
कदं-कदं
जीवन रें सूरज मायें
दुख री घटावां बावें ।

मदमाती घटावां
आप रें सागें
घणें हेत सु
बाळें अधियारें नै
बुडाय लावें,
गळें लगावें ।

पण तामें रें बायरें रो
हापेटो सागें जद
जीवन रो सूरज तो
हेमाळें ज्यू
धिर भाव सु
अद्विग ठभो सायें ।

दुखा रा बादळिया
भाव नीबीं किना
कई रें बुवा ज्यू
कटं-कटंईं भायें

० |
और

जीवण रो मूरज
तपियोटे हेम ज्युं
दूणं भात सु
घरती मायें
फेरुं चमकै
फेरुं दगकै ।

सांसां रो सूत

—पुरुषोत्तम छंगाणी—

समे रं अरटिये
 मामां रो मून कानू—
 जाहो हृदं भसां सीणी,
 अटेरण अटेर सीजे,
 म्हारी देनगी दे दीजे,
 ज्यो-ज्यो वानू
 अटेरती जा,
 म्हारं खानं मांडनी जा,
 मलमल नी लो
 विद्रोही वणानी जा ।

जा नी हृदं वं
 पारी परम-परत म
 म्हारो वानियोरो मून
 बाघरं मू कुचमाद करनी
 शेह म वजीवनी
 अणुनी अणुम जावं,
 जण रो अण ही
 विरज जावं
 मर मू वं दे ली—
 ओ रवे अंठ रो वानू,
 व दे अणुमिदा हृदं वानू ।
 अवे वानू ही वं
 वानू वर देवत वानू वं

और

जीवण रो सूरज

तपियोई हेम ज्यु

दूणं भात सू

घरती मायै

फेरुं चमकै

फेरुं दमकै ।

अणजाणियो-सो गांव

— गोरधनसिंह शेखावत —

मारमं माम
घणं दिनां पाछं देखियो
बदरम हूयोहो गांव ।
पीठ जासं ओळ्याण रा
मीठा मबद
गांव नी दुसनी छानी मार्ये ।

गांव बघाव लगावं
शेक व्हं मिनल ज्यु, अर
बघाव लद जासं शरप-नी ।
मी मूट मे दाबटिपोहो
पोहो भिचू हावुसो-यो ।
गोत्र

ठगे ललारा मारनी दीजे परमान,
अर पुग लहिपोही साहजी छाना मार्ये
धीदे-धीदे लनरनी
अब हीउनी राम
थियारं गाव टही कमीन रा
बघवा मारनी मस जे ।

शेक लाल जणे वेंहे
दाड कर लुहाव रे बाब लुटबाण
भूने हाउं के ठे
दाड रे मरज कर

घापड़ो काचो सूत
 कुण जाणै के टूट जासी—
 के अळूझ जासी—
 घेरो कोनी ;
 पण ठा है,
 जे टूटियो तो
 सांधतो फिल्ला उण नै ;
 अर फेर कार्द गारंटी—
 तद ताणी पंलां री भांत
 म्हारो अरटियो चालतो रंसी ?

आ नीं हुंनै के
 इण राफारोळ मे
 विना कातियोड़ी पूणी मनै
 धूई मे नाखणी पड़े,
 अळूझियोडे सूत रो कोइयो
 सिळगात्रण मे वापरणो पड़े,
 अर मनै खाली हाथा
 घरं जात्रणो पड़े ।

अणजाणियो-सो गांव

—गोरघनासिंह शेखावत—

चार्ल्स साल
घणै दिना पाछै देवियो
बदरग हुयोडो गात्र ।
चीठ जात्रै ओळखाण रा
मीटा सबद
गात्र री दुसती छाती साथे ।

गात्र अत्राज लगामे
अेक वूठै मिनख ज्यू, अर
अत्राज लड जात्रै सरप-सी ।
मै सुद मे दाबळियोडो
योडो भिचू छाबूह्यो-नी ।
रोज

ऊर्ग लखारा भारतो मैलो परभात;
अर पृग उडियोडो साबळी दानां माथे
धीमे-धीमे उतरती
अकडीजती रात
चिचारै साब टहै अतीन री
अभवा मारती नस नै ।

अेक साल नदी वेंवै
गात्र अर दुहाड रै बीच चुपचाप;
म्हारै होटां मे ऊर्ग
पोर री जगळ अर

वापड़ी काघो सूत
 कुण जाणै के टूट जासी—
 के अळूझ जासी—
 वेरो कोनी ;
 पण ठा है,
 जे टूटियो तो
 साधतो फिरूला उण नै ;
 अर केर काई गारटी—
 तद ताणी पैलां रो भांत
 म्हारो अरटियो चालतो रंसी ?

आ नी ह्वै के
 इण रांफारीळ मे
 बिना कातियोडी पूर्णा मनै
 घूई मे नाखणी पड़े,
 अळूझियोई सूत रो कोइयो
 सिळगात्रण मे वापरणो पड़े,
 अर मनै खाली हायां
 परै जातणो पड़े ।

म्हारो देश

—करणीदान धारहट—

म्हारो देश—

बाजरी री रोडी पर मिरचा रो बीज ।

म्हारो देश—

टींगरां री लगाटेर,
सैरल-ही-सैरल छोरें रो
टामकी-मो पेट ।

म्हारो देश—

पाळ रो वामो,
मेजटी रें छोटा रो गात्र,
टीबट रें खोल
नागी-भूखी लुगार्ई री
चूमेटी पीळी टांगा ।

म्हारो देश—

बूतेहा मिनलां रो टा-उण्ण,
बीचरेईं टींगरा री आण,
मम मारधं मोटपारां रो भनूजिरी
बजेही बस,
हटपे हा तार,
बादिया बगाड,
बूतेहा रें मला

सारो गाँव बडल जावँ,
 गूने देवरो-तो ।
 कुमूणी बोपी सुर्ण मोदा कुत्ता री
 गुंताई सू भरियोडी गळी रँ
 कांठा नँ धोरती;
 लोग बँठा है आप रँ परां मे
 थागळ सगायां ।
 आप दितावँ
 गुरजी गाँव रँ मायं;
 तात्रडो अकलो सोयो रँसँ
 डूंगर रँ उजाड खोळें में;
 उगाळी लेवँ
 मुरझायोडा पाना रा रुंखां री
 चिकदा लागियोडी-सी द्रियां हेठें
 नाइ पसारियोडी वूढी गाय अर भँस ।

धोती रा पायचा टागिया
 घूमँ सूनी हेली रँ अँडँ-मँडँ
 कई ठाला-भूला बदमास;
 घरां रँ माय
 मोसा मारँ वूढी-डँण सुगायां
 जमानँ री तसवीर झांकती,
 ऊचो मेडी में बँठी उदास
 प्यार साल री मुसाफरी सू
 आबाळा घर रा घणी री
 सतव्रती वीनणी ।

दूर अँक रोळो सुर्ण अर
 सो जावँ ऊडँ अकास रँ पीदँ मे;
 अँक सुर्ण मे चमकँ आस
 सगळें दिन दारू री मट्टी रँ सामँ
 तपतँ मिनस री ।
 ओ गाँव मात्र वूडो लागँ,
 सारला कई वरसां पँलां देतियोडो,
 ना यो पिछाणँ
 ना में पिछाणूँ ।

म्हारो देश

—करणीदान वारहट—

म्हारो देस—

बाजरी नी रोटी पर मिरबां रो बीज ।

म्हारो देस—

टीगरा नी मगाटेर,
सैरन-ही-सैरन छोरें रो
टामबी-मो पेट ।

म्हारो देस—

बाळ रो बामो,
गेजरी रें छोरां रो गात्र,
टीबहें रें बोनें
भापी-भूयो मुगाई नी
कुमेरी पीजी टांग ।

म्हारो देस—

कुंहेरा मिनला रो टा-उण,
बीबोहें टीगरा नी बाण,
मम बाबई मोटपारां नी भट्टियो,
बड़े ही बस,
दुण्ये वा लार,
बाईसा बराज,
कुमेरा सैमला,

सारो गाँव बढल जावै,
 सूने देवरो-सो ।
 कुसूणी बोली सुणें बोदा कुत्ता री
 सूंसाड़ें सूं भरियोड़ी गळी रें
 कंठां नै चीरती;
 लोग बंठा है आप रें घरां मे
 धागळ लगाया ।
 आख दिखारें
 सुरजी गाव रें माथें;
 तावड़ो अकसो सोयो रें
 हूंगर रें उजाड खोळी में;
 उगाळी लेवें
 गुरझायोडा पाना रा रुखां री
 चिकदा लागियोड़ी-सी छियां हेठें
 नाड़ पसारियोड़ी बूढी गाय अर भेंस ।

घोती रा पायचा टागिया
 पूमें सूनी हेली रें अँड़ें-नँड़ें
 कई ठाला-भूला बढमास;
 घरां रें मांय
 मोमा मारें बूडी-डैण लुगायां
 जमानें री तसवीर झांकती,
 ऊंची मेडी में बँठी उदात
 प्यार गाल री गुमाफरी सू
 आबाटा घर रा धनी री
 गनव ति वीनणी ।

दूर अँह रोडो मुर्न अर
 सो आवें ऊँह अकाम रें पीरें मे;
 अँह मुर्न में चमर्न आग
 मरुटे दिन टाक री मट्टी रें गाभें
 नरें मित्रण री ।
 जो बऱ बऱ बूडी लाने,
 मारमा कई परमा पैला देवियोड़ो,
 नः दो रिदऱने
 नः दो रिदऱने ।

म्हारा देज

—वरपादान दाग्दूट—

म्हारा देज—
बाबगे री गेरी पर निरकां री बीर ।

म्हारा देज—
टीकरा री नकाटेर,
मैरलें-ही-मैरलें छोरें री
टाकरी-जो देर ।

म्हारा देज—
बाज री कानो,
हेकरी रें छारा री काज,
टीरहें रें कोरें
भापी-दुमो मृदाई री
बुनेरी पीठी टाका ।

म्हारा देज—
बुनेरा मिदला री टा-टण,
बीचोहें टीकरा री काज,
मर माथें मोटपारां री मकुटिरो,
हजेरी कण,
हृदये हा हाव,
बादिला कटाउ,
बुनेरा बीमका,

भाषा की भाषा की भाषा हमी पायी कं लोगों परब्राह्मी ठंडाई री ड
कर दो । जुगां गू दगू-वीगू भाषां जिक्के उपमहाद्वीप में तीजनी-नी पूठ
री भाषा रो हमरत पी'र हगनी-मुळ्हाती ही, अंगरेजी अंकली उगां
मुगकन कर दियो । गर्भे रों पूंछ पकड़ायो तो हमो कं मूडें पर साता वि
सोरं सांग सोडां जद सात्तो ही काई ? आन रे स्वायें सातर आदनी :
साकड़ो हूवें ! 'रघ' जितो ही गंतीर्ण, सह-अस्तित्व नें बिसो हो डर । 'स
सह-अस्तित्व रो आपार । हूं केळें जिकी साच, म्हारी पार्टी सोचें जिकी
अं विचार ही वनपणा घायोजें, बाकी नहीं । सह-अस्तित्व नें फेर आमरो
आ ही अग्रस्था नागी ह्य'र धरती पर नाच घालें; देसां, जियां पार पड़े
साईं उळ्ठी, बेमारी यपतो ही ।

तो, धरती देरुठ पावे काई ? विद्विध यगां रो सह-अस्तित्व, उण
विकास-बेभन्न, और साची पूछो तो इण घात्र और सदभाव सूं ही उण
बागवान आप री कळा रो विस्तार करपी है—ओ 'विपन्न-वन' । पण जद
स्वापो, समझदार मिनत्व-धिरतो आप जिसें वर्ग सार्थ को र्य सक नी, उण
और उमासां री पून इण बाग सूं अेक दुरगंध लेय'र ऊपर उठतो सरमात्रं,
सायंकता इण में कठें ? मिनत्व रो मोल ही दूजां नें मुख पूगावण मे है, आप
फायला-कुत्ता ही भरें है । *The glory of human life is to serve oth
not to be served*—सात्र जचती है । कोसीस तो आ हुन्नणी घायोजें कं
मिनत्व री धरती पर उतरण नें मूंडो घोन्नं, और हुन्नं आ है कें मिनखां नें देखें
ई चमकें । फेर ती वाजो किया पार पडें ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं
इसैं पारमाधिक प्रयास री अेक दिव्य गध जद-कद उठ'र अनंत मे फैलें अ
सह-अस्तित्व री बाजरी रें माननी बेभन्न रा सिट्टा नीकळें; गधवती धरा रो अ
ही समझ मे आन्नं और फेर ही हुन्नं मिनत्व रो मोल ।

३. बोपू:

पूरब रें बडागां दीगनियो लारी ऊगरो,
 धारी मोरेंर बँटी कुञ्जसू;
 काशिय म्हागडाटी मुगावां रें
 हरभा री टेर गुणेर
 धारी धाम दीनी;

पण

पूरब री धाररी गयोहें निरें री ओळें
 टिषहें नी
 धारी में दाळ जू दळें लागी ।

४. कुण जाणें ?

धातां भोत करे आ दुनिया
 समें-धातणी सें नै धाणें
 पण गुलाब री रूप-मुया नै
 पागल भवर विना कुण जाणें ?

५. कुरसी : आदमी

पोध्या में पढी ही
 अर बडा-बूडां सूं सुणी ही
 कै भगवान री सृष्टि में
 आदमी सब सूं बडो है,
 पण कुरसी रें सामें
 आदमी भोत ओछो लागें—
 वाचनियो ।

७. वास्ती

गोबर घापती विरहण
बर कूरियें सूं उठनो घूंसं रो गोट
जाणूं द्विद्वै रें मांय लाग री वास्ती री
सांप्रत ओपमा हुवें ।

८. याद-ठगोरी

चाणचकें पीन्न री याद मे
नेणा सूं टपटप आंमूडा टपकावती
मिरगानेणी पणिहारी
घडो भरणी भूल'र
घडो रितासैं लागी,
भूण रोवतो-सो घमग्यो ।

९. सुबयो जावें आरु ज्युं

नूई 'वाटेड' पड'र
वे-दजगार रामूडो अेक वार तो हरपो हुयायो
जाणे मूलेइ खरसर्ण पर पाणी वरसग्यो हुवें,
पण वेरू
घोमासैं मे आवडे ज्युं
पीळो पडें लाग्यां ।

१०. वेर कडे ?

मुळ'ती कळियां रो
विमवतो जेवन
बरसतें धादळ ज्युं
बरसयो-र-बरसयो,
वेर कडे ?

ठेरचोड़ो विदु

गूल्—पाणो नरुदा
भापांतर—नदलाल रामा

मैं की नी जाणूला, नी कल्पना करूँसा
कुण मेरी अ-सत्ता नै गिशाप्रैला
कोशिश विना सत्तावान हुवणो ?

पाणो किया ओ बरदास कर सकै ?
भाठां किण अकास रो सपनो देख्यो है ?

ठेरघोडा, जद ताई वं लोग
अळगोई देस जावण नै ठेरघा
आप रं तीरा मायं चड'र
ठाई दीपा कानी उड नी जावै ।
आप रं डक्योई जीवण मे यिर
जमीदोट नगरी रो भात
दिन ऊतरता चल्या जावै
पकाड में नी आगण-आळी ओस रो तरिया
की खतम नी हुवैला, नी बेकाम हुवैला,
जद ताई म्हे पाछो जलम नी लेवा,
जद ताई आज दिन लूटघोड़ी जमीन
पाछो पुराणें वसत सू भरीज नी जावै—
अकल रूप मूं चुपचाप खुद नै
अ-सत्ता मूं वारै काडता, अजे भी
फूला लदी टाळी हुवणें वास्तै ।

भाग-भुवाली

—शिव पाडे—

देवें है जद भाग भुवाली
उबळी राता लागे काळी

हर-की नै कर दे चकचूधो
सूधो काम करा दे ऊधो
मीधे मारण सू भटकाधे
भाया री व्याख्या तटकाधे
मीठी बोली विस पुळवा दे
तदाया देवता पुळवा दे
इण विण सू ही प्रीत न पाळी
देवें है जद भाग भुवाली

जुलमी जागण रोज कराधे
दिरचक मनडो टिक ना पाधे
तन रो कपटो बेरी वणज्या'
दुल मिर तबू वणके तणज्या'
बिणपोहा रं लागे खुबी
मीद किती-सी उडज्या' ऊपी
जुलमी री है जात कवाळी
देवें है जद भाग भुवाली

इण तरिया रा मारं वण्ट
सीधो कर दे तार 'र धकड
बाई-रो-बाई कवा दे
माटी से मुट्टया भरवा दे

दया न सा गीढा टिकना दे
 अस्तीफो हायां लिखना दे
 दुनिया सूं धजना दे ताळी
 देतै है जद भाग भुंवाळी

आंखइत्यां करता दे घोळी
 अइयां जिदगी लागे मोळी
 मिनख होयज्या' हक्को-बक्को
 कून्ने मे दिरना दे धक्को
 खरचें सू चाचर घटना दे
 भगा-भगा जूत्या फइना दे
 राजा नै वणना दे हाळी
 देतै है जद भाग भुंवाळी

फागण

—सांवरमल दाधीच—

स्याळें मं जद खातें काळ
चालें मघरी-मघरी वाळ
धम्म-धिनक-धिन वाजें चग
शाळ मजीरा छम्मक-छम्म
बोल-बोलकर मस्त धमाल
छूम-छमाछम नाचें यार
इन्नं गीता रो रमझोल
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जन्नानी करूं किलोळ

गंर माच री घुसाघार
छूटें रग-भरी पिचकार
के टाबर, के नर, के नार
तन-मन भोजें रस री घार
रग गळपा मे, रग बजार
रग-रेळ मे उठे मलार
करूं मसखरी भाडें होळ
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जन्नानी करूं किलोळ

रग-रगीलो चौक सत्राय
भात-भान रउ साग वणाय
घूम-झूमकर गीदड घाल
धूम-धूमकर गीदड घाल
रसिया रळमिल करूं कमाल
मनहो नाचें नी-नी हात
'वा भई ! वा भई !' गुजें बोल
फागण में मस्ती रो घोळ
खूब जन्नानी करूं किलोळ

धर मुरधर रा धोरिया

—रामसिंह—

धर	मुरधर	रा	धोरिया	सोने	घणा	सरूप	
घोळ	हिलोळ	किलोळ	मय	सायर	रूप	अनूप	१
लार्ग	घणी	लुभातणी	टीबा	री	टोळी		
जाणक	जोवण	री	प्रकृति	घड - री - घड	खोती		२
सूर-किरण	सोनल	करै	चाद-किरण	चांदी			
धर	मुरधर	रा	धोरियां	बांकी	घज	बांधी	३
केसर	कण	रज-रजणी	कोमळ	काया	जाळ		
धर	मुरधर	रा	धोरिया	कोमळ	वण्या	कमाल	४
घोळा-घोळा		धोरिया	चाद	तण	उजास		
हात-भात		हूळस-हूस	रम	रसीला	रास		५
निस	पूनम	धोरा	निरल	वालभ	बोल्यो	वाम—	
सुरग	रच्यो	सागर-सहित	घोळो	किण	मरु-धाम ?		६
रात	पड्यां	रमणीक	दिन	मे	दीर्घ	दोगणा	
प्रेम	तणा	परतीक	घोळा-घोळा	धोरिया			७
रात	पड्यां	मन-रजणा	रुत	वरखा	रमणीक		
धर	पर	दीर्म	धोरिया	नेहा	भरघा	नशीक	८
पावस	तन	पुतकै	घणो	द्विष्टई	मिटी	दुवाड	
धूड	नही	अ	धोरिया	पेम	तणा	पाहाट	९
मुरधर	करण	सरूप	घारघो	जीवन	धोरियां		
राजधान	रा	रूप	धीर	रवाग	वण	तग वण्या	१०

घोरा	अँ	रे	जीवधर	जाणै	सो	जाणै		
मेतड़लां	तन	ऊमगै	आंधी		उकळ्ळाणै		११	
आंधी	आयां	घोरिया	उड-उड	करै	पड़ात			
रचै,	विगाडै,	फिर	रचै	विधना	सरिस	वणात	१२	
लोल	वेकळू-लहरिया			विलरै-वणै	गुरेस			
पन्न	घोरिया	प्रेम	रा	लिरै	नन्न-नन्ना	लेख	१३	
भात-भात	रा	माडणा		वाळू	रचै	विचित्र		
पन्न	घोरिया	प्रेम	रा	चितरै	चोला	चित्र	१४	
जीव-जत	रात्यू	रमै		ठडी	वाळू	टोड		
मडै	पूठरा	माडणा		जाणक	मरु	रा मोड	१५	
सीला	तिरद्या	तणतणा		ऊचा	अडिग	अनेक		
'बहु	दिस	जीतण	नै चढधा	दळ	घोरा	रा, देर	१६	
खाया	कोट 'र	कागरा		बुरजां-पार	मु-पाट			
मुरधर	रातण	माडिया		घोरा	द्रिड	द्रुग-टाट	१७	
घरो	गरब	मत	घोरिया !	ऊचो	सीस	उटाय		
आंधी	सू	उड	जावणे	सू	तासी	तन	ताय	१८
अदर-अदर		पार		पन्न	भरौ	जप	मोन-जप	
घोरा	घूड	रमा'र		जगळ	मे	मगळ	करै	१९
ताप	तपै	तपसी	तरण	रेती	रास	रमाय		
धर	मुरधर	रा	घोरिया	धूणी	रह्या	घुसाय	२०	
अलख	सरै	घूणी	तपै	टहरै	टीक	न टोड		
पर	मुरधर	रा	घोरिया	बोग्या	रा	निरमोड	२१	
भंस	लियो	बालहा	विरह	टहरै	टीक	न टाम		
घोरा	पावन	प्रेम	रा	रुटा	रमना	राम	२२	
टिमबळ-सापर		हरिया		बालवीर	-	बडिनाम		
धन	रे	बारो	घोरिया !	मिस्पो	नहीं	मीड'स	२३	
सापर-टिमबळ		सांधिया		बाममोर	-	बडिनाम		
नेक	बुडी	नहि	नेह	री	वरपळ	घोरा	प्याम	२४
टिमबळ-सापर		हरिया		बासनेर	रो	देम		
धन	पण	बारो	घोरिया !	नेह	बटपो	नहि	नेक	२५

मन	घोड़ें	दिख	घोड़नी	गुरधर	री	महागज	।	
बिन	बाहं,	सोडू	गटी	भोग	हरो	रात्र		२६
जे	तन	घोरा	मे	नञ्जना	मे	भोग	रो	मार
द्विम	उप	रै	गिन	गिन	दुजं	भोग	रो	पञ्जार
२७								
घोरा	धू	पापै	गटी	परं	घोरिदा	ध्यान		
द्विषडो	घोरा	मे	द्विष्यो	आयो	सगै	न	आन	२८
मे'	गूठा	घोरा	परं	सीगळ	कोमळ	सात्र		
तन	तरसां	मन	ऊमगं	बूदग-भोसण		कात्र		२९
टावर	टीलां	पर	गुहं	गूडा	करं	विहार		
बाळू	रा	साडू	पटै	बाजू-रा		घर-बार		३०
बाळरः	बाळू	रेत	में	गेतं	हिसमिल	रोल		
गुरग	घोड	आया	सता	मीठो	मिळियो	मेळ		३१

वजावे रो वीर

—सवाईसिंह धमोरा—

(१)

शेखाटी मे गाव अेक है, वजं वजावो उण रो नांन
राजतवा री च्यार कोटडी, च्यारा रो गावा मे नास
भंरु सिधजी कंवर खादलो व्यावण गयो बुहार्ण भाद्र
तवरांका सू ध्याय वीनणी आयो पाछो कांकड माय
गयो खवास डाळ ले हरियल, ठटा री दी गोडी डाळ
कांकड मांय जाजमा विद्यगी, धारी रयो कमूमो गाळ
दी खवाम राजळें वघाई—जान पूगगी कांकड आय
सामेळो साधो सांनर सू कांकड सामा जाय वघाय
माजी बोल्या—मुणो नेवगी ! जान वदघा थाया गमचार
मांनण मे भेळा सं हो रघा कुटम कबीळें रा सिरदार
कांकड पर सामा कुण जावं, कोटडल्या मे कोइ न आज
मांनण रं शगडें रो नूतो, सगळा पूग्या रजवट काज
पेंसारा रो देण बुलावो, बारणजी भी भाग्या जाय
थोव पुराणी राजळिये मे नुकी वीनणी खानर आय

(२)

जाय नेवगी पाछो कहियो—सिरदारा ! मैं मुण लो वान
सामेळा मैं मती उडीवो, वेगा थालो खवची ख्यात
मांनण मे शगरो भडियो है, शेखाटी सा पूरी जाय
वीन कोटडघा न सं टाबर पूग्या है शगडें रं माय

तो राक्षसजी ! म्हे भी चाल्या—कह वनईं सुंतो तरवार
 इतडो दिवस फेर कट आली, इण काणो रो करण उवार
 तालमसिधजी हा बट भाई, जा पकडयो वीरा रो हाथ—
 पंसारो करणो है भाया ! ध्याय चीनणी ल्याया साथ
 दादाभाई ! किर्या विमरणा पावूजी रो पौरव-गाथ'
 पावू ज्यू पंसारो हुयसी, नँचो कर मेलो सिर हाथ
 सोढी ज्यू तन्नराणी जाती मुरगां मांय बंधेदी मोड़
 राक्षत रो भँरू' भी समझो पावू ज्यू दौड़ामी घोड़

(३)

काकड़ पर ही लियो कसूमो, बाथोबाथ मित्या सिरदार
 घोडा रँ झट छेड लगा दी, जा पूग्या मांडण रँ बार
 झगड़ें मे जा जूझ्या भाई, धणी मचायी मारो-मार
 वीर-गती ली भँरू' वनईं, पाग लेप फिरियो असन्नार
 पाग पूगता तन्नराणी भी साध्यो सोढी-सो आचार
 गुनागार ही ह्यलेकें री गुणागार सतियां री सार
 गात्र वजासँ द्यतरी वण री आज पुजापा री उण ठोड़
 भँरू मिथ वनड़ा री वनडी काठ चढी बांध्या सिर मोड
 देव न धोकीजँ जिण दिन सू, सती धुकें जूझारां साथ
 ध्याय चीनणी घरा पघारें, पगल्यां मार्यँ मेलें भाथ
 पावू ज्यू पूजीजें भँरू, सोढी सम तन्नराणी फेर
 गात्र वजासँ कौळूमंड ज्यूं जण-जण री आसा रो फेर
 जीवत तो भँरू' राक्षत रो आज हुयो जण-जण आराध
 जात-सडूला जठें चडीजें, जण-जण री पूरीजें साथ
 जांगड़ दूहा आज दँ जान चढता फेर
 जान चढायी भँरजी गात्र वजासँ फेर
 वनडो भल भँरू' हुयो, राक्षत रो रजपूत
 काकड़ सँ सीयो गयो, मांडण झगड़ें हँत

सूमल

—दीनदयाल ओझा—

दृश्य १

[सूमल की मंडी से सजियोडो कमरे। कमरे में दो रूपाळी लुगाया बैठी है—अंक २५ वरस और दूजी १७ वरस रं अड़-गड़। छोटी रं मूडें मायं अखरज और उत्सुकता की झलक, मोटोटी रं मायं खुशी, पण कण-कणई चिंता की रेखावा उभरे और मिटं ।]

सूमल—(हठ-मरी वाणी में) नहीं ! आ बात तो म्हारी मानणो ही पड़सी । मने टलावतां घणा दिन हुयग्या । अबे आप की बात नहीं मानू । हू तो आज महदरे राणें न देखूला 'र अन्नस कर देखूला ।

सूमल—(नम्रता की वाणी में) सूमल ! हर बात में हठ चोलो नहीं हूँ । उण दिन जद सगळी बात जिबो नहीं केंत्रण की हो बा भी तने बताय दी तो अबे हठ किण बात रो ?

सूमल—(उतावळी बोली में) नहीं ! अबे हू आप की बात नहीं मानू । न उण बेळा हूजो आदमी नहीं रेय सकं, जणे आरब भंराती किण तरं रंवे—
बतावो—बोलो बधो नी ? हू सगळी बात समझू हू, आप रं मन में ...

सूमल—(कठोर वाणी में)—साची कंवे । शोट तो म्हारे मन में हीत्र है, जणे तने आज हण तरं पाळ-पोस नें मोटी करी । सगळी बात जाणनी सची अणत्राण वण भात-भात रा प्रश्न करणा चोखा नहीं । सूमल ! काल तने हूजें ठिवाणें जावणो पडमी; अबे तू धोरी नहीं है । हर बात मायं हठ नहीं करणो, सूमल !

['बाईसा-बाईसा' की अवाज आवे ।]

हू जाऊ हू सूमल ! देखू, काई काम है ।

सूमल—(बाळ-मुनभ अचळता करता सूमल से हाथ झालें; पेरु याही उभें; पेरु हाथ पसारनं रस्तो रोवें; अचळार्ड में बोलें) म्हारी बात माननं

पढ़ें आप भीतर प्यारो; नहीं जर्ण हूँ नहीं जातण दू। हूँ ऊभी हूँ। देम्,
 आप मनं बाधी करनं किण तरं माय पधारसो। जे नहीं मानसो तो
 हूँ साथं चालसू।

मूमल—(तिरस्कार-भरी वाणी में) कद जासी ओ धारो टावरपणो? चाल,
 साथं चाल।

(दोनों जात्रं है)
 [पड़दो पड़े है।]

दृश्य २

[साधारण घर रो अंक कमरो। खूटं मायं सारवी टागियोड़ी है। अके
 कानी दो डोलिया ढालियोडा है। दोनू डोलिया मायं दो आदमी बंठा
 है। अंक री वेशभूषा सिध री है, दीसन मे गन्नइयो दीखं। आपस मे
 सगीत री वाता चाल रैयी है। अचाणचक वारणो खड़कात्रण री अत्राज
 आत्रं। अंक आदमी कमरें मे आत्रं, च्यारू कानी देखं, फेर आरब कानी
 देखनं आदर-भरी वाणी मे कंत्रं।]

अजनबी—दाता फरमायो है कं आप रं अठं सिध रा नामी गवइया खान साब
 पधारियोडा है, उणा नं साथं लेयनं आप वेणा पधारो। कई दूजा महमान
 पण पधारियोडा है। वस आप री उडीक है।

आरब—ठीक है! अरज कराय दं कं म्हे आत्रं हां।
 [आदमी पाछो जात्रं है।]

खान साय—(धनी थ्रडा-भादना सू) धन है मरुधरा! धन है लोदत्रो! जठं इण
 तरं रा कळाकार और कळा-पारखी विराजं। हूँ आज भोर मे आयो
 हूँ। सिइया सू पैली-पैली दाता नं खबर भी मिलगी, उमरात्रं नं
 बुलाय भी लिया और मजलस री त्यारी भी हुगी! कळा रं जानीकारो
 बिना इण भांत कुण सोचं आरब साब!

आरब—(आदर रं भाव सू) कळा रा साथरू तो कळाकारा नं उडीकता रंवे।
 मनं याद है लोदत्रं मे आचणअठो कोई कळाकार दसो नहीं गयो जिण
 रो मान-संमान दाता नहीं करियो हुत्रं। फेरुं आप री सोरम तो सिध
 सू लेयनं इण दिस ताईं बरसो सू आय रंवी है खान साब!

खान साब—(थ्रडा भाव सू) आरब गाब! आज म्हारं मन री मुराद पूरी हुयी।
 अंक आप रा दरसन करनं और दूजं लोदत्रं रं कळापूर्णं नगर नं
 देखनं—इण भांत रा भवन, सजियोड़ी दुकाना, धंभन्न, मान-आदर
 मैं तो कठईं नहीं देखिया। कळा और सस्कृति रो अनूठो केंद्र ओ लोदत्रो
 आप री ख्याति रं उणिपारं हीत्र है आरब साब!

आरव—(मुल्लकन) खान साब ! ओ आप रो बहपण है जिहो इन मान कय रया हो । आप रो मान-संपान करण रो म्हाने आज अदगर मिळियो । ओ इन घरती रो बडो भाग है । आप जिना कळाकार मिघ ओर दूत्रे देणा मे है वित्तक ? पघारो अबे, दाता उहीकता हुंरता ।

(दोनु जावं है)

[पढदो पडे है ।]

दृश्य ३

[राजसी ठाठ मू सजियोडो मोटो कमरो । रेशम रा गनीचा विद्रियोडो । सरदार अके कानी गादी माधे बंठा है । विचाले गात्रणआळी गरू रेशम रो गनीचो विद्रियोडो । कई जणा उडीक रया है, मालम पडे है । कई वे आरब रा चेता है । धीरे-धीरे आरब ओर खान साब सभा-महप मे आवे । ऊचे क्षरोक्षा मे मूमल ओर सूमल तथा दासिया बंटी है । 'पघारो-पघारो' रो अझाज सुणीजे । आरब ओर खान साब आप रे स्थान माधे बंटे । आरब खान साब रो परिचय देवे । सगळा लोग ध्यान मू सुणै । खान साब गात्रणो सरू करे । अके गीत खान साब गावे फेर अके आरब । सगळा वाह-वाह कवे । सहसा अके चाकर नीचे आवे अर अके टकियोडो पाळ आरब रे हाथा मे राखे ओर मूमल रो ओर मू खान साब ने भेट देवण रो कवे ।]

आरब—घन है बाईसा ओर घन है खान साब ! जिकी सुराब्रट खान साब रे कठा मे है बा मे तो आज ताई नही सुणी । बाईसा रो तरफ मू खान साब ने आ भेट देवता मने घणो हरप हुवे है ।

[भेट देवे है । सगळा उमराब भी आप-आप रो भेट पाळ मे घरे है ।]

खान साब—(कृतकता रे स्वर मे) हू आप रे गुणा ओर दाता रो महुरखानी रो किण शब्दा मे प्रशता करू । म्हारे बने कोई बोल नहीं । हूं आप रो गुणगुजार हू के आप मने इत्तो मान दियो । इन इनाम ने पावण रा हृददार आरब साब है ।

(सभा रो ममाप्ति हुवे, सगळा जावं है)

[पढदो पडे है ।]

दृश्य ४

[राजसी ठाठ मू सजियोडो कमरो । कमरे मे मूमल ओर सूमल दोन बेना बंटी है । मूमल रो मुल-महल उदास है । लिनाह माधे चिना रो रतावा है, पत्तीनो है । मूमल रे मुई माधे पचटाई रा भाव दीने ।]

धीरे-धीरे बिजो रं भावत री अवात्र भावं । दागी बावं और भरत करे ।
बाती—(नमसा मु) बाईसा । गारन गदेतो गानो है के आरव भात्र हरिज
गरी हुन गवेता ।

गूमल—(आदेन-भरी बोनी म) आ गारन मै बंध दे के इगता बगाम दी है ।

गूमल—(थपडाई री बोनी म) बाईसा । इन मै बंधे भाग । आत्र आरव नही
रेंवेता । हु आरव री वीगात्र वेरुं आरवे बने रेंऊता और महेद
राभे रा दरगल कर म्हारं मन री गाप पूरी करुसा । आत्र ही तो
बेवता हा के त्रिन दिन आरव नही आवं उन दिन याद करावे । ओ
अवगत आत्र-ई आयगयो । बोनी, आत्र रो बाई हुनम है बाई-सा !

[गूमल रं मूडे गाभे गरी चिता रेंगावो उमर आवं । मन री अद्रुसाइ
मूडे गाभे गाप-गाक गावके । बाई करे, बाई नो करे—इन तरं री
दिविगि मे या गूमल नै की बेवतो पावं इन तरं रा भाव दीते । ओ
आवियो गूमल कानी गद्यायने देगे ।]

गूमल—(मदगटावती बोनी म) गूमल । बाई बंडे । तू म्हारं मन री नही
जाण सकें ? राणोजी पधारती क नही—ओ त्रिन नै पतो ? तू आज
हठ ना कर । म्हारी जीवणी आंग दिगुंगे सू फरक रेंवी है । मन
अमूमल-तो रेंवी है । तू कयो हठ करे ? बंन । कुण जाणें आत्र कोई हुती !
[गूमल गरी चिता मे पट जात्रं । अकर मूडे री हवायो उठ जावं; दूजई
राण मूडे गाभे पैलां गरती रोनक दीगे । घोडी गभीरता सू बोले ।]

गूमल—बाईसा ! आ नही हुय सकें के महेद राणोजी नही पघारं ।
पधारती अर अत्तस कर पधारती । देखातो—आज पूनम री कजळी
चादणी किण तरं काक-नय माघे अमी बरसा रेंवी है, नदी री धीमी-
धीमी स्वर-लहरी किण भात भीठा रस-भरिया गीत सुणा रेंवी है ।
हूँ जाणू हूँ जद ओ बाद आभे रें विचाळें आ ऊभसी जद महेद राणो-सा
पधारती, अत्तस पधारती ।

गूमल—(उदास मन सू बोले) गूमल ! तू दासी कर्न सू आरव रा पाचू कपड़ा
मगाय ले, कर लं थारी मन-चायी, जा ।

[गूमल जात्रं है । गूमल अकली बँठी है । गरी चिता री रेखात्रां मन
री उषळ-पुषळ नै दरसाय रेंवी है । पतीनं री बूदां लिलाड माघे सलक
रेंवी है । अकली बोले है ।]

गूमल—आज मन रो इन भात अमूमल, जीवणी आंल रो फरकणो, पतो
नही किण अणहोणी री सूचना देत्रं है । जी मे आत्रे के अकांत
मे जायने जी भरने रोजं; पण पाता कळ । कुण है म्हारो जिक
म्हारं मन री वेदना नै समझे ? गूमल, पण गूमल अजे नही समझे ।

प्रेम काई हुअै । उण नै काई पतो ? दोना विचाल्ले दिअलो भी जागतो नही रेंअै । बा तो अेक हूठ नै समअै । खैर ! जो हुणी है हुय रेंसी । कुण टाळ सकै ?

[कमरें रें वारणें माथे अज्ञाज आवै । अेक दासी आमने कौअै—बाईमा ! पाळ त्यार है, आरोगण पघारो ।]

मूमल—(आदेन री अज्ञाज मे) जा, त्यारी कर, हू आऊ हूं ।

(दासी जाअै है)

[पढयो पढै है ।]

दृश्य ५

[राजसी ठाठ सू सजियोडो बोई कमरो । कमरें मे अेक पलग त्रिण माथे मूमल आरख रा कणढा पैरिया मूनी है । कमरें रें वारणें आदमी रा जूता पडिया है । काकनय री कळ-कळ री अज्ञाज आय रेंपी है । कमरें मे दिअल्ले रो मद-मद परगात है । मूमल रें मूअे माथे गंरो चिता-रेखाअां है । आखिया मे नीद घुटण लाग रेंपी है । मूमल नीद मे मूनी है । मूमल उण रें कने बंठी है । बंठी-बंठी नै शॉक आअै । दूजी तरफ अेक आदमी री पद-चाप मेढी रें पगोपिया अंअै ज्यो आय रेंपी है । अघाणषक बा अज्ञाज रकै । कोई चीज धरीअै ज्यो अज्ञाज हूअै । वेरू पगोपियां मू भीअे उतरण री अज्ञाज आअै । दूर-दूर ऊठणी री अज्ञाज आअै । अघाणषक मूमल जागे और शारोने मे हाकी घालने देनै । गंरो निगातो लाअै । वेरू क्रांथ म भरने वारणें कानी जाअै । नीची निजर करता मिनला री तीन पगरलिया कानी ध्यान जाअै । मूमल तीन जूनियां लेअने पाछी कमरें मे आअै और जोर-जोर सू हेला पाअै ।]

मूमल—मूमल ! अे मूमल ! देल नै, महेंद राणोसा नै आखिया शोअने देल नै । देल नै अदमा री आदणी मे हूठ रो भोन । माग समझारी ही पण अेक नही मानी । बंन मूमल ! त्रिण नै कंऊ ? देल, दिअने री ली माथे ओ पतयो बट्ट रेंपी है । जरूर राणोजी अंअै पघारिया पण हण पगरलिया नै देल लीकी आप रो पदरनी ह्येइ उणी बेडा गइ माथे अइ पादा मुअया । कुण जाअै उणा नै अनाअण नै ? त्रिण नै अेअू ? है कोई ? मूमल ? मूमल ! अे मूमल !

मूमल—(हटबराहट मे आअने मूमल कने जाअै) काई-मा ! काई-मा ! कंअै महेंद राणोजी ? कंअै मया ? कन-हो । लाके । मरी अेकर लो कन-हो काई-मा !

[सूमल की आंतियां सू आंसूझा पड़े है । नस नीची है । अंक हाथ महेंद्र राण की अंक जूती माथे है, दूजो धरती माथे टिकियोड़ो है । मुँहें मार्य मंत्री चिता की रेतात्रां और परीभो है । होळें-होळें गरदन उठात्रं ।]

सूमल—सूमल ! देखतै राणा रं पगां की अंक छाप । ये आया वारण ताई और आयने पाछा मुड़ग्या । हित्रड़े की वाता हित्रड़े मे रंयगी । ना ये की कंय सकिया, ना हू-ई । मने याद है उणा रा वंण हा—चोयो कोई मानप्री म्हारी घात नही सुण सके ! धारं छोटे-मै हठ म्हारै जुगां की प्रीत तोड़ दो । सूमल ! तू म्हारी वंत नही ………

सूमल—(भरियोड़ें कंठां सू) राच बाई-सा ! वंत नही, वंरण वणी बाई-सा ! वंरण ……… (सहसा बेहीश हुय जात्रं)

सूमल—(जोर-जोर सू हेला मारे) सूमत ! सूमत ! सूमत !
(नेपथ्य मे विरह-गीत की धुन उठै)
[पड़दो पड़े है ।]

अेक नयो मठ

मनोहर शर्मा—

[चाय-होटल मे समीक्षकजी बंठा चाय उडोकै है और कन्निरर आ'र उणां रै वने बैठै है ।]

समी०—कन्निरर ! आज दीला-दाना क्रिया दोखो हो ?

कवि०—काई वतावा ? आज कोई कन्निरता कोनी गृही । और तूं जाणै ही है के कन्निरता रं पाण ही तो म्हाग चाय-कलेवा चालै है । (उवासी सेवै है)

समी०—इतो काई बात है ? आपणो आज री बातचीत ही किणी सरकारी मासिक रं सपादक नै लिख भेजो । पारिस्थमिक त्पार है । (मुळकै है)

कवि०—अर जे इण रचना नं सपादकडो रही री टोकरी मे फंक देखै तो ?

समी०—(जोश मे आ'र) पछै उण सपादक रो मित्राज म्हारै लेख मे हू पूछ सेमू । म्हारै हाथ मे भी तो कलम है ।

कवि०—जद तो खेल वण मकै है । (मुळकै है)

समी०—तो आबो, आज चाय म्हारी तरफ सू पीवो । और पारिस्थमिक अःपां पछै अर्धम-अर्धा ।

कवि०—मनै मजूर है । (मुळकै है)

समी०—हाथ मिलाया हाथ धुवै है । आज रचना कोनी देवीजै, रचना रं तारै किनो जोर है, आ चीत्र देवीजै है ।

कवि०—जद तो साहित्य-सत्तार भी पूरो राजनीति रो असाहो वणजो समजो ।

समी०—कोरो राजनीति रो असाहो ही नहो, ओ अर्थनीति रो बाबैट भी है । जे आ कळा कोनी सीली तो पारिस्थमिक मत उरीकना करो । किणी 'वाकण' मे आ'र सबद वाणी गाया करो । उटै पुत्र और चाय दोनु मिलवी ।

कवि०—पण म्हारै गळै मे लो ज्ञानि रा मुर है ।

समी०—ज्ञानि रा मुर तो थोला पण मळो भी दीनो रंवा ही मुर निकटै । मूटै काटजै ना ज्ञानि रा मुर निकटै अर ना ज्ञानि रा ।

समी०—पण आज ताई आप री कोई करामात तो नजर आयी कोनी ; ना कवि-सम्मेलनां मे ही वाहवाही मिली अर ना पत्र-पत्रिकासां मे ही समान साथ छया ।

कवि०—जदई तो कद-कद साहित्य-ससार नं छोडण री तरंग मन मे उठै है ।

समी०—ओ पलायनवाद है । क्रांति रं कवि नं पलायनवाद शोभा कोनी देतै ।

कवि०—तो पछै करा काई ? साहित्य-ससार मे जमा किण उपाय सू ?

समी०—उपेक्षित साहित्यकारा रो सगठण बणावो और मठाधीशा रो विरोध करो ।

कवि०—राम भजो । साहित्यकार तो अंक-नै-अंक देख'र बळै है । इण बळोटियां रो भी कद सगठण हुय सकै है ? असभव ।

समी०—तो पछै म्हारो कंदणो मानो—आज सू आपा भी अंक नयै मठ री धापना करा और चेला मूडां । आप गादी पर विराजो अर हू प्रचार-विभाग सभाळूं ।

देर-मवेर आपणै मठ नै भी प्रतिष्ठा मिलसी, आपणी भी पूजा तरू हुसी ।

कवि०—म्हारी तरफ सू तनै पूरो अधिकार है । तू कहसी जिपाई करता ।

समी०—तो मिलावो हाय । आज सू ही अंक नयै मठ री धरपना हुयगी समसो ।

(हाय मिलावै है)

हार को मानू नी !

—रामेश्वरदयान श्रीमाती—

(१)

धो तो को के सङ्गो के मास्टर छोरों नै जितरो भगा सकै, पण ओ नहचै बह गफू हूँ के कोई-कोई छोरों इतरों सिरता सकै के जिदगी बदलीज जावै ।

अंडो हीज अंक छोरों । नांत हरिभजन । राज री स्कूल री छठी किताब में भणीअै । सोधरा जैड़ा पूर-पूर हयोडा कपड़ा । जट वधियोड़ी । मैं उण नै कदैई हंसतो को देखियो नी पण उण रा सिरता साईना कंगना—पक्को कुचमादी, पक्को हंसोड़ ।

देखत में तो मूढं मायँ सदाई बारँ वजियोड़ी रँततो, पण कमजोर कोनी हो । हणमानजी जैडो—हाडकी वधियोडो मूढो, अंक पण सूँ खोडो, जात रो ब्राह्मण । बँत भरिया रो हो जद बाप भगवान नै बालो हुग्यो । विलै मूँ दूबळी मा पाणी-पीसणो कर घणो दोरो दोनूँ बेळा रो टुकडो जोड़ै, टक टाळै ।

हरिभजन म्हारँ कौळै रो पाणोसी । अंकर में सुणियो, मा-बेटँ मे राड चालँ । मा बापड़ी अणवस सूँ रोन्नती जातँ और रीस-खारी बकती जातँ—म्हारँ आखी ऊमर भजूरी करण रो ठेको कोनी, बामण रँ बेटँ नै मागण रो किसो मँगो लागँ ? भला-भला लखपति ही मागँ, हाथी रँ होदँ चडिया ही हाथ पमारँ, हाथ मे ब्रह्माजी रो दियोडो सोनँ रो खप्पर, मागण में किण री लाज ?

हरिभजन रो घोबड़ो चडियोडो । खार खायी आखिया सूँ मा नै देखँ । जाणँ आखिया-ई-आखियां में कँगती दुवँ—मागण मरण समान है ।

जिदगानी किताब रो भणेतरो कोनी, उण सूँ की बेसी है—इण तत्त्व-ज्ञान रा जाणणहार 'घर सूँ' बोलिया—डोकरी बापडी भलँ नै रोवँ, जाग्यां न कोई जमीन, है त्रिको धन जिजमान-धिरत रो हीज है; अठीनँ आ मँगई नँ अठीनँ आ स्कूला री ।

घात-री-घात में अँकर उणा घेर मनं कँयो— गुणियो जी ! ये ? ओ हरिभजन तो वडो उस्ताद निकळियो ।

उस्ताद ?—मैं प्रश्नचिह्न ज्यु उण मामो देगियो ।

‘हां ! छोरें विरत रो काम सखं नी कीघो जिफो नहीज कीघो ।’

इण नै कोई मा री दया माया थोड़ी-ज है—मैं बीच में ही कँयो—डोकरी रा पईसा नी हुन्नै जठँसू बिल्ले मिळ्ळासँ ।

‘नही सा ! ओ आप काई करमाओ ? छोरो तो मा नै जोर सारो दँ ।’

सारो !—म्हारें घात समश में नी आयी, हूँ वगनो हुन्नै ज्यों उणां मामें देखतो रँयो ।

‘और पछै काई ? छोरो साई आर्पआळो निकळियो । मा घणो कँगणो सह करियो जणें छोरें मजूरी करणी बालू कर दी ।’

मजूरी !—मनै ओजू अचमो हुयो—पण बो तो खोड़ी है । टोट भरियो छोरो, नै खोड़ी ग्यारो; बो काई मजूरी करतो हुसँसा ?

‘अरे सा ! बो तो अँडो दौड-दौड़ नै काम करै कँ अचमो हीज आसँ । मूड़ करण में अँडो हुसियार कँ भल-भल चौपरो नै ही लारै रासँ । सवार-गांश खेतरे जासँ नै दोपारै रा स्कूल ।’

‘हँ !’

म्हारें सामें हरिभजन रो चैरो दौडण लाग्यो—फीत, किताबा, वदीं । उण री घाटका जँडो आरियां, और आंगियां में चमकता डोळा जाणें मनै कैवतता हुन्नै—आप मनै दान देवणो खात्रता हा नीं ? पण हूँ को हासँ नीं; कोनी सू दान—मागण मरण समान है ……… !

बेक कमूर री गांठ जाणें म्हारें माथें पड़ी । अंतस में घणो रंज हुयो । उण निदोप टावर ताणी काई-काई हीणो वाता विचारी ।

दुजें दिन, जद हूँ स्कूल गयो, मँनत सू मांतरो पड़ियोडो हरिभजन मनै म्हारें सूं ही ऊँचो निबर आयो ।

चार 'मिती'वातां

—ओम बरोडा—

१. पुरातत्त्व री खोज

सन् १९७२ में पुरातत्त्व-विभागवाटां अक मुदाईं बरीं ओर बदावन अक ह्जार वरम पुराणी (कईं विद्वानां रीं विचार में मान ह्जार वरम पुराणी) अक नगर-सम्पदा खोद'र काडीं । पुरातत्त्व-विभागवां रीं मार्म ओर तां में वातां उपाद में बाजगीं एण अक वात रो ठा नहीं लाग्यो—इण नगर-सम्पदा रीं नष्ट हुवन रीं कारण रीं माध नहीं मिळीं । ना तो कियो ममदर रीं पात्र छीहण ग निधान माध्या अर ना कोई परमाणु बम फूटण रा; ना घरनीं हान'र दरद ह्जारन रो हुवां हुब हो ओर ना कईं तूजान रीं मज्जिमेट रो ।

अण मे अक विद्वान, कियो उणा सपळां मे मिर'कार हो, कियोई मित्र सनावन-उपावन आ घुडीं खोज हो नाग्यो । उण विज्ञान रीं नूई-नूई मनीना मू से में माध्यादीं हादपां रीं परीक्षा बरो अर ओ तुमार पाइपो के उणा मिनता रीं मौत गण ग नहीं मोषण मू हुपी हो । उण अ प रीं आ मोष खानू रामी ओर घोडा हो दिना में ह्जारो-न-दूशरा साठइसीकरा रा दावा-शोचना खोद'र काड नाख्या ।

सपळा रीं मार्म सम्पदा रीं नष्ट हुवन रो कारण माक हुग्यो ।

२. पुरस्कार

अक कियम बणावणिये 'टाप बकट' रीं कियम बणावीं । उण आप रो घर फूक'र समानो देख्यो कियो हो देख्यो ही एण बारदें फाइनैमर रो घर फूक'र उण में भी समानो दिखाव दिवो । मौत हीरो ओर बदाईं ह्जिरोहनां (अक कीं बदन-बाट रीं छोटीं हीं) भी । उणा रा कणा भरिया । अटरमत्री-नटरमत्री मे मनीन टोषयो । बहाणीं उणा रीं आण रीं होव हीं । मात पहाडीं प्राण:शा रीं मौनगिया रीं उपागत अपणीका अर सुगेर रीं पाच देण मे जा-जा'र कियम रीं मूटिंग करीं ।

टापो विमदाव बरींज्यो के कियम रिनींज हुवतां हीं तहूतको माध प्राणी ।

कियम रिनींज हुरो । निर्माता जीं फोन कनें केंड'र तहूतको माधण रीं ममाबागीं रीं उदांन मे हीं हा के बणावक फोन रीं घटीं वाजीं । निर्माता जीं फोन मूगतां हीं अहोण हुवां ओर कुर्मी मू अजे बाबता रिया, पदाम । घरवाळीं ओं मूमान देम'र हापी-कापी रींवरीं के हुपो बाईं ?

डागदर री तीन घंटा री कोमीग मुफळ हुयी । निर्माता नै की होण आयी ।
 घरताळी रोतती-कळपती वृत्तियो—किण रो फोन हो ? काई वणूती हुगी ही ?
 की तो यनातो ।
 निर्माता कियार्द आख्या टिमटिमा'र डूबता-सा इतरा ही बोल्या—म्हारी फिनम
 नै राष्ट्रपति-पुरमगार दिरीजगयो । आ कह'र वं केर वेहोग हुय्या ।

३. प्रसिद्ध लेखक

सपादक अेक मानीजत लेखक नै गिड़गिड़ा'र कागद लिख्यो—पत्रिका रो विशेषांक
 काढण रो विचार है; अंक रो सफळता सारू आप री अेक रचना हुबणी जरूरी है, नही
 तो विशेषांक नै कोई रही रै भाग भी नही पूछैना; सो आप कोई दो हजार शब्दा
 री कोई रचना भेजण री किरपा करोला ।
 लेखक मानीजतो की ज्यादा ही हो । उण सपादक रै कागद नै फाड़'र रही री
 टोकरी मे नाख दियो ।
 कई दिना रै आंतरै सूं लेखक नै उणी कागद री कारबन कापी मिली । लेखक
 उण रै साथे भी वे ही कारबन-बरताव करियो ।

छेकड़ लेखक नै अेक दिन अेक तार मिल्यो । लिख्यो हो—मैं विशेषांक मे आप
 री रचना री घोपणा कर चुक्यो हूं; जे घांरी रचना नही मिली तो पाठक मनै
 जीवतो नही छोडैला; सो आप लौटती डाक सू घणी नही तो अेक हजार शब्दां री
 रचना तो बिलजरूर ही भिजनावोना; आप रो गुण हू जिदगानी भर नही भूलूला ।
 लेखक संपादक रै इण चिपकूपण सूं तंग आयग्यो हो । उण खीजां मरतै डिक्शनरी
 उठायी और उण माय सू सगोलग अेक हजार शब्द टाइप कर'र सपादक रै नात्र
 भेज दिया ।
 रचना घणं मान सू स्त्रीकार हुयी ।
 छपी ।

और उण री प्रशंसा में पाठका रा अेक हजार पत्र सपादक नै मिल्या ।

४. येनांव

अेक पत्रिका रै सपादक री गोगन खायोड़ी-ही कौ बो फकत मानीजता लेखका नै
 ही छापसी । सपादक नै अेक नूत्र लेखक अेक फूठरी-सी रचना भेजी । सपादक पढ'र
 तो निहाल हुय्यो पण करै काई ? लेखक जायक नूत्रो । उठीनै देवें तो रचना भी वा
 अेक ही बब के कांड कौरण री बात ?-संपादक रै घमंसंकट हुपय्यो । ईनै-ऊनै मगज-
 पच्ची कर'र उण बिना साठी दूटपां साप मारण रो मारण काड ही लियो ।
 संपादक वा रचना लेखक रो नात्र दिया बिना ही छाप नागी । रचना रै नीच
 दो ओळपां दी—जे किणी पाठक नै नेगक रो नात्र जाणयो हुवे तो सपादक नै
 टिकटां लाग्योडो, पतो-टिकाणो मड्योडो, लिहाकी भेज'र जाण तकै ।
 लेखक रो नात्र जापण वगां सपादक बने फकत अेक लिहाकी पूयो ।
 लेखक रो नात्र जाण वगां सपादक बने फकत अेक लिहाकी पूयो ।
 लेखक रो नात्र जाण वगां सपादक बने फकत अेक लिहाकी पूयो ।

सोनलदे सोढी

—पद्मलाल शर्मा 'पद्मल'—

(१)

मुगला रा मतर ढीला पढग्या हा । अगरेज भी हाल पूरी तरें सू भारत माथे
श्री नी ह्या हा ।

घाटमेर जिले रो मीयाणी गात्र । वाखोटी वेळा । गात्र रा कईक मिनख ऊप में
रटाटा करे, कईक जागे । बारें गवाड़ मे पडिया डोकरिया खासी सू बाया भरता
। दोरा रें बाबा मे हळचळ ह्य री ही । गाया रें दूध रो घमको पड़तो हो । घरा
परटियां रा घम्माट हूत्रे ।

अषाणचक्र गळिया मे दौड-भाग । ऊप मे मूतोडा टावरिया नै लेय सें मा-बाप,
रोकरा-रोकरी आप-आप री मुआड भागर कानी भाजें हा । गायां रो दूध, घरटी रो
साटो, बाहे रा जीव रा जडा दोर और घरां री सुटिया मे टगियोडा हारडा सें उटै-
ज पडिया हा । गात्र मे जाणें घाहो पश्यो । छोटा-मोटा मिनख अर मुगायां, साजा
नै मादा, बस रोद्रना-विलखता टावरिया नै ताणता भातर मे वड रेंया हा ।

कोई-कोई पूछें हा—अरे ! टया बियां नागो ह्यो ? बाई भीड पटी ? पण अबाव
कृण देखें ? आप-आप रो जीव बचावण सारु सगळा भाजें हा ।

तोईदार बट्टवटी रा टैका पड़ें हा । मारो, हाल सो, भात्रण मज दो बेनिया ! दस-
दीग सराई गात्र रें आदणी कानी सू गात्र में बडग्या । डावू, मुटारा, मिनखमार, पाप
रा अक्षतार सीमाई रा सराई । घरा मे रोटीबिंदोहा मिनख वुछें हा । पण मुर्खे कृण ?

गात्र मे मिनख मरें हा । मुगाया आप री मात्र बचावण बेरें मे वूदवा हडवडी
बाई, पण आगें कृण जावण दें । हाय राम ! हाय-बोय !

मुटारां रो मुगियो मलान (मलनो) कद भनो ? उण हीज दूबय दिरो हें मूरो
कोर मारो ।

(२)

रणी दाह मे अेक रकगुन कनकी बेवारी कू बेकावू हूमेहा, लखन निकाई दिना,

पड़ियो हो। उषा री वीर और धनी पृथरी गुगार्द सोनलदे, जानं सोनं री पूनळी। रजपूताणी धनीनं रोहनं जिया दौड़ जावती? दरद्वारं माथं नानी तरदार सेयनं 'सगत' ज्यूं ऊभी हुयो।

मल्लो सोनल रं रूप री वात जाणतो हो। गबर साणी—सोनल घरं है। मल्लं रा परला विगारग्या। सोधो सोनल रं रात्रळं पूग्यो। देनं तो कल्लो वेमारी सूं दबियोहो दोसियं माथं सूतो है। कोमतांगी सोनल कमळ जंढं हाषां में तरदार काठी हासिया ऊभी है। धोनें न पावें। सुगार्द पण रजपूताणी। मल्लो आ वात जाणं हो। मल्लो आगं दधतो हो और सोनल सावधान ऊभी हो, निघइक। कपळं काळं री सोनल और काठं दिल रो मल्लो। कंढो बरोबरी?

सोनल नै देरता ही मल्लो डीलो पटग्यो। धोलियो—सोनल! सुगन धुम होता आज गग भट्टि, सोरं कारण आयो सुंदरी! तू म्हारी मान लं। सोनल तो जाणं मूडं मे मूग पालिया हुनं। हिरण जंढी आतियां पर घाषणी जंढी तेज। बोलं न चालं। मल्लो औरुं नेहो आयो। सोनल नै छानी देव कल्लं नै मारण साहू कमरं मे बड़ण नं पग उठायो। जितेक तो जाणं धीजळी पळको करं जियां सोनल री तरदार चमकी।

पळ मे परळं जिसी साय लपकती दीसी। मल्लो घणी मीठी-मीठी वात करं—सोनल! तूं म्हारं साथं चाल, रोगलं नं छोड दें। घणा लालच दिया। पण रजपूताणी नी डिगी। सिघणी स्याळां लारं कद चाली?

मल्लो हिम्मत करनं माय बड़ण लागो जितेक तो सोनल री तरदार रो चार हुयो। रीठ उडी। अबळा कोमळ नारी और दुष्ट भारी रो मुकाबलो। तरदारा रा तटका वाजं। दोनू अेक हुजं नै दवात्रणी चारं।

खडकं सू कल्लं री आस खुलो—लुगार्द मदं सू जवरो मुकाबलो कर रंयी है। राजपूत नै जोश आयो। सिराणं हाथ पडियो। तरदार हाथ मे आयी। वेमारी कठं ही परी गयी। लुगार्द लडे अर वीर पड़ं, अंडा तो पापी रामजी! मत घड़ं। छानो-मानो कल्लो रण-भौम मे पूगो। मल्लं दीठो, सोनल दीठो पण सोनल लडती जावें और विचारं—जे म्हारं घणी इण असुर नं मारियो तो म्हारी मंनत फजूल जासी। घणी ताना देसी मर्न रोज। मल्लो कल्लं सामं लपकियो जितेक तो सोनल रो अेक सांगोपाग हाथ मल्लं री गरदन माथं पड़ियो अर माथो कल्लं रं पगा मे। कल्लो घणी राजी हुयो। बहादर वीर 'सगत' सोनल री घणी वडाई करी पण सोनल तो नीची धूण करनं इतरो ज कैयो कै ओ संग आप रो परताप है; आप नीं आन्नता तो....

खतरो मिटण रो डोल वाज्यो। मिनल भाखरां सू पाखा घरा मे आया।

घन है सीमाई री 'सगत' सोनल!

पाटै कुण उतारसी ?

—मनुज राजस्थानी—

(१)

नौ-कूटी मारवाड रँ माय नागीर रो इलाको, जठे अमरसिंह राठौड हुया जिका री वीरता रा गीत अजे गात्र-गांक्ष मे गाथीजै ।

नागीर सू पनरै-बीस कोम दूर अेक गात्र; नात्र तरणाळ । हण गांक्ष नै देखणियां नै दिन माय ही हर लाग । ऊडे खाडे माय वसियोड़ी वस्ती । गांक्ष रँ ज्यांरू मेर बायां सू वाय भिलायां कर ऊभा । तरणाळ रँ सारै अेक नाडी । चौमेर ऊची-ऊची पाळ । पाळ सारै छोटी मिदर त्रिको अबे कदै-कदै ही खुल । पचमुखी बालाजी महाराज बिदादां माय बैठा तप करै । कदै-ई हण मिदर री सोभा, बयू वातां करो ; सुणतां-मुणतां नी घाको । जमानो पळट म्यो, मिनखा नै पेट-तिघाडी सू ही फुरसत कोनी ।

घाटैती जद हण मारग सू गुजरता तो दरसन करियां विना आर्ग नी वपता । घाटो मारन आग्रता जद सात बहूबां री मिलामी देवता अर परसाद षडाग्रता । कई बार फौजां रँ सार्ग भिडत हुयी पण घाटैतिया रो कई नी विगड़ियो ।

(२)

अेक बार तरणाळ सू पनरै-बीस ऊटां रो टोळो मिश्या री वेळा मारणाटबद आग्रतो हो । सार्ग सू गायां रो चापो गात्र बानी आग्रतो हो । गायां विचार नी जाय हण गातर ऊटां रा महरां बेतां नै धीमा करणं ताई राम खंब सी । गायां रँ सुरां सू अण-मिणती रा गोधुळी रा गोट उदता हा । पुरो मारग निजर नी आग्रतो हो । सार्ग रँ सारै-सारै अेक बळघां री गाथो ही । उण मे होय सुगायां बैठी ही । विणिया रँ सारै नै सारै मिहबाबनी अेक जणी बोली—हू तो अबे नचीनी हू, टाबरिया परनाय-पताय दिया, अबे आप-आप री लांभो अर ओडो, सोनबी रँ ब्याड माय साई स्टारै भाई मारो दियो नहो तो क्यान बनी जाबनी । उण उदोटी भाई रो मांभ मीधो सारै बैठी बनी रोजन लागी ।

मारग रँ सारै-सारै, केनें घाटै, मुई रँ बहासी कर्तिया अर बाबू मे लखार अर

फाँपें बूझकर सटकायां ऊंटों रा सन्नार धीमा-धीमा बँधें । उणां मांय सूं अंक न रोवण
री अन्नार गुणीजी । टगूकड़ा जोर-जोर सूं

धीचलें सन्नार दाफल करी । संगां आप-आप रं वंतां नें पाम लिया । दोय जणा
मदन्नै ऊंटों सूं हेठै उतरिया अर कनें आयनें गाढी नें शमायो अर बोलिया—पारं काई
ददं है ? दोनूं जणियां आपी-वाकी हुगी—ही जठै-री-जठै रंगी—बोली न चाली ।
उणां फेरुं धीरज सूं पूछियो—बोलो, यतातो पारं काई दुख है ? जकी तुगाई रोव
ही वा हिम्मत करनै बोलो—म्हारें मंगली रो व्यान्न है ; आयातीज नें फेर
है पनरें दिनां पछै, म्हारें कोई भाई नी है, म्हारी छोरी नें पाटै कुण उतारसी ?
उण रो मामरो कुण भरसी ? वा मामो जात्र लेयनें किण नें यतळासी ?

सन्नार बोलिया—बम आ ही बात है ! जा, आज सूं नू म्हारी बँन और म्हे
पारा भाई । तू चिंता ना कर । म्हे पाटै उतारसां म्हारी भाणजी नें । पण इण बात
रो वेरो किणी नें नी चालै, इण रो वचन दे । मंगली री मा बोली—म्हारें गरीबणी
रें कुण आवं ? काई ठा, ये कठै रा हो ? कोई जाण नी, पिछाण नी

दोनू जणां उण नें धीरज बधायनें कौल करियो और बोलिया—तूं म्हानें अवार
ही टीक दे । मंगली री मा कनें रोळी कठै ही ? फेर सोचनें उणां री कटार लेयनें अगूठो
बाडियो अर टीक दिया । दोनू सन्नारा रा नैण भर आया । सोनकी री मा रा काता
चिपग्या ।

असक्षारां ऊंटों नें जँकायनें झट रास खेची, अेडी मारी, और ऊंट सरणाट हुग्या,
पून री चाल, अर घणा आगं नीसरग्या ।

मंगली री मा आंगूड़ा पूछिया अर वळघां नें टोरिया । तरणाऊ आयग्यो । सोनकी
री मा सूं कौल करायो—तूं आ बात कंई नें ना कंयी, तूं म्हारी घरम री बँन
गांन आयो । मंगली री मा हरखी-हरखी जायनें मगली रा लाड करिया ।
आज काई बात है मा ! इत्ती राजी क्युंकर हुय रंयो है—मगली बोली ।
बस बेटी ! म्हारें हिर्रई रो चोझ उतरग्यो

(३)

आया-तीज रें पांच दिना पँली मगली रा हायघान लिरीज्या । रोजीना मगली रें
पीठी हुन्नै । छोरी रो रंग ऊधग्यो । आयातीज रो दिन आयो । जान आयो । सूनड़-तू-
तूज-तूज तू तू तू तुरही वाजी । आगलें ऊंट मापें बौद राभा; सारं सारं जानेती ।

ओठोहें आयनें बघाई हो । गोपूटो रा फेर हा । नापण वनड़ी नें न्हवा-घन्नायनें
पाटै ऊभायो । जद ताई मायरी लेयनें कोद्रें नीं आयो । लोणा में वालां हुन्नण लागी—
पाटै कुण उतारसी ? मगली री मा भगवान नें अरदास करी—गांशरिया ! म्हारें कीन
री लग्या तूं रातो । नैणां मूं आंगूड़ा दळई । धूपदें में हाप जोड़ियां बेटी ।
सुपायां आनमरी में दाने-दाने वातां करी—मा मायनें अर बेटी बारें

दोला रा ढमका । अगूणी कांकड गूजी । बंदूकां रा पड़का मुणीग्या । मगली री मा चेतो भरियो अर उठनै बारै आयी । वात्रळी-सी धारणै सू नीसरी । वागळ मे ऊटां अर बळघां-गाहिया री भीह—गाहियां सामानां सूं भरियोड़ी । लोग आका-आका रेंग्या । अक-दूजै कानो झांके, बोल नी नीसरै, मूंदै पाटी बघगी । इतरौ सामान तो राजा-रजब्राहा ही नीं दे सकै । पेटियां माय तारा-पूल-सलमै-सितारा सू जडियोडा ओढपा अर लूगडां रा वेस पळपळाट करै । मंगली रा मा ताई तारां रै जाळ री चूनड़ी । इमा याभा तो उण आप री जिदगानी मांय ना पँरिया ना देखिया । चौखळै माय चरचा हुन्नण लागी । गात्र मांय छोटै सू मोटै ताई आयनै मायेरो देखियो । घुघटै माय सू लुगाया झांके नै वातां करै—हीगळू रै पागां री खाट, ऊचा-ऊचा टोवणा-घुदारा—कांसी रा वरतण, पीतळ रा न्यारा घाळ मे वाटकै माय अक हजार रुपिया चांदी रा; सगां नै मिलणी रा न्यारा; पीळा पेचा अर पाच-पाच रुपिया जानेतिया ताई ।

लुगायां बघावा गाय । इत्तै मे दस-पनरै मदन्नं ऊटां रा सत्तार आया । दोय जणां आपनै मगली नै पाटै उतारी । मगली री मा नै चूनडो ओढायी । गोरा, पूटरा, गोळ चाद-सै मूदां मायै याकी भूछा । घूनडो रा फंटा बाधिया बका । दोनू मामा सूरज-चाद-सा आणणै मे ऊभा । लुगायां घुघटै सू झांके अर मन-ही-मन मरान्नै । मगली री मा गुड़ सू मूदो मीटो करायो । दोनू भाया वैन रै मायै हाय फेरियो । मगली री मा रो हियो भरीज आयो । नैणा सू आंमूडा डळकण लागा । भाया नै टीको करनै सोख दी । दोनू सत्तार साधियां सायै विदा ह्या । ऊटां रा पँकडा खणकिया । नेबरिया वाजी । धूंधी-धूंधी अन्नज घणी ठाळ ताई मुणीजनी रेंयी ।

अर मगली रै मायेरै री घात घ्याहूँ बूट मे पँलगी ।

माथे रो मोल

—गोपाल 'राजस्थानी'—

(१)

पुलिस न हरेक धानियो-भगानियो भला-भूँडा सबद कयबो करै, मनचाया हल्ला और थोछ्हा सबद बापरै, कलक और काळस रो टीको काढता धारै ही कोनी, मनघड़त किस्सा और असली वारदातां मे चाँन जँडो तानो-बानो बुणपो आम बात है। बाल-बात मे सालफीताशाही और पुलिस रो ज्यादातिया रो कच्चो चिट्ठी खोलियो जानै चार्ये उण मे कोई तुक हुन्नो मत हुन्नो। जनता रै सामे तो पुलिस रो काळी तसबीर ही पेस करीजियोडी हुन्नै जिकी न चिलकावणी हरेक रै बस रो बात कोनी। जुलम हुन्नै है, करायीजै है, बर अणजाण मे भो ह्य जाँनै है, आ बात न्यारी है पण दोषारोपण हर वखत बापड़ी पुलिस रै माथे करीजै है।

(२)

कड़ाके रो सरद रात, सू-सू करती सीतल हवा काळजो चीरे, लोग-बाग आप-आप रा घरों में जाय लुकिया है, मूढो ही बारै काढण रो हिम्मत नही हुन्नै।

घाईंतिया सू हारियोडै इण इलाके रो अक थाणो; पुलिस रा फास्टेबल पीरो दे रँवा हा, केईक सीया मरता गूदड़ा रो सरण जा चूका हा; पण इस्पेक्टर राज मेहरा और सहायक पटवर्धन किणी अड्डियोडै मामले रो तफतीस रो योजना बनाय रँवा हा। इत्त में ही घड़ी साढी इत्यारे रो ठोको दियो। मिस्टर मेहरा रो मोट घड़ी पर पूगी और अबे दोनू आप-आप रै बमरां कानी जातणो थाँनै हा।

इत्त में ही थाणे रे बारै जोन रै श्रक रो चील मुणोजी और बं दोनू जणा सात्रचेत ह्यर चीरणा ह्यग्या। बारै मोत रो छिया में दो आदमरुद मूरतियां निर्ग ब्यायो; दो लांबा, तगडा, मुस्टड, लमलां मारियोडा, हटा-बटा उणां बनें आया, दुआ-गलाम करी और फेर अक जणे गुलाबी रंग रा दो मनीबंग इचारें पार्शदार रै हाप में लताया और मुळकतें पकें मलाम करियो। बर हुजोडो बीजियो—गभाळो आप रो भेट-पूजा पार्शदारजी!

मिनपरीठ पचास-बचास हजार रा नोट; म्हे थांगू घोडी मदन लेक्षण अठे हजार हुया हा, म्हारो मकसद हे मडळो, आपणी आवरु रो; म्हे दोनू भाई हा शेंग अर जमीन; म्हे म्हारं काकं रं भेट रं सोही रा तिरसया हा, उण नं भारणो चाव्हा, यानी खून ! तरुनीम तो ये ही करीना, कारण कं ओ धारो ही इलाको है पण म्हे लोग इण मामलें मे माफ वचणो चावा, इण कारण म्हां सोचियो कं हालो, आप नं पैलां ही तवर दे देवा, अर्बं म्हारी विगत सुण लो—अं रुपिया घे राखो । इत्ता रुपिया तो धारं ताजिदगी नही घूटंता और ये इण तगला रं भरुसं इत्ती रकम तो जीवण मे भी भेळी नो कर सकोला । म्हारी अरज भा है, कान खोल'र सुण लो । काल दिन रा ठीक वारं वडिया म्हे उण चक्कोआळं सुरेदरसिध सू राड कराता; वो स्पट देखण नं धां कनं आवेना हीर और ये तफतीस करतो ही, म्हांनं दोपी अथवा जुलमी ठंरायनं हचकडी घालनं संर री आम सडक सू म्हारो जुलम दरसावता पाळा-पाळा ही ले जायीजो और वंदगानं मे बद कर दीजो, संर रा ख्यातीणा पंठदार मिनस भी जे जमानत देखण आबं तो भी जमानत मत लीजो, अळमा-मळसा टाळमटोळ करता रंयीजो, मजिस्ट्रेट अठे है कोनी, दो-तीन दिन घुळाय दीजो और काल रात रा म्हांनं वाम पूरो करण सारु फगत आघ घटं रं सातर छोड दीजो, म्हे उण ने मारुनं आपोआप ईमानदारी सुं आप री हाजरी मे हाजर हुय जावाला, धारं-म्हारं विच्वे राम-धरम है; आगं जिबी हुरंला, देखी जावला, डरजो मतो, धवरावण री जरुरत कोनी; की कोनी हुरंला, इत्ती वडो रकम तिरफ अघघटं री मोलत सातर दे रंया हा, बोलो मजूर है ? जे नही तो धां दोना रो भी परदार ममेत सातमो कर दियो जावला, आपणं टावरा रं भेळो जे जीवण वितावणो धावो तो म्हारो अंलाण सुण लो और म्हारं कंयें मुजव घालो ।

दोनू ही इस्पेक्टरा रं पगा हेठे सु जमी धरावण लागी । सीपाळें री एन मे भी पतीनो धायगो और बं दोनू-ही मुगा वणग्या, तास पुनगी और अेक-दुनं कानी जोवना रंयग्या । रंनं कूडो तो उनं ताई । जे हत्या करण म मिटोभवन कर सें तो यकारण सगरी, मिर पर खून रो, और मुडवो जे मुलग्यो तो बदनामी अठे खारी, जेठ-जावरा, सोवरी सु छुट्टी और वणदीटी बानुनी वेचोडगिया मे उटतणो परं । संर ! अवीनो रंयणो भासो, अनाई ह्कारं रो लखण हूवो ।

दोनू मुल्कार अठे सु वरीर हुग्या । पण तारं वानंदरां रा मुग हात हा । वं निसावै कोनी वर साबिया । आ घटना उणा रं मयज मे प्रजनवावड निमाण वण रंयगी ।

(१)

दुबं दिन हीं वारं वडिया होम-अमीन वारं रे मजब, सुंटा मे मारवा वं दिलो । ओ कोनी सु लखणसर हुवाव वडियाव लेटनं वाने दुंरतो । हांग वाने...

पुलिस रो दारो सार्ये मे तियो धोर धे गंग-भगीन में गिराफार करण में उणां रं परो गया । दोनू जगा रं बेड़ियां और हथकड़ियां पास दो धोर गिरं बजार रं संत मू उणां नं पाळा ही पुलिस-स्टेशन लेगया । गहर में पातां रो बजार गरम हुयो । सहर रं निरा ही मुगदियां जमानत री मनख्या दगारी । पण पुलिस तो उणां नं छोड़िया ही कोनी । दिन भर दोनू भाई जेळ मे बंठा रेंया और रात रा वारै रं मुजब धानंदारा उणां नं आपघटं रं वगां छोड़ दिया । धे बठे मू मीपा बजार रं रोत गया और फरमी लेयनैर धान पड़िया । पणा हेरें पास बांध सी जकूं सू पणा रा निगाण नीं वणं और आपणे सागो कारकं रं घेरे भाई रो कतल कर दियो और पाछा जावन जेळ मे बंमया ।

(४)

इदरीस नहरजाळे रोत मे थकलो ही सोवतो । रात भर तो किणी नं ही ठा कोनी लागियो इण कारण कोई कोणी बोलियो । सत्तार रा जद उण रा लुगाई-टावर रोत गया तो इदरीस री वास रा काता-कता करियोडा, बिलरियोडा देखियर । गंग जणा बुरकण डूकिया ।

सगळें इलाकें मे हाको-सो फूट पड़ियो । पुलिस में रपट करीजो । तपतीम हुयो पण नांन-मात्र री । जनता मे अणूतो भी फैलियो । काई जणा मूं पूछताछ करीजी, सूबं मे घर-मेकड हुयो पण कठेई सुराक कोनी लागी जणं राज-सरकार जनता री जी जमातण नं ओं मामलो सी० बी० आई० नं सूच दियो ।

मजिस्ट्रेट रं आतर्ण पर चीर्ये दिन शेल-अमीन री जमानतां हुयो ।

पुलिस-विभाग और सी० बी० आई० अकास-पताळ अक कर दीना, पण ठा कोनी पड़ी । कतल करणिये इत्ती हुसियारी वरती कें तारे कोई सक-सूबो अयत्रा प्रमाण कोनी रंक्षण दियो ।

अवे सी० बी० आई० री गुप्त जांच चाली । सी० बी० आई० रा सीनियर अस० पी० मिस्टर अग्निहोत्री इण नतीजे पर पूगिया कें असली हत्यारा तो शेल-अमीन ही है, इण मामलें में पुलिस रा पजा भी भेळा है, पण सबूत विना किणी नं ही दोषी अयत्रा जुलमी ठेरावणो उणां रं वस रो रोग कोनी । इण कारण धे जुलम करणिया नं सजा करावण मे कामयाब कोनी हुया ।

दिनचर्या

—भंवरलाल सुयार 'अमर'—

(१)

पसप्राडो बढलता-बढलता उयपग्यो जर्ण उण हाथ लावा करनं पडघां-पडघां ही जोर सू आळस मोडघोत्रोर उण रं मूडें सू निकळग्यो—हाथ राम ! फेर सोच्यो, अवं तो उठणो हीज पडघो ; सात वजणआळी है, अवं जे नी उठघो तो अबार जी-मा री हेलो गुणीजनी—अरे ! टंमगर उटीजं वळोजं कोनी ? घोळं दुपारं ताई पडघो रवं है, साट माव । और बो भचकं सू उठ'र विद्यात्रणे मायं वंठी हुयग्यो ।

घोटो'क मोच्यो, लिवाड मे मळ पडग्या । फेर उठ'र सीधो लोटो भर'र होळंमीक निमटण नै टुरग्यो । बारणं सू वारं निवळण लाग्यो'र का मा रो हेलो गुणीग्यो—अरे ! चाय तो पी'र जा, मैं पारो काई विगाडघो है जिको तू आजकाल मैं सू ही बरहो-बरहो रंरण लाग्यो । हेचो मुण'र बो ठैरग्यो । पेर घोटो मुळकरं बोल्हो—नही मा ? इसी कोई बात बोनी, पेट मे घोटो भरहा पारं है दण खातर चाय तो हूं पायो धाय'र ही पीमू, तपेलो धीरा मे घर दे, गरम रवं ग्यो ।

निमटण आजको बो सगळें ररनं जाय री स्थिति मायं मोचनी रंयो—अरं तो काम धानणो दोरो है । हू तो बोनी तरं उयपग्यो । बटै-न-बटैई तो काम-धधो जोडणो ही पडती । जी-मा जे रंने-धीनें सू बो रपिया-गईना बच ड है तो दुकान मोम'र घंट जावू । दुकान री बात आजना ही बो आ मोचण मे मस्त हुय जावं है दुकान विसी टीक रंती । बटपीस री दुकान हुवं तो टीक रंवं । नही, बटपीस नां सू मणियारी री दुकान टोक रंती । अथवा तेल-गून री पसारी री दुकान रीन सू । पण बो मोदो तो बेटणो गुणवत्त हीज है क्योवं दण मे परंता बोन लाई । इना रपिया तो जी मा बटै मू लामी ? आगा रं तो सगळां सू मग्गो कोदो बो हीज बेटघो है बटैई चाय री दुकानरी मोम'र घंट जावां । पण जी-मा बंती—ओ हीज घोट है काई पारो ? तरे दण लागर भणायो-मुणायो ? बी० अ० पास बरा ही अवं बोओ-नी लोकरा ही जो मं । अतस मे बी० अ० पास चाय री दुकान बरती तो दुका मोम ही टोट कमनी । पच जे बोतो-मोच होट्य हुवं तो बरिदा रंवं । होटस मे तो सारंग बण है । कनक-वन पाच-दग हकार बरं हुवं अरं काई बान बने । एरो तो दण ! विसी विना मे

फसग्यो । बिजनिस् आपा रँ बस रो रोग कोनी । जी-सा नँ कई जणा बकार'र देख लियो । उणां तो हाथ झड़का दिया । जद आपां कनै पईसा ही कोनी तो क्यों बे-फालतू इत्ती वातां सोचा । अक वात तो हुय सकै है कँ बंक सू आपां खिया उठा लां । बंक आजकाल काम-बंधे और बिजनिस् सारू लोन देवै है नी । पण लोग-बगल कँवै है, बो ही हरेक नँ को मिलै नी । घर री प्रापटीं हुवै जणै मिलै अयत्ता कोई चोसी पांचआळी सिफारस हुवै जणै मिल सकै । कई लोग कँवै है इण में भी घूसखोरी बानै है । आपां कनै तो की चीज कोनी । और जे सिफारस ही हुवै तो नौकरी ही हाथ आ जावै नी ।

(२)

निमट'र पाछो जाततो वो खाषा-खाषा पग उठावै । सोचै—जे मोडो हुयग्यो तो अवार जी-सा लटसी । कँसी कँ जावै जिको आगहो हीज जावै, कठई जातो पाछो टंगसर आ चावै किसी पोल पडी है, काम ना कोई बंधो, कोरो बळ्य हुवै ज्यो दिन भर ईन-बीनै रळतो फिरै । पाछो घरै आय'र वो हाथ भूठो घोर'र घाप पीरै और घाप रँ कमरै में जा'र कोई उपन्यास हाथ मे लेवै । रोटी हुबण नँ उडीकै । पोष्यां फिरोळता-फिरोळता वो उपन्यास नँ तो छेड़ै नावै और स्लैट माडॅन री पोथी 'चित्त छोड़ो गुन से जीओ' ऊठा लेवै और पढण मे मस्त हुय जावै । उण नँ पढतो-पढतो पोथो ताळ पधै ध्यान आबै के स्लैट माडॅन रो ब्रेक और पोथी है नी आपां कनै । और वो पाछो पोष्या ईनै-बीनै करण साग जावै । छेकह उण नँ अक दूजी पोथी साप जावै—'साधनता कौंगे प्राप्त करे ?' उटाय'र मार्च मार्च आहो हुय'र पढण साग जावै । वो कई वातां पढै ज्यों—'वाक्याटू बनिये, चिन्ता अक शत्रु, निर्भीक बनिये आदि । इत्तै मे अक धीरंग आबै 'इटरप्यु मे साधन कौंगे हों ?' । उण नी वो सब ध्यान सू बाबै बजोर'र वो चित्तार्द इटरप्यु दे चुकयो है पण कठई सलैकट वो हुय सकयो नी । उण वो भेल तो पढतो भोग बकरी मसग्यो ।

पोथी पढण मे मस्त हुय जावै । मा रा दो-बीज हेवा गुणीअँ, पण पोथी नी छोड़ण रो री को हुवै नी । देखक मा गुर आय'र बंरवै—'श्रीम भँ कनी । तित्ती ताळ हुयगी बने हेरा मारणा । रोटी टरी हुवै है नी । वो गुण'र बगल-गुणी बग दँ । जणै मा दुलर कँवै—'गु श्रीम भँ कनी र ! हु मने चाई कँऊ हु ? पारै तिल की रीम है ? मै ना मने हु की मा जी को बंदी नी । जणै को चित्त ही कनै पोथी नँ छेड़ै मागे और छोड़ण नी बेदु बानै । बा जणै है के सबे पावीं अटारी नाम'र श्रीमल नी नी बेदुपा के छाप'रान दिव बानी अवन । आदल गुणना पढणी ।

मा कहे के कोना-कोना लय और अक रंगी गुण देवै । राई जाय'र ई मया की पूरे कति । बेदुल ना रकण हु पूरे अवन बानै । पण बा बरौ-आरु बहाना जेके । कथा कहे के रूई की पूरने सबे का बरौनी ना गुणनी नँ छेड़ै तियाई बर बहाना किले ।

वो जीमता-जीमता ही सोचें—जीवणो विरया है। रोटी ही दंग री को मिनै नी। ओ ही जे कमावतो हूयू तो चोपडपोठी रोटी मिलै, और वा ही दो नोरा काड'र। अबार तो कोरो टंक टाळणो है। आ ही मिलै तो है। मनै तो गुद नै ही गरम थात्रं। पण और काई करू ? नौकरी तो मिलता-मिलनां मिलनी। तो ई अबै आपां नै कीं-नकी तो काम करणो पठनी। इया किताक दिन पार पठगी। सोचतो-मोचतो वो दुगो हूय जावै। इत्तं मे मा दूबो रोटी घाळी मे नाप दी। कर्ण रोटी गतम हूयगी, टा ही को पही नी। रोटी घाळी मे पडता ही चेतो हूयो। सोच्यो—मना कर दू पण को कर सबयो नी बयो कें अबार मना करता ही मा उपदेश शाडणा सरू कर देसी। कंसी—काम तो हाय थावतो-मो आसी, रोटी खावणो छोडपा पार थोडैई पडसी।

दूबोही रोटी किया ही करनै चिगळी। और हाय धो लिया। मा कंनती ही रंमणी—मळ मे लं, भूखो तो ना उठ। वो झट आ कैय'र ऊभो हूयग्यो कें आज मनै दो-तीन ठोड जावणो है। ऊंनावळ में हूं। वेगो उठण रो खास कारण तो ओ है कें वो आजकाल मा रें उपदेशा और गाळपा सु डरै। सोचै कें अबार कंणो सरू नी कर दे कें अबै तो कोई काम-घघो देव। तू अकेलो तो है कोनी। लुगाई है, टावर है। पारै छोटा-छोटा बेन-भाई है। घर मे दम-वारै जीव हा। धारो बाप ही लाई कियाई पलाई है। तनै ही पबदघो ताई पढा दियो। परणा दियो। अबै काई सारी ऊमर राटपो करना ही रंसी ? बूढा तो हूयग्या। तू खुद पडपो-लिख्यो है, कठै ही कोई घोली-नी नौकरी टाडो कर लं। करपा विना किया चलसी ? बेन परणावणी है, बाप री तो सरघा टूटगी अबै। वं जे कर्णैई रीसा वळता की कैय देखै तो तू रीस ना करपा कर, कंयीज ही जात्रं। मा अं वाता घणी लाड सु ही कंनै पण उण नै अं वाता सुदावै कोनी। मुणतं-मुणतां काम पकग्या। अबै जदई मा मीठी-मीठी हूय'र बोलणो सरू करै तो डर लागण लाग जात्रं। हूय सकें उपदेश नीं तो गाळपा ही सरू कर देखै। अबार कंसी—ना तो तू कमावै और ना हो पारी कीतणी काम करनै छाती ठारै। इण मा सु खोलो हूवै ये धारै ग्यारा-जुदा हूय जावो। कमावो और खावो। ग्हाने तो पारी कमाई री चाडना कोनी। धापगी हू तो घामू। इण वारुनै धो आजकाल मा कर्ण पणो को बंटे नी। वेगो-सोक विड सुदा'र भागण री कोसीम करै।

(३)

कमरें मे जाय'र गायो-न्यापो गामा-सला पेरै और आप-री बायरी ममाळै। उण मे दुबपोदा आज साक करणआळा काम देवया और हार्डबुल रो प्रमाणपत्र, मार्क विगट और बी० अ० री डिग्री सेव'र अंक बायद मे साबुटवेनी सु गंउ-सोउ सवेट ली और आप री लुगाई कानो टढी मोट सु देख'र निमहारो नापतो घर सु धारै निबळयो। सारै सु मा रो हेवो लुणीवै—गिड्या धरै टैम सु ही आ जाई, बांधी राम थाव'र ना आई। धारै निबळना ही उण रें सुई सु सगुटा देवा री अब निबळती।

पैसा को देखी-देखावा में वो मानना ही भी पण भात्रबाप तो बाबाददा मयदा देप्रपादा में भोके है । इदमानकी में तो दिन-राग धारें । इदमान-पादोमें ही बंटे कर लियो और जर्ष जर्ष ही उण में उपपन्न साग जावें । बारें बारें आर्षे दो बरणी रो उण रो सोरो गूढ़ में बंटी रमं है । भाटा गा रंयो है पण सो मना बो कर मर्के नी । ताड करणी पारं पण करं बोनी बयोर्क पाशोगन भाटा साप्रगा देग'र राजी ह्य रंयी है । पादोगण उण नै कंठं—पारो सोरो गूढ़ गावें है नी रं ! मना बो करं नी ? सो मुण'र गुट्टकं और टुर जावें ।

पर सू निबळता ही पण पुस्तकासय कानी मुक जावें । बंटे पूण'र बो ताडा अगवार देगं और ताग तीर सू रिता त्यान अथवा बंकेतीयाळं बालम नै परं । सपळा अलवार फिरोळ सं । इयां उण नै अगरेजी सू पिड़ है पण वेकेंती बो अंगरेजी रं अलवार में भी देग सं । दो-तीन जानां लिगियोडो देरं कं अंजटां रो जरूरत है । पण अं मणी-सोरु जागादा तो दिल्ली में है । पंला भी कंई दफं अंलाई करपो हो और इटरव्यू भी काल हुयो हो पण दिल्ली जाग'र फिरापो लगाय'र कांय सूं देवीजं इटरव्यू ? खाली गाडीभाडूँ सू ही तो पार को पड़े नी । की साक्षण-बीक्षण नै और रंक्षण सारु भी चायीजं । सीधो अंपोस्टमेट सेंटर तो आन्नं बोनी । इन विज्ञापनां नै फालतू समझ'र बो आर्षे पढे तो देखे कं कंई टूँड अध्यापकां रो जरूरत है । अनुमत्री अमत्ता लडकी हुसी उण नै पंल । अंकर तो देग'र राजी हूँ पण आगली लंण पडतां ही माथो क्षाल'र बंठ जावें । बो ना तो टूँड है और ना ही लडकी है । और जागावां भी दिल्ली, कानपुर और जयपुर में है । वं भी प्राइवेट स्कूलां में । अनुभक्त कठें सूं आन्नं ? कोई नौकरी देवें जणं अनुभक्त हूँ !

(४)

उण स्थानीय अलवार में अंक जानां लिहयोडो देखयो—काम सीखणो चान्नं उण नसमुद्रकां रो जरूरत है; घेतन योग्यता सारु । पडतां ही उण ठिकाणो लिख लियो । आज इण सूं पकायत ही मिलणो है । अंक-आय ठिकाणो और उतार'र बो सीधो स्थानीय अलवार-आळें रं अठं जाय पूर्ण । जा'र घटी बजावें । घटी मुण'र प्रकाशकजी बारें आया । प्रकाशकजी नै देल'र बो नमस्ते करं और उणां रं लारं ही माय बड़ जावें । उण नै पुरसी माथं बंठण रो इसारो करभे वै पूछें—करमाथो, कियां पधारणो हुयो ? वो कंठं—हूं आप रो विज्ञापन पढ'र आयो हूँ । नौकरी रो जरूरत है । इण माल हो बी० अं० पास करी है । बी० अं० पास गुणता ही अंकर तो वं विदकम्या । पण पादो की सोच'र बोल्या—ठीक ! तो ये काम सीखणो चात्रो हो ? इता पडपा-लिह्या हुय'र भी इतो छोटो काम कर लेतो ? वो उपळो देवें—मजबूरी है साव ! करणी ही पडसी । प्रकाशकजी सोचं कं मुरगो ठीक हाय आय रंयो है, फासो । मजबूरी रो फापदो उठावणो चायीजं ।

तो बाल सू ही आ जाओ आप । दिनूँ-दिनूँ तो आप नै गहर मे अखबार बाटणा पढ़ेला । साइकल तो हूँला ही आप कने ? क्यों ? और दिन में आप नै हूँ महीन रो काम सिखा देसू । कई दिन कपोज करणो सीख लो और महीन रो सफाई किया करीजे, किसा-किसा पाटे हुँए इण वाता रो जाणकारी कर लो । साल-छत्र महीनो मे हूँ आप नै टुँड कर देसू । ये तो पढपा लिख्या हो वेग हीज सीख जाओ । राम रो कोई छोटी और कोई मोटी ? भोत-सा बडा आदमी हुया जिका बूँट-पालम करी और अखबार बेच्या हा । आप तो धीरे-धीरे पत्रकारिता करणी सीख जाया । तो बाल सू पक्की रेयी, क्यों ? हूँ काल धाने उढीकू हूँ, भलो !

वो मन मे राजी हुयो कं आज कुण ही आ तो कैयो कं काम है । पण खास बात तो रैय हो गी । उण सिमकत-सिमकत पूछधो—पर्ईसा और कित्ता कोई देतो ? प्रवाणकजी, जिका पत्रकार भी हा, उण रे सामने देखण लागग्या । बोल्या—पर्ईसा रो कोई फिर है धाने ? कई दिन काम सीखो ; आप ही दे देसां । वाजबी हुमी जित्ता दे देमा । राखां को नी ।

फेरु हिम्मत करनं वो पूछे—तो ई कित्ता देतो ? बताओ तो सरी ।

—अबार तो आप नै तीस रुपिया महीने रा दे देसा और काम आप नै मुफत मे सिखासां ।

—तीस हीज ? अं तो भोग कमती है ।

—कमती कियो है ? अग्यार तो मुसकत सू पचास परां मे वाटर आणरो है । पूजो काम जिको धाने आहं बोनी । वो तो भीरमो जणे पार पढती । अं तो ये पढपा-लिख्या हो जणे हूँ महीनां रे हाय लगावण दू हूँ और काम सिखाऊ हूँ । अणपर नै तां हूँ कोई ही देखाळ बोनी । उण बनें सू अखबार मुफत बटवावतो जणे महीन रे हाय लगावण देखतो । ये बिना नां बरो, कई दिन काम सीख लो, आप ही घारा पर्ईसा बघा देसू ।

दोनां मे बोटी-भोत खेबा-लाणी हुँए और छेबड़ पचास रुपिया महीने रे हिमाव सू बात लं हुय जाहं । और वो आ बोर बडे सू टुर जाहं कं हूँ काल ग्टारे जीना नै पूछ'र आ जासू ।

(२)

बडे सू निबजनां ही उण रा पय सदा रो आदन रे मुनाबिब सोषा गोजनर-दणर बानी गुट जाहं । रनें मे पेना तो पत्रकारनी नै गण्णा बाई देण सोबे कं मही नां सू तो पचास ही बोसा । बीन-बी तो सीप सू ही । डाउरेट कुन रे मण्णा मे भी तो दणा होब विले है और दसकन पूरे दो लो रुपिया बाई बग्णा पडे है । कई ह्मिट सू सोबे और आप मे टीब ही पाहं । बने-बनेई सोषा बरे है कं मण्णा जंग ही आतो बीब है । एण सैम मे आऊ परो लो अंम० अं० बर सू और बादे दणक बर

सकूँ हूँ । पण उण सारू तो ट्रेनिंग करघोड़ी हुअणी जरूरी है । और प्राइवेट स्कूल में तो हालत खस्ता हुय जातें । काम ही ढोढो और परईता थोड़ा । ठीक है, काल सँ ओ हीज काम करसू ।

विचारां-ही-विचारा में वो कर्ण रोजगार-दफतर पूग जातें और कर्ण नोटिस-बोर्ड रें आगँ ऊभ जातें, उण नैं ठा ही नी पड़ै । नोटिस-बोर्ड रें माथें कई आर्डर पड़ै । मदा ही वो आ सोच'र अठें आ जातें कैं हुय सकैं कोई नव्वी नौकरी री जागा निकळी हुअैं और वो विना अनुभव और विना सिफारस ही ले लियो जातें । और वो सोच ही कई सकैं है ?

सहसा उण रो ध्यान आप री डायरी रें उण पानें माथें जातें जिकें में आज रें कामा री बिस्ट है । हा ! काल तो अंक इंटरव्यू है नी । इण वास्तैं डिगरी और प्रमाणपत्रा री मही प्रतिलिपिया करावणी भी तो जरूरी है । टाइप कृण रें कर्न कराऊं, मोल 'स करा को सकूनी—आ सोच-सोच'र वो पाखी पुस्तकालय कानी टुर जातें । रस्तें में वो अंक बियेटर में बढ जातें । किसो खेल लाग्यो है, खेल नहीं देख सकू तो पोस्टर तो देख ही लू । 'उपकार' फिलम लाग्योड़ी दीसैं है । जे कोई भायलो चेतें तो देखीज जातें नहीं तो मुसकल ही है । पैला पढतो जित्तें तो भळें ही कर्णई देखीज जातती । अब तो छात्री पोस्टर देख'र ही जे खपावणो पड़ै । पोस्टर देख'र वो पुस्तकालय आय'र शाति सू बँठ'र हाथ सू टू कापी बणार्वैं । वो सीधो पी० डब्ल्यू० डी० पूर्ण और आप रें भायलैं नैं ले जा'र देखैं कैं अ० ई० अ० रा दसकत तो करा'र ला दैं । और वो फट-सू दसकत करा'र ला देखैं । आज तो उण रो ओ काम सोरें-सांग बणग्यो । नहीं तो टू कापी पातर ही कित्तें दफतरा रा चक्कर काटना पड़ै है । उण रो जी जाणें है ।

(६)

अबें वो कोती तरें बसग्यो । पीडिया बूखण लाग्यो । पाळो हीज है नी । अबें मिश्रा पड़यो जाण'र वो थोड़ी ताळ बाग में जाय'र बँठ जातें । फाटोड़ा गेटर छेडें नाम'र दूब माथें आठो हुयग्यो । अंतर तो आंखों आठो अघारो हुग्यो । पछें भोत ही आराम भंगूम हुबें । कई गरी-गरी सासां लेय'र वो ईन-बीन निजर नामें तो इवका-दुवका सोय-मुगाई बाग में घूमता दीगें । वो आं सोणा नैं देख'र मूंडो मचकोड़े और घुणा मूं पूत देखें । अं ही सोई इनगान है ? इणा हीज भ्रष्टाचार पैला राख्यो है । मगड्या रिगबतगोर है माड्या ! हराम री कमाईप्राडों नैं ही दती फँसन गूसां है । अं चातें तो मने कई ग्हारें तिमैं कित्तें ही लोणां नैं नीकरी लपत्रा सकैं है । पण अं तो आप रें माई-अतीवा नैं ही रखातें है । नीकरी तो प्रडयो रेंपो, अगां नैं तो टूण ही को निरैं नी । इणा मांय मूं हरेक आदमी चातें तो बँय गट्टें है बं ग्हारें थोरी-थोरी नैं भणावणो है ।

विचार भुंवाली खावे । अर्बं तो समाजवाद आयां विना देश रो भलो को ह्युय सके नी । समाजवाद आसी, अंक दिन पकायत आगी । जणें इणा री हालत सस्ता ह्युय जासी । जो चावें कं आं सगळीं री सपत्ति सोम लूं थोर इणां नें पीडित करूं । पद्ये अं ही नोकरी खांतर दर-दर भटकें जणें इणां नें ठा पडे कं म्हे लोग भी इनसान हों । जठें जावें जठें ही पईसो और सिफारस दो ही चीजां चालें है । और आ डिगरी ? साळी की कार री फोनी । इण नें प्राप्त करण सारू चन्नदे वरमा ताई सल मारी । पण हाय काई भायो ? आ पडाई काई काम री जिकीं रोजी-रोटी रो प्रबध नी कर सकें ? हूं तो कौतू हू अं सें विश्वविदपाठ्य बद करनें ताळा ठोक देवणा चायीजें । अषडा इणा मे कारखाना खुल जावणा चायीजें जठें काम-धधो मिलायो जावें । सोचता-सोचता उण नें रीस आ जावें और रीसा बळतो बो डिगरी नें मसळ नामें । पण तुरत चेतो ह्युय जावें कं अबार फाड़ देतो, चन्नदे वरसा री मंनत सू कमायोडी उण डिगरी नें ।

कालेज रें दिना री याद आ जावें । कित्ती मौज ही कालेज मे ! काईं भायला हा । मोहनसिध तो अंपरफोमं मे सलेक्ट ह्युययो । बाबूलाल कलेक्टरेट मे बाबू बनयो । सें घघंसर लागया । लका मे दाळडी बो हीज रेंयो है । काईं आगं पड रेंया है और बी० अेड० री ट्रेनिंग कर रेंया है । काईं करूं ? जो-सा जे हा भर लेता तो हू ही ट्रेनिंग कर लेवतो । नोकरी री तो गारटी है । मिलो चार्ये यडें प्रेड मे ही । काईं सराब हो । पण अवार तो हू बक मे चपडासी तक लाग जावणो चावू हू । पण बो भी किसो सोरो काम है ? इण रें लायक ही बो रेंयो नी । बठें ही आठवो पास नें लेवें । हू तो बी० अे० पाम हू नी । धणी योग्यता भी अयोग्यता सावित ह्युय जावें । आ अबें टा लागी है । आ सोचना ही बो देश री शासन-प्रणाली और शिक्षा-प्रणाली माथें गभीरता मू सोचण लाग जावें । इण शिक्षा-प्रणाली मे तो परिवर्तन ह्युयणो निवान जरूरी है । इण रो परिणाम है नवमलवाद ! जद आदमी नें काम-धधो ही मही मिलें तो बो और काईं करें ? सहमा विधारा नें शकतो सार्गं । अरे हा ! काल अंक इटरध्यू मे भी तो जावणो है ।

इटरध्यू । हा ! काईं टा कित्ता ही इटरध्यू दे दिया हूमी और कित्ता भट्टें देवणा पडही ? बं हीज लागी बाना पुदीत्रसी । नाब विना रो नाब धधो ? रीयो पूटयो है साळी रो । अबें काईं वलाड ? जे धधो ही करतो हू वतो तो अडे काईं धूट सावण नें आवणो ? आगं पूटनी अनुभव ? अनुभव पद्ये बड करतो ? अनुभव कारण रो काईं मोहो देखें जणें ! का भा रें पेट मे ही कर मेवतो ? पेर पूटणी हाई।वृत्त मे दिवीजन ? ... नदर कित्ता परमेट आया ? वरणां बोयो होवयो ... ? अर ! अं ही काईं सवाण है ? सोणावो किंसां बड निजो । सोवावें बानी जवें पडाईं होव ही । आजकाल काम काईं बरो हो ? हूह ! कके काईं बरम हू ? अं ही रेंने रेंने इटरध्यू देऊ और कित्ता ह्युय-ह्युय करें बड बरो । इण सगळीं बाण रा उचळ देवणे देवणे बवया ।

सकू हूँ। पण उण गारू तो ट्रेनिंग करपोड़ी हुमनी जरूरी है। और प्राइवेट स्कूल में तो हासिल राहता हुय जातें। काम ही थोरो थोर पईगा थोड़ा। टीक है, पान सू ओ हीज काम करसू।

विचारा-ही-विचारां में वो कर्ण रोजगार-दणतर पूग जातें और कर्ण नोटिस-बोर्ड रं आगे ऊभ जातें, उण नं टा ही नों पढ़ें। नोटिस-बोर्ड रं मायं कई आहंर पडें। सदा ही वो आ सोच'र अठं आ जातें कं हुय मकं कोई नव्नी नौकरी री जागा निकळी हुतें और वो बिना अनुभव और बिना सिफारस ही से लिपो जातें। और वो सोच ही कई तरुं है ?

सहसा उण रो ध्यान आप री शायरी रं उण पानं मायं जातें जिकं में आज रं कामां री लिस्ट है। हा ! काल तो अंक इटरव्यू है नी। इण वास्तं डिगरी और प्रमाणपत्रा री सही प्रतिलिपियां करारणो भी तो जरूरी है। टाइप कुण रं कर्न कराऊ, मोल 'स करा को सकूनी—आ सोच-सोचा'र वो प.द्यो पुस्तकालय कानी टुर जातें। रस्तं में वो अंक थियेटर में बड़ जातें। किसो खेल लाग्यो है, खेल नहीं देख सकू तो पोस्टर तो देख ही लू। 'उपकार' फिल्म लाग्योड़ी दीखं है। जे कोई भायलो चेतं तो देखीज जातें नहीं तो मुमकल ही है। पंलां पढती बित्तं तो भळं ही कर्णई देखीज जातती। अबे तो खाली पोस्टर देख'र ही जी घपारणो पड़ें। पोस्टर देख'र वो पुस्तकालय आय'र शाति सू बैठ'र हाथ सू टू कापी बणातें। वो सीधो पी० डब्ल्यू० डी० पूर्णं और आप रं भायलं नं ले जा'र देखें कं ओ० ई० अंन० रा दसकत तो करा'र ला दे। और वो फट-सू दसकत करा'र ला देखें। आज तो उण रो ओ काम सोरं-सास बणग्यो। नहीं तो टू कापी खातर ही कित्तं दफतरां रा चक्कर काटणा पडें है। उण रो जी जाणं है।

(६)

अबे वो कोशी तरं थकग्यो। पीडियां दूखण लागगी। पाळो हीज है नी। अबं तिइया पड़गी जाण'र वो घोड़ी साळ बाग में जाय'र बैठ जातें। फाटोडा रोटर छेड़ं नास'र दूब मायं आडो हुयग्यो। अंकर तो आस्था आडो अधारो हुग्यो। पछें भोत ही आराम मंसूस हुतें। कई गेरी-गेरी सासां लिय'र वो ईने-बीनें निजर नासं तो इक्का-दुक्का लोग-लुगाई बाग में घूमता दीखं। वो आ लोगा नं देख'र मूंडो मचकोई और घुणा सू थूक देखें। अं ही कोई इनसान है ? इणा हीज भ्रष्टाचार फंला राख्यो है। रागळा रिसवतखोर है साळा ! हराम री कमाईआळा नं ही इत्ती फंसन सूखं है। अं चातें तो मनं कई म्हारं जिसे कित्तं ही लोगां नं नौकरी लगता सकं है। पण अं तो आप रं भाई-भतीजां नं ही रखातें है। नौकरी तो अळघी रंयो, आपा नं तो टूणन ही को मिले नी। इणा मांय सू हरेक आदमी चातें तो कंय सकं है कं म्हारं छोरी-झोरा नं भणावणो है।

विचार भुंवाली खाईं । खर्च तो ममाजब्राद आनी बिना देन रो मरो को हुन के नी । ममाजब्राद आनी, अंक दिन पचावन आनी । जणे इणां रो हानन मग्ना य आनी । जी चारुं के आ मगलां रो सपति सोम मू और इणां नै पीडिन बरु । खे अं ही नौकरी खांनर दर-दर भटकै जणे इणां नै टा पड़े के म्हे लोग भी इनमान ह । अठे जाईं जठे ही परसो और मिफारम दो ही चीजां चाने है । और आ डिगरी ? साळी बीं वार रो बोनी । इण नै प्राप्त करण सारु चब्रदे बरमां ताईं क्षम मारी । पण हाथ बाईं आवो ? आ पडाईं काई काम रो त्रिकी रोजी-रोटी रो प्रबप नी बर सके ? हू तो केंद्रू हूं अं सै विश्वविदपानय बंद करने ताळा टोक देवणा चाचीरं । अथवा इणां में कारखाना गुल जावणा चाचीरं जठे काम-धधो मिगायो जाईं । सोचता-भोचता उण नै रीस आ जाईं और रीसां वळतो वो डिगरी नै ममळ नागै । पण तुरत बेतो हुय जावे कं अवार फाड देतो, चब्रदे बरसा री मंनत मू कमापोदी उण डिगरी नै ।

बालेज रं दिना री याद आ जाईं । किली मौज ही कालेज मे ! कंई भायना हा । मोहनसिध तो अयरफोर्मे मे सनेवट हुपगयो । बाबूलाल कलेक्टरेट मे बाबू बगमयो । सै घबेवर लागग्या । लका मे दाळदी बो हीज रेंयो है । कंई आगं पड रेंया है और बी० अेट० रो ट्रेनिंग कर रेंया है । काई करु ? जी-सा जे हा गर लेता तो हूं ही ट्रेनिंग कर लेवतो । नौकरी री तो मारटी है ; मिलो चारुं धईं ग्रेड मे ही । काई सराब हो । पण अवार तो हू बरु मे चरवासी टक लाग जावणो चावू हू । पण ओ भी बिगो मोरो काम है ? इण रं लायक ही को रेंयो नी । वठे हीं आठवीं पाम नै लेवै । हू तो बी० अेट० पाम हू नी । पणी योग्यता भी अयोग्यता सावित हुय जाईं । आ अर्बं टा लागी है । आ मोचता ही वो देन री शासन-प्रणाली और शिक्षा-प्रणाली माथे गभीरता मू मोचण लाग जावै । इण शिक्षा-प्रणाली मे तो परिवर्तन हुवणो नितात जरूरी है । इण रो परिणाम है नवमलवाद ! जद आदमी नै काम-धधो ही मही मिले तो बो और बाईं बरे ? महसा विचारा नै झटको लागै । अरे हा ! काल अंक इटरव्यू मे भी तो जावणो है ।

इटरव्यू । हा ! बाईं टा बिना ही इटरव्यू दे दिया हुमी और कित्ता भळें देवणा पवती ? अं हीज लागीं बाजा पूर्वीजगी । नाव ... रिता रो नांव धंधो ? हीयो पुत्रयो है साळा रो । अर्बं बाईं बत्ताऊ ? जे धधो ही करतो हुंवनो तो अठे बाईं धूट लावण नै आवणो ? आगं पूछनी अनुभव ... ? अनुभव पद्ये कद करतो ? अनुभव बरण रो बोईं मौको देखे जणे ! का मा रं वेट मे ही कर लेवतो ? फेर पूछनी हाईस्कूल मे टिवीजन ? ... नंबर बिना परसेंट आया ? पडणो बोनी जणे पडईं सोद ही । आत्रकाम काम बाईं कगे हो ? हुह ! कडं बाईं बरम हू ? अं ही ईने-बीने इटरव्यू देऊ और निराम हुय-हुका'र बरे जाऊ पगे । इण

कागजातें दस्तावेज माग करूं नें कंबू काई ? रिफ नें कंबू ? बदगीरो नें कंबू ? पग में काई कर गेली ? में तो पग आदमी माग मू ? रिफा टैप रिफा टैप रिफा टैप रिफा टैप के पैला तो कंबूको हो । पगको तो इहायि आदमीवाप रो ही हो । पैलकें कंबू ररेको ही भी । मी तो कंबू रिफो के ही मागे गिगारग कर रो और कड रिफो मी मू बम पडपोदा दूजा गिगारगि आदमी बुनीप्रगदा । इया ही पापग दो भव भाग भरोने ही । यहीनी मोरभज महापत्र रें सारे रिफो कम पूडको हो । उगा रें मार्थे भेप० भेप० भेप० पाप मू ही कंडे दने मिफको हो पग मोहरी रिफो हाथ प्रा आरं ? भेप है भेप ! कं किता हरेक री गिगारग कर है । मार्थे कें रें हू कें देगू और सारें गूं जाने के जाने ही को हो भी ।

(७)

इयो तरें मू विपारां रो भजूडिपो पातको रेंको । इतें में दो टावर उग रें जन हंतता-हसता दोहता निकळ आरं । अंक दूभें रें सारें भागतो हूहें । उगा नें यो देगग लाग जातें । विचार धम जातें । इतें में उग नें गड री पटी रा टणका मुपीत्रें । बो गिणग लाग जातेंअंक.....दो.....हीन च्यार..... पांच.....द्वार.....सात और आठ । अरे ! आठ यजगी ? उग नें मा री भोजात्रण याद आ जातें और यो भचकें मू ऊभो हूय जातें । टुरती टैम ओ नितार्च कर लेतें कें जे बालआळें इंटरब्यू में सलेवट हूयगो तो ठीक, नही तो परसू मू उग प्रकाशक रें अठे ही सरू कर देवणो है काम ! सरम किण बात री ? हुसी नितो देती जाती । फेर बो सोय लेंगें कें पैला जी-सा नें पूछ लेंगणो ही ठीक है । उगा रें जघी री बात है । काल तो धो उपन्याग हो जमा करात्रणो है लाइवेरी में ।

इतें में अंक साइकलआळो उग रें माय आ पडें जणें उग नें ठा पडें कें बो के० ई० अेम० रोड मार्थे पान रेंको है ।

और बो च्यारांखानी देखतो खाथो-खाथो पग उठावणा सरू कर देतें जिण सूं टैमसर धरें तो पूग जातें ।

कालआळें इटरव्यू गानेर कंई नै कंयू काई ? जिण नै कंयू ? बदरीजी नै कंयू ? पण वं काई कर लेती ? वं तो उण आदम्या मांय सूं है जिंका टैम निःकळणो पदं कंत्रे कं पैलां तो कंत्रणो हो ! कलाणो तो म्हारी जाण-वंचाण रो ही हो । पैलकं कंयूर देख्यो हो नी । मनै तो कंयू दियो कं भे पारी सिफारस कर दी धोर बठे जिंको भे सूं कम पढघोड़ा दूजा सिफारती आदमी चुणीजग्या । ह्यो ही चाखण दो अवं भाग भरोमै ही । वठीनै गोरघन महाराज रे तारै किसो कम घूम्यो हो । उणां रे सार्यं अेम० अेल० अे० राव सूं ही कंई दफे मिल्यो हो पण नीकरी किसी हाथ आ जात्रे ? नेता है नेता ! वं किसा हरेक री सिफारस करै है । सारं कं दै हू कं देसूं और तारं सूं जाणे कं आयो ही को हो नी ।

(७)

इणो तरै सूं विचारा रो भूतूळियो चालतो रंयो । इत्तं मे दो टावर उण रे कने हंसता-हसता दौडता निकळ जात्रे । अेक हूजे रे तारै भागतो हूजे । उणा नं वो देखण लाग जात्रे । विचार थम जात्रे । इत्तं मे उण नै गळ री घड़ी रा टणका सुणीजे । वो गिणण लाग जात्रेअेकदो.....तीन च्यार.....पांच.....छत्र.....सात और आठ । अरे ! आठ वजगी ? उण नै मा री भोळान्नण याद आ जात्रे और वो भचकं सूं ऊभो हुप जात्रे । टुरती टैम ओ निसचं कर नेत्रे कं जे कालआळें इटरव्यू मे सलेक्ट हुपग्यो तो ठीक, नही तो परसूं सूं उण प्रकाशक रे अठे ही सरू कर वेत्रणो है काम ! सरम किण बात री ? हुसो जिंसी देखी जासी । फेर वो सोच लेत्रे कं पैला जी-सा नै पूछ लेत्रणो ही ठीक है । उणा रे जची री बात है । काल तो वो उपन्यास ही जमा करात्रणो है साइब्रेरी मे ।

इत्तं में अेक साइकलआळो उण रे माय आ पड़े जणे उण नं ठा पड़े कं वो के० ई० अेम० रोड भार्यं चाल रंयो है ।

और वो च्यारांतानी देरतो खाथो-खाथो पग उठात्रणा सरू कर देवै जिण सूं टैमसर धरं तो पूग जात्रे ।

अंतरात्मा की अवाज

—मोहन आलोक—

(१)

उपमन्त्रीजी कर्न सरकार की दियोडी फार, कोठी, आदर-मान सी की हो पण प्रान उणा नै बस की बेल बधावण वेगो कोई भलें सिरखो नही दियो हो । मंत्री एण बात की हाडी उचाट रंवती । अक दिन किणी उण नै आ'र बतायो कै शहर अक भोन मोटा महात्माजी आयोडा है, ये हुअे-नी-हुअे उणा कर्न जा'र आप रो बणो रोबो तो जरूर की हुय सक, उणा की अतरात्मा जिकी बात कै देनै जरूर पूरी ऊतरें है; महात्मा बडा पूगयोडा है । मंत्री आ सला मानी और महात्माजी नै जा'र आप रा सुरणा सुरणा ।

महात्माजी बोल्या—बेटा । तने सगन की प्रापती तो हुय सक है पण एण की गतर तने अक मोटो त्याग बरणो पडसी । उपमन्त्री वापडो तो पैलां सू ही घणो ही मानी धारु धार रंयोडो हो । बोल्पो—महाराज । ये हुकम करो, हू मोटै-सू-मोटो त्याग बरण वेई थ्यार हू, ये की तो हू एण उपमन्त्रीआडो कुरगही रं ठोकर मार दू ।

महात्माजी बोल्या—नहीं । एतरें थ्याग सू बाम बालण रो नहीं है, तने लाडी । एण सू ही मोटो त्याग बरणो पडसी, तने पाळटी बडळणी पडसी । म्हाती अतरात्मा वेई है कै एण पाळटी रं एहां सू धारा सगन-मुल रा एह भेट को सारं नी ।

मंत्री हसर बोल्पो—बस महाराज । ये तो मने डरा हो दियो हो, जिनी-नीक तो बाग है, मी तो जाण्यो, के टा बार्द थ्याग बरणो पडसी ? ओ तो उट्टो म्हारें और कायदे को बाम हुती । अवे जिबा बलाणाजी मुख्यमन्त्री है उणा की कुम्मी रं नीवे अक टाग म्हाती लगायोडी है, और हू जे बा टाग आज बाड सू तो रबम पाळटी आळा लो मने उपमन्त्री सू पुरो मकी बलावण गतर बाब थ्यार बंडा है । बाब हो मो कुम्मीआळा नी रजगपच निखरें दू हू ।

महात्माजी एण बाब सू हाडा मकी हुया । और उणा उण नै—बार्द काय उण रा—'आवकास' दियो बं तो-लो काने 'लाव' हो सगन-बाब हुती । उपमन्त्री महात्माजी नै तीई दिन मिथण रो बावटा दे'र बटोर हुया ।

कामभाई इतरम्बु मार बई नै बंबु बई ? रिग में बंबु ? बरहीरो नै बंबु ? पण बंबु बई कर गोमी ? बं तो उण भाइया मार मू ? रिवा टैम निरळ्या पणु बंबु के पैसा तो बंबुनी हो । पणालो तो इतरी ज्ञान-जीवान रो ही हो । पैसके बंबु देवरो हो भी । मनी तो कंबु दिवो के मी पागी गिफारम कर दो धोर बई दिवो मी मू कम पड्योहा दूजा गिफारमी भाइभी बुनीज्या । इयो ही पापन दो अरु भाग भरोनी ही । यदीये गोरपण गहाराज रं सारं रिगो काम पूज्यो हो । उणो रं मारु अम० अंन० अं० गाव मू ही बई दई मिस्वो हो पण नीरुतो रिगी हाथ आ जावं ? नेता है नेता ! बं किता हरेक री गिफारम करे है । गामं के दं हू के देगू और सारं मू जानं के बायो ही को हो नी ।

(७)

इणी तरं मू विचारां रो भद्रुळियो पाततो रंयो । इहां मे दो टावर उण रं कर्न हंसता-हंसता दोड़ता निकळ जावं । अंक दूअं रं सारं भागनी हुवं । उणां में वो देसन पाग जावं । विचार पण जावं । इहां मे उण नै गड री पही रा टणका मुणीजं । वो गिणण लाग जावंअंक.....दो.....तीन चार.....पांच.....छत्र.....घात और आठ । अरे ! आठ बजगी ? उण नै मा री भोळासन पाद आ जावं और वो भवके मू ऊभो हुय जावं । टुरती टैम ओ निसर्चं कर लेवं के जे कालआळें इतरम्बु में सलेवट हुय्यो तो ठीक, नही तो परमू मू उण प्रकाशक रं अठे ही सरू कर देवणी है काम ! सरम किण बात री ? हुसी जिमी देखी जाती । फेर वो सोच लेवं के पैसा जी-मा नै पूछ लेवणी ही ठीक है । उणां रं जचो री बात है । काल तो वो उपन्याम ही जमा करावणी है लाइब्रेरी मे ।

इहां में अंक साइकलआळो उण रं माय आ पडें जणं उण नै ठा पडें के बो के० ई० अंम० रोड मारुं चाल रंयो है ।

और वो च्पारांखानी देखतो खायो-खायो पण उठावणा सरू कर देवं जिण मू टैमसर घरं तो पूग जावं ।

हूँ साहित्यकार हूँ

—दीनानाथ खत्री—

हूँ साहित्यकार हूँ । बड़ो नामी साहित्यकार । म्हारी बड़ी पूछ है । पण आ पूछपा कै साहित्य मे म्हारी कित्तीरू पूच है । आज तो हूँ साहित्यकार हूँ । न साहित्यकार ।

छोट-बना घर रा लोग बुद्ध समझता । स्कूल मे मास्टर भणण में माठो बनाप्रता । पर मू बारें भायेला-मायेला दब्यु समझता । पण आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

जियां-तिया टगरी दास बरी । घरवाळा जाण्यो वेई हर्म रुपिया मू जेबां भरी । काम-बर्ध बास्ते फिरपो गळो-गळी । पण किस्मत रातळी । नोचरी बटई नही मिळी । पण आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

हूँ हूयो बडो निरास । रहण लाग्यो घणो उदास । माईता छोडी बमाई री आस । जीवण मे अधारो ही अधारो, बटई नही दीत्यो उजास । पण आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

अेक भिटाई गिटपिट । दपनर मे बाबू बणायो मटपट । बंटपो मारो दिन बमम रगडू । रोव जमावण नै खपटासी मू शगडू । तणया मे पडें बोनी पार । पर मं दरिदनासायण रो प्रसार । बरण लाग्यो सोच-विचार । जियेरी री जियां चालें बार । बीकर बमाऊ नाम । अर घर मे भी आवें दाम । आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

अेक दिन परेसां सारु घर मे हूयरी राइ । सोचण लाग्यो बाई करू जुगडू । अेक भायेने आगें जिकर बलायो । उण हाट अेक उपाइ बलायो । तनें दुजी बातां मू बाई सरोबार । मू तो बण जा साहित्यकार । आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

मी बॅयो आ जियां हूय सर्व सगसर । म्हारें स्थानर साहित्य रो बाळो आनर भेम कराबर । उण अनें सुर-मतर दीनो । हू उण रो पाटण कर सोनो । बाउ रो साधण्यो सार । हू बणायो हाट साहित्यकार । आज हूँ साहित्यकार हूँ । नामी साहित्यकार ।

(२)

जद उपमन्त्री जा'र आग रं मुख्यमंत्री नें आप रो पाळटी पळटण रो समंचार दियो तो मुख्यमंत्री देख्यो जरूर उपमन्त्री सूं पूरो मंत्री वणण नें बुद्धावतो हुंनला । सो उण उण नें पूरो मंत्री वणा देखण रो वापदो करणो । उपमन्त्री नें इण वात सूं हाडी झूझळ आयी । बोल्थो—ये काई जाणो हो कां हू उपमन्त्री सूं मंत्री वणण रं तालव मे पाळटी वदळू हूं ? हू तो यत, काई वात है, फारत पाळटी ही वदळणी है । ओ लो म्हारो अस्तीफो ।

अस्तीफो दे'र उपमन्त्री चालतो हुयो ।

मुख्यमंत्री देख्यो—आ तो आधी हुयी ! जाणूंजाण हो, सोच्यो—जरूर खिलाफ पाळटीआळा रो भरपोडो है ।

आखर उण राज रो सी० आई० डी० आळां नें बुला'र हुकम दियो कां से काम छोड'र पैलं इण वात रो ठा पाडो कां फलाणो उपमन्त्री पाळटी बदळणी क्यो चान्न है । हुकम ते'र सी० आई० डी० आळां उपमन्त्री रो लारो लियो और करतां-करावता असल वात रो वेरो पाड लियो । सी० आई० डी० आळा इण वात रो वंम भी मुख्यमंत्री रं बंठायो कां ओ आदमी जरूर खिलाफ पाळटीआळा सूं मिल्योडो है ।

अबै सा ! गोली कां री और गहणा कां रा ! मुख्यमंत्री उणी रात महात्माजी सूं क्यो जा'र मिलं नी ।

उपमन्त्री स वापडो वाचा रो बघ्योडो हो । दूजें दिन जा'र महाराज सूं नयो नारायण करी कां में अस्तीफो दे दियो है और खिलाफ पाळटीआळा सूं वातचीत भी कर ली है । महात्माजी आ सुण'र थोडी ताळ तो समाधि मे बंठया हा ज्यों-रा-ज्यों बंठया रंया । फेर होळें-सी बोल्या—उपमन्त्रीजी ! इणी पणा जा'र अस्तीफो पाड्यो ले लो । अबै चान्न पाळटी बदळण रो जरूरत कोनी रंयी । म्हारी अतरात्मा री अत्ताज है कां चान्न इणी पाळटी मे रंरण सूं 'तान्नळी हो पुन-रतन री प्रापती हुन्नणआळी है । न करं नारायण पाळटी वदळण सूं ये निपूता रं जाणो ।

पण महाराज ! परसूं ही तो ये मनै सतान री प्रापती वेई पाळटी वदळण रो कांयो हो—उपमन्त्री हाकां-डाकां हुयर बूझयो ।

आ म्हारी अतरात्मा री अत्ताज है—महात्माजी गभीर हुयर बोल्या ।

'पण महाराज ! आप री अतरात्मा मे आ चाणचक्र बदळावट क्यो ?'

म्हारी अतरात्मा पाळटी बदळ ली है—महाराज विपदिं गभीरता सूं उचळो दियो ।

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

—नरोत्तमदास स्वामी—

(१)

उपनिषद् मे परमात्मा नं अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् बंधो है—
सू भी छोटी और बड़े सू भी बड़े । पण परमात्मा ही नहीं, जिन जगत् मे परमा
ध्यात है वो जगत भी, परमात्माआळो दाई ही अणु सू भी अणु और महान सू
महान है ।

(२)

पैनी थापां अणु सू भी अणु में सेवा—

जगत या सागळा पदार्थ तत्वां सू वणिपोटा है । इन तत्वां रो मरता हउ
तत्वां रं तत्वां सू छोटी भाग में परमाणु बँडे । परमाणु अणु बणाई और अणुवां सू ज
या सागळा पदार्थ वणी । अणु कई भाग या हूँ—कई अणु अणु ही तत्वां रं अणु तत्वां
सू वर्ण, कई अणु ही तत्वां रं अणु परमाणुवां सू वर्ण, और कई अणु तत्वां
परमाणुवां सू वर्ण । अणुवां रो अणुवां अणु अणु सू अणुवां ही अणुवां वा वा वा
बँडी । मोने रो अणु अणु परमाणु सू अणुवां ही हूँ, अणुवां अणु वा अणु अणुवां
रं ही परमाणुवां सू वर्ण और अणुवां रो अणु अणुवां अणु रं अणु तत्वां हउ हउ रं
परमाणुवां रं मेऽ सू बँडे ।

पैनी विज्ञान रं विद्वाना रो ज्ञाना ही अणु परमाणु वा और अणु अणु हउ हउ
वा अणुवां और अणुवां है । इन रो अणु रो अणुवां रं अणुवां अणु
अणु हूँ अणुवां । अणु अणु रं अणुवां अणु रं अणुवां अणुवां
मही रंदा है । अणु अणुवां अणु है । अणुवां अणु परमाणु हउ अणु अणुवां
अणु है । अणु अणु अणुवां हउ है—अणु अणुवां अणु अणुवां अणुवां
अणुवां और अणुवां । अणुवां रं अणुवां अणुवां अणुवां अणुवां अणुवां

बीबही मैं लिखाम बजाओ । बसुंरिणी मू निर कुराओ । दिनी-आन बर
रगःका । मण कोरी म कुराओ लिखःका । धरुवःका म काद रकाओ । एर दीन
साओ साहित्यकार । मण नी बँदी—बगःका कःका लिखः । आज हू साहित्यकार हू ।
नामी साहित्यकार ।

बहाक बानी इहाँ हूच रेकी माय । पर म ओ सोरःका आबन गणन दान ।
साहित्यकार गणःका म निमकन पाऊ । कडिया और मेला मू रोड जमाऊ । बान नै
मिग भाबे का । मारुं हूके जय-जयकार । आज हू साहित्यकार हू । नामी साहित्यकार ।

बहा मेला और मनी मे जगै । इहाँ मःका मू हो मनै सिदानै । हू उगा रं बन
आऊ । बरोबर रे कुगःका पाऊ । उगा रे बहाई म कडिया गुमाऊ । इहाँ उज्ज
मीधो कर भाऊ । बँ मारुं इहाँ मरुमाय । हू मगःका मू मूयं महान । आज हू साहित्य-
कार हू । नामी साहित्यकार ।

ये बसू टपकाओ पाऊ ? ये भी बन जावो साहित्यकार । जो बान ओतो कोनी ।
घरुं परैगा रे भी सोद बोनी । गुगःका हू बगाऊ मारुं । ये रागःका इण नै सारुं ।
पोड़ी-नी दिवदम रे दरकार । पोणो पारुं ओ योगार । आज हू साहित्यकार हू ।
नामी साहित्यकार ।

मौलिकता जरूरी कोनी । दुँदा रे भी बघन कोनी । प्रयोगवाद रे सहारो लेवू ।
जियां पारुं वसू निग देवू । ध्यावरण मू मनै बाई सरोवार ? आज हू साहित्यकार
हू । नामी साहित्यकार ।

लेख-कवितावा रे शटी लगा दू । कहानियां और उगन्यास भी छत्रा दू । रेखा-
चित्रा रे कमी न रागू । पण पासू तो बूड़ नही भागू । आ सगळी घोसै रे टुनी ।
माय मू है पोल-पट्टी । इसी याता रे काई विचार । राम लगारुं बेडो पार । आज हू
साहित्यकार हू । नामी साहित्यकार ।

अक लेण अठै मू लेणी । अक लेण बठै मू लेणी । अक भास कठै मू लेणी । दूजो
जर्ब जठै मू लेणी । अनुवाद रे तो काई फँणी । नही वणै तो नकल कर लेणी । इण
विध करणी रचना त्यार । जद वाजोला साहित्यकार । आज हू साहित्यकार हू । नामी
साहित्यकार ।

अजुं अधूरो है साहित्यकार । इजै गुणा रे भी हुसणो भडार । पुराण साहित्यकार
रे प्रतिशत थोड़ी । उगा रे आज चाले नही थोड़ी । उगा मू मेळ राखणो थोड़ी ।
धणो-धणो अटकाणो रोड़ी । उगां मू मदा रँणो हुशियार । नही तो बूबोला मझधार ।
आज हू साहित्यकार हू । नामी साहित्यकार ।

संस्थावा रे सिरजण करणो । गुटवाजी रे गँणो पैरणो । सूई पर प्रशसा करणी ।
चमचागिरी जोर रे करणी । अँ हयकडा जे अपणावो । पूरा साहित्यकार वण जावो ।
घांरी हुवँ जय-जयकार । आज हू साहित्यकार हू । नामी साहित्यकार ।

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

—नरोत्तमदास स्वामी—

(१)

उपनिषद् में परमात्मा न अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् बंधो है—
 मू भी छोटी और बड़े मू भी बड़ी । पर परमात्मा ही नहीं, जिस जगत् में परमात्मा
 व्याप्त है वो जगत् भी, परमात्माअच्छी चाई ही अनु मू भी अनु और मूत्त मू भी
 महान है ।

(२)

पैनी आया अनु मू भी अनु नै मेधा—

जगत् का सगुण पदार्थ तन्मा मू बनिघोहा है । इस तन्मा की सत्ता ६२ ॥
 तन्म रे सब मू छोटी भाग नै परमाणु बंधे । परमाणु अनु वगैर और अनुमा मू
 का सगुण पदार्थ बणी । अनु कई भाग मू हूँ—कई अनु बंध ही तन्म रे बंध परमाणु
 मू बणी, कई बंध ही तन्म रे अनेक परमाणुका मू बणी, और कई बंध तन्मा रे
 परमाणुका मू बणी । अनेक से अनेक कई बंध मू बनिघ है उपनिषी तो दो मू
 बणी । सोने से अनु बंध परमाणु मू बनिघोहा हूँ, आयरन से अनु आयरन
 रे दो परमाणुका मू बणी और पाणी से अनु आयरन रे बंध तन्मा आयरन रे दो
 परमाणुका रे मूट मू बणी ।

पैनी विज्ञान रे विद्वानों की मानना ही है परमाणु मू और सब तही हूट सब
 को अणुकीय और अविभाज्य है । दुर्गाई जगत् में परमाणु नै अणु बंधे जिस म
 अणु हूँ अ विभाज्य । एक बंधे, अणुकीयविज्ञान रे अणुकीय बंधे, परमाणु अणुकीय
 मही रेवो है । उप नै छोटीक बंधे है । सोनेका मू परमाणु हूट बना से विभाज्य
 बंधे । मूट बना से सोने हूट है—एक, जिस और विद्वान् उपनिषी मूट
 अनुमा और अणुकीय । परमाणु रे मूट से अणुका अणु बना से अणुकीय हूँ जिस

कोई २५ करोड़वें भाग रं बराबर) । इन रो मतलब थो हूयो कं पचीस करोड़ पर-
माणुवा नै बराबर-बराबर अेक बतार मे जमावने राता ती बतार ती लखाई कोई दो
इच हूमी । 'पिनी' नामक अगरेजी सिक्कं ती जाहाई कोई दस करोड परमाणुवां ती
बतार रं बराबर हूवें । पाणी हाइड्रोजन अर आक्सीजन रं भेळ सूं वणें । आधी
छटाक पाणी में आक्सीजन रं कोई १०^{-१०} अर्थात् अेक करोड शत परमाणु हूवें ।

प्रोटोन रो अर्धव्यास १०^{-१०} अर्थात् १/१० ००,००,००,००,००० सेंटीमीटर हूवें
अर्थात् अेक सेंटीमीटर रो दस अरबवसो भाग । इलेक्ट्रोन ती और-ही छोटो हूवें । उण
रो अर्धव्यास कोई १०^{-१०} अर्थात् १,००,००,००,००,००,००० सेंटीमीटर हूवें अर्थात्
अेक सेंटीमीटर रो अेक नीलवो भाग । बराबर-बराबर जमावा सूं अेक इंच मे कोई
सत्रा नील इलेक्ट्रान हूवें ।

(२) महतो महीयान्

पृथ्वी नै मही, भूमि और अनन्ता केंब्रे कारण वा बडी है, लाबी-चौडी है, घणी
विगळ है और उण रो अत निजर मे नही आने । पण पृथ्वी, मही, भूमि और अनन्ता
कंयीअणवाळी इन पृथ्वी ती आकाश में दीखणवाळा ज्योतिषिण्डां मे कोई गिणती
नहीं है ।

रात रं अत आकाश मे अणगिणती ज्योतिषिण्ड चमकता दीगें । अं ज्योतिषिण्ड
दो भांत रा है—(१) नक्षत्र और (२) ग्रह और उपग्रह । नक्षत्र घणा बडा हूवें और
आप ती चमक सूं चमकें । ग्रह और उपग्रह छोटो हूवें और अं नक्षत्र ती चमक सूं
चमकें । मूरज, ध्रुव, रोहिणी, व्याध, अगस्त्य और ज्येष्ठा नक्षत्र है और बुध, शुक्र,
पृथ्वी, मंगळ, बृहस्पति, शनि, अरुण (गुरेनस), वरुण और यम (प्लूटो) अं नक्ष्र ग्रह है
जिवा मूरज रं बारकर परकमा करना रेंवें । अरुणमा उपग्रह है । बी पृथ्वी रं बारकर
परकमा करे । ग्रहा मे बुध मंगळा सूं छोटो और बृहस्पत मंगळां सूं बडो है । बुध रो
ध्यास कोई तीन हजार मील है और बृहस्पत रो कोई छयासी हजार मील । मूरज
पृथ्वी सूं १३ लाख गुणो बडो है; पृथ्वी जिता-जिता १३ लाख विड हूवें जद कर्टई जायनें
मूरज रं बराबर हूवें ।

मूरज ग्रहां सूं घणी बडो है पण घणा सारा नक्षत्र मूरज सूं भी बडा है । मूरज
अेक औसत सखाई रो नक्षत्र है, बडा नक्षत्रा मे उण ती कोई गिणती बोनी । मूरज सूं
बडा नक्षत्रा मे कई-अेक इन भात है—

२ उच्चार्थ और अंघर्षण : इतिहासती आर्ष भावस पृष्ठ २५

१ —सानी—

देवयानी (अंड्रोमीडा) की नीहारिका आकाशमग रं निक्ट की नीहारिका उठें सू अठें ताई आब्रनां रोमणी नै कोई १५ लाख बरस लागे । उण सूं आगं दूरी ताई करोहूं नीहारिकाआ आकाश मे बिगरियोडी है ।

मसार की गब नू बडी दूरबीण अमरीका मे पन्नोमार पहाडी पर है । लागियोठें बाब रो ध्याम दो सौ इंच है । बा मिनय की बाल की तुलना मे तीन लाख गुणी रोमणी बटोरें । उण नू दो अडब प्रकाश-वर्ष ताई की दूरी पर मो नीहारिकाआ देखी जा सकें है । इण नीहारिकाआ रं आगं काई है इण बात जाणण रो मौजूदा हालत मे कोई साधन नही है ।

कित्तो विशाल है आपणो ओ ब्रह्माण्ड ! ओर कुण जाणें इसा-इसा विशाल कित्त ब्रह्माण्ड है इण जगन् में, इण मसार मे, परमात्मा की इण सृष्टि मे !

इण भान आपा देखियो कें ओ जगन् भी, आप रं नियामक परमात्माआळी दाई ही, अेक ही साथै अणोद् अणीयान् और महतो मंहोयान् दोनू है ।

नक्षत्र—	सूरज मू. नितां वडो	नक्षत्र	सूरज मू. नितां वडो
व्याघ्र—	६ गुणो	भरत	६ हजार गुणो
अभिजित्—	१३ गुणो	हस्तानि	२७ हजार गुणो
मघा—	१२५ गुणो	रोहिणी	५६ हजार गुणो
ब्रह्मरुद्र—	१७२८ गुणो	आर्द्रा	२ करोड गुणो
		ज्येष्ठा	११ करोड गुणो

नक्षत्रों में ज्येष्ठा, आर्द्रा रं नक्षत्र रं गुजब, सब सूं वडो है। यो अंकलो ही ११ करोड़ सूरजों रं बराबर है। यो इततो वडो है की मगळ ग्रह री भ्रमण-कक्षा समेत सगळो सौर-परिवार उण में सोरो-सोरो समाय जावै।

सूरज पृथ्वी सूं कोई ६३० लाख मील दूर है। रोसणी अंक सेकंड में १,८६,००० अंक लाख छयासी हजार मील (कोई तीन लाख किनोमीटर) चलै। सूरज री रोसणी नं पृथ्वी ताई आवता कोई ६ मिनट लागै। पण पृथ्वी और सूरज रं जिको नेड़लोई-नेड़तो नक्षत्र है (प्रोकजीमा सेंटारी) उण री रोसणी नं अठे आवतां च्यार बरसां सू ऊपर वखत लागै। इण रो मतलब थो हुयो की थो नक्षत्र अठे सू कोई अडाई मील मील दूर है। सूरज और इण नक्षत्र रं बीच में दूजो कोई नक्षत्र कोनी। बीच री सगळी जागा खाली जागां (अक्षकाश अथवा थोय यात्र) है। सगळा नक्षत्र इणी भात अंक दूजें सू घणा-घणा आघा है।

अंक-दूजें मूं अडवा-खडवा मीला री दूरी माथे विस्तरियोडा अं सगळा नक्षत्र आकाशगंगा नामक विश्व रं मांयने है। आकाशगंगा में कोई अंक खडव नक्षत्र है। आकाशगंगा रो विस्तार घणो मोटो है। उण रं अंक तिरें सू दूजें तिरें ताई पूरण में रोसणी नं कोई अंक लाख प्रकाश-वर्ष लागै (अंक प्रकाश-वर्ष कोई ५८ खडव मीलां रं बराबर हुवै)।

इण ब्रह्माण्ड में आकाश-गंगा जिसा-जिसा लाखानलाख विश्व है। अं विश्व नीहारिकात्रा रं रूप में दीसै। इण विश्व रं बीच में अपार खाली जागा अर्धान् अक्षकाश या आकाश है। अक्षकाश जाणें अंक विनाल समदर है। समदर में जियां अनेक टापू तैरता रंई जियाई अक्षकाश में अं विश्व जाणें तैरता रंई।

- ५ गोलीकेरे : जर्नी प्रू दि युनीवर्स
 ५ गोल्डन बुक ऑफ् अॅस्ट्रानामी, पृष्ठ ७५
 ६ सागो, पृष्ठ ७५

देवयानी (अंडोर्मादा) की नीहारिका आवाजगगा रं ज्जिट की ५,
उठे मू अठे ताई आबना रोगनी नै बोई १५ माग वाम माई
दूरी ताई करोडू नीहारिकावा आवाज मे सिगरियोही है ।

ममार की सब मू वही दूरवीण अमगीका मे पदोमार पहाडी
सागियोई बाच रो ध्याम दो मो इच है । वा मिनग की आग की ...
तीन साम गुनी रोगनी वटोरें । उण मू दो अठव प्रबाज-वपें ताई की दूरी
नीहारिकावा देगी जा तक है । इन नीहारिकावा रं आग बाई है इन
जाण रो मौजूदा हातन मे बोई माघन नहीं है ।

चित्तो विनाल है आरगो ओ बहाण्ड । और कृण जाणें इगा-इमा ...
बहाण्ड है इन जगन् में, इन ममार मे, परमात्मा की इन मृष्टि में ।

इन मान आया देगियो कं ओ जगन् भी, आप रं नियामक परमारमावाळी बाई
ही, अक ही माथें अणोर् अणीयान् और महती भहीयान् दोनुं है ।



संपादकीय

जागती जोत रो दूजो अंक आप रं हाथा मे सूपता म्हानं पणो हरख है । राजस्थानी साहित्यकारा अर विद्वानां पत्रिका रं पैलं अक री सामग्री अर साज-गज्जा नं पसद करी, जिण मू सपादका रो उरगाह बघ्यां । इसो अनुभव हूअं के राजस्थानी भाषा रा कन्निकोविद जागती जोत नं आप री निजी पत्रिका मानी और आप रो स्वाभाविक स्नेह परगट करघो ।

इण बात पर जागती जोत रा सपादक अर प्रकाशक हृपं अर कृतज्ञता परगट करे हूअं अेक अक मे ही पत्रिका इत्ती लोकप्रियता पावण मे समर्थ हुयी अर कन्निकेखका भी इण नं भरपूर सहयोग देवणो सारू कर दियो । फेर भी निव्वेदन करणो जहरी सखारं है के आप सगळा इण वान सू तो सहमत हुओ के आपणी आ पत्रिका भारत री किणी दूजो भाषा री पत्रिका मू हळकी नो उतरं, इण वास्तं पत्रिका रो स्तर और भी ऊचो यणावणो पडसी । पत्रिका रं स्तर रा निर्माता आप सगळा साहित्यकार ही हो ।

जिण भात बोई चितेरो चित्राम माई, मिटाई अर फेर माई; वो मिटावतो अर मावतो ही जाअं जद ताई उण नं पुरो सतोप नो हूअं; उणी भात लेखक रो घरम भी विणी बळावार मू न्यारो कीनी । कळाकार ज्यू लेखक भी चित्राम माई पण समाज रं आये उण नं जदई मेलं के जद खुद लेखक री निजर मे उण री कृति मे कठई कोई कतर, बोई भूल-पूक, नी रंई । जे लेखक रं इण घरम नं सगळा साहित्यकार आप रं आये राखं तो लेखक अर उण री कृति नं ऊचो उठण मे मोबळी मदद मिले ।

जागती जोत रं सामने दो मारग है—अेक तो ओ के आअं जिसी ही रचनावां धाप दी जाअं अर दूजो ओ के प्राप्त रचनावां नं माबळ परसनं धारं । संशक तो जदई राजी रंई जद बा री भेजयोई हरेव रचना ज्यू-री-ज्यू ही धारं, अगद्यनी नी पढ़ी रंई अथवा पाद्यी नी आअं । पण पत्रिका रं स्तर नं ऊचो उठावण सारू लेखका री धीरज अर उदारता री सपादकां नं पणी जहरत रंई ।

अब राजस्थानी लेखका रं आये अनेक पुरस्कार-प्रतिबोधिनावां भी है । अं पुरस्कार राजस्थानी भाषा साहित्य सभ, केन्द्रीय साहित्य अकादमी अर बई राजस्थानी-प्रेसो मनी-धानी सज्जता री तरफ मू हर साल दिया जाती । इमी स्थिति मे राजस्थानी

संगम-समाचार

मिगसर बंदी १, स० २०२१ वि०, दिनांक २१ नवंबर, १९७२ नै सत्या री सूं राजस्थानी महाकवि राठोड पृथ्वीराजजी री वरस-गाठ ज्ञानोदय पारीक सार्वज समिति मदन, बीकानेर, मे राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री मुरलीधरजी व्यास अध्यक्षता मे मनायीजी जिण रो सयोजन श्री श्रीलाल नयमलजी जोती करयो ।

एण अइसर भार्य प्रमुल वक्ताका मे सर्वथी सत्यनारायणजी पारीक, डा मनोहरजी शर्मा, अबालालजी भाधुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी लखी अर दीनदयालजी ओझा हा ।

सत्या री तरफ मू श्री सुयंमल्ल-गुरस्वार, राजस्थानी-गद्य-गुरस्वार, राजस्थानी-पद्य-गुरस्वार अर राजस्थानी-अेकरूपता-गुरस्वार, कृत व्यास गुरस्वारां गारू पोष्पां आमनिन बारीजी जिण मे पंलै तीन गुरस्वारां गारू लेगकां आर री पोष्पां भेत्री है । सत्या री तरफ मू छयण गानर भी मोकळी पोष्पां आयी है । प्रबामन-गायना गानर भी घणी सारी किताबां पूर्ती है । एण बाबन त्रिवा निर्णय भेयीरणी उगा री प्राणकारी आगलै अब मे दिरीजती ।

संगम री कार्यकारिणी सभा री दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी री सभापतिपत्र मे दिनांक २४-१२-७२ नै हुयी । एण सभा मे डा० मनोहरजी शर्मा अध्यक्षता री कारण मानद सचिव रै पद मू त्यास-पत्र उपस्थित करयो, बिबो स्वीकार करिगो और निर्णय जियो गयो वें संगम रा सभापति तीन मांहा रो वैतय अबादनी रै अख्या नै भेत्री और अध्यक्ष तीना मांहां मांय मू महें मानद करी रो निर्वाचन करे । सभापति द्वारा वैतय भेजई आग्रण मू पैली हो अध्यक्ष मानद करी रो विदुक्ति कर हो बिब मू संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी रूप रो त्यास-पत्र अबादनी-अध्यक्ष नै उदयपुर भेज दियो । अबादनी-अध्यक्ष स्वामीजी रो त्यास-पत्र अबाद स्वीकार करनै अस्थादी तीर पर भीरें मुखब मही कार्यकारिणी रो खोजना करी है -

संगम-समाचार

मिगसर वदी १, स० २०२६ वि०, दिनांक २१ नवंबर, १९७२ नें संस्था की तरफ स० राजस्थानी महाकवि राठोड पृथ्वीराजजी की वरस-गाठ ज्ञानोदय पारीक सावंजनिक समिति भद्रन, बीकानेर, मे राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री भुरळीधरजी व्यास की अध्यक्षता मे मनायीजी जिण रो सयोजन श्री धीलाल नथमलजी जोशी करधो ।

एण अक्षर मार्य प्रमुख वक्तात्रां मे सर्वथी सत्यनारायणजी पारीक, डा० मनोहरजी शर्मा, अकालालजी माधुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी शर्मा अर दीनदयालजी ओझा हा ।

सस्था की तरफ स० श्री सूर्यमल्ल-पुरस्कार, राजस्थानी-गद्य-पुरस्कार, राजस्थानी-पद्य-पुरस्कार अर राजस्थानी-अंशरूपता-पुरस्कार, कुल च्यार पुरस्कारां सारू पोष्यां आमंत्रित करीजी जिण मे पैले तीन पुरस्कारा सारू लेखकां आप की पोष्यां भेजी है । सस्था की तरफ स० छपण एतार भी मोकळी पोष्यां आयी है । प्रकाशन-भायता एतार भी घणी सारी किताबां पूगी है । एण बाबत जिबा निर्णय लेयीजमी उणां की जाणकारी जाणलें अक मे दिरीजती ।

संगम की कार्यकारिणी सभा की दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रें सभापतिश्र मे दिनांक २४-१२-७२ नें हुयी । एण सभा मे डा० मनोहरजी शर्मा अध्यक्षता रें कारण मानद सचिव रें पद स० त्याग-पत्र उपस्थित करधो, जिचो स्वीकार करीग्यो और निर्णय लियो गयो वें संगम रा सभापति तीन नांवां रो वैतम अकादमी रें अध्यक्ष नें भेजे और अध्यक्ष तीनां नांवां मांय स० नई मानद मंत्री रो निर्वाचन करे । सभापति द्वारा वैतम भेज्ये जाइण स० देवी ही अध्यक्ष मानद मंत्री की नियुक्ति कर ही जिण स० संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी आप रो त्याग-पत्र अकादमी-अध्यक्ष नें उदघपुर भेज दियो । अकादमी-अध्यक्ष स्वामीजी रो त्याग-पत्र मन्त्रेद स्वीकार करन अस्थादी तीर पर नीबें मुजब नवी कार्यकारिणी की घोषणा करी है -

संगम-समाचार

मिगसर वदी १, स० २०२६ वि०, दिनांक २१ नवंबर, १९७२ नई संस्था की तरफ से राजस्थानी महाकवि राठोड पृथ्वीराजजी की वरस-गाठ ज्ञानोदय पारीक सार्वजनिक समिति भद्रन, बीकानेर, में राजस्थानी-साहित्य-वाचस्पति श्री मुरळीधरजी व्यास की अध्यक्षता में मनायीजी जिण से संयोजन श्री श्रीलाल नयमलजी जोशी करघे ।

इस अक्षर मार्ग प्रमुख वक्ताओं में सर्वश्री सत्यनारायणजी पारीक, डा० मनोहरजी शर्मा, अबालालजी माधुर, मोहनलालजी पुरोहित, प्रह्लादजी व्यास, दीनानाथजी खत्री अर दीनदयालजी ओसा हा ।

संस्था की तरफ से श्री गुरुमल्ल-पुरस्कार, राजस्थानी-गद्य-पुरस्कार, राजस्थानी-पद्य-पुरस्कार अर राजस्थानी-शैकरूपता-पुरस्कार, कुल चार पुरस्कारों साके पोष्यां आमंत्रित करीजी जिण में पैले तीन पुरस्कारा साके खेसकां आर की पोष्यां भेजी है । संस्था की तरफ से उपलब्ध सातर भी मोकळी पोष्यां आयी है । प्रकाशन-सायता सातर भी घणी सायी बिताकां पूगी है । इण बाबत त्रिबा निर्णय खेयीजमी उणां की जाणकारी आगले अक में दिरीजती ।

संगम की कार्यकारिणी सभा की दूजी बैठक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी से सभापतिपत्र में दिनांक २४-१२-७२ नई हुयी । इण सभा में डा० मनोहरजी शर्मा अक्षररचना से कारण मानद सचिव से पद से त्याग-पत्र उपस्थित करघे, त्रिभो स्वीकार करीगयो अर निर्णय लियो गयो क संगम से सभापति तीन मांहा से वैतल अकादमी से अध्यक्ष नई भेजे अर अध्यक्ष तीनां मांहां माय से नई मानद सचो से निर्वाचन करे । सभापति द्वारा वैतल भेजे जाइल से पैले ही अध्यक्ष मानद सचो की निवृत्ति कर ही जिण से संगम-सभापति श्री नरोत्तमदासजी स्वामी भी आप से त्याग-पत्र अकादमी-अध्यक्ष नई उदयपुर भेजे दियो । अकादमी-अध्यक्ष स्वामीजी से त्याग-पत्र सजेद स्वीकार करे अस्थादी तीर पर नीवे मुजब सही कार्यकारिणी की खोजला करी है ।

१. श्री गुरुसोपटजी ध्यान, तमावति
२. डा० मनोहरजी शर्मा, सदस्य
३. डा० नारायणतिहजी भाटी, सदस्य
४. श्री रावतजी सारस्वत, सदस्य
५. श्री वेदव्यासजी, सदस्य
६. श्री विजयदानजी देवा, सदस्य
७. श्री सीतारामजी गहपि, सदस्य
८. श्री रामनाथजी व्यास 'परिवर', सदस्य
९. श्री नृसिंहजी राजपुरोहित, सदस्य
१०. श्री मृळचंदजी प्राणेश, सदस्य
११. श्रीमती लक्ष्मीकुमारीजी चूडायत, सदस्य
१२. श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी, मानद सचिव
१३. अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)
१४. निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन सदस्य)

संगम सू प्रकाशित सहयोग रो नूतो—प्रकाशन सरुया २ रं जवाव मे संगम-कार्यालय मे इसा मोकळा कागद आया, अर आर्त है, जिणां में संगम रं कामा मे पुरो सहयोग देवण रा वचन है । ओ अंक घणो शुभ लक्षण है, अर राजस्थानी साहित्यकारा रो इणी तरै जे संगम नै सहयोग मिलतो रैयो तो संगम निश्चित रूप सू अंक घणी उपयोगी सस्था वणनै साहित्यकारा अर साहित्य री स्थायी सेव्वा कर सकसी ।

‘जागती जोत’ र लेखकां सू निवेदन

१. ‘जागती जोत’ मे छापण-सारू अप्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय रचना ही भेजो जावै ।

२. रचना कागद रँ अंक कानी हासियो छोड’र साफ-साफ आखरा मे लिखियोडी, अपवा साफ टकित, हुणी चायीजै ।

३. छापण-सारू स्त्रीकृत रचना री सूचना लेखक नै रचना-प्राप्ति सू अंक महीनै रँ भीतर दे दी जाती ।

४. अस्त्रीकृत रचना पाध्री मंगान्त्रणी हुनै तो उचित टाक-टिकट सगायोडी लिफाफो रचना रँ साथै आबणो चायीजै ।

५. स्त्रीकृत रचना कद और किसँ अंक मे छपसी ओ बलाबणो सभन्न नही हुसी । इण विषय मे आयोडा पत्रा री उत्तर नही दियो जाती । स्त्रीकृत रचना रँ प्रकाशन खातर ताकीद न करी जावै ।

६. पत्रिका मे छपियोडी हरेक रचना साथै पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था है । रचना रँ प्रकाशित हुया पाछै अंक महीनै रँ भीतर पारिश्रमिक री रागि लेखक नै भेज दी जाती ।

७. छपण नै दी जावणवाडी रचना मे समोधन करण री अधिकार सपादक-मदळ नै हुमी ।

८. पत्रिका री संपादन-सबधी सगळो पत्र-व्यवहार सपादक, जागती जोत, रँ टिकाणै सू और व्यवस्था-सम्बन्धी सगळो पत्र-व्यवहार मानद मनी रँ टिकाणै सू, करपो जावै ।

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर (राजस्थान)

- १ श्री गुरुपीथरजी स्थाप, मध्याह्न
२. श्री० शंभूदरजी कपी, मद्रास
३. श्री० माधवगिहरीजी भाटी, मद्रास
- ४ श्री गणेशजी मारुतजी, मद्रास
५. श्री वेदव्यासजी, मद्रास
६. श्री विजयदानजी देवा, मद्रास
७. श्री गीतारामजी मह्यि, मद्रास
८. श्री रामनाथजी स्थाप 'परिवर', मद्रास
९. श्री गृगिहरी राजपुरोहित, मद्रास
१०. श्री मुञ्जदजी प्राणेश, मद्रास
११. श्रीमती लक्ष्मीदुमारीजी शूद्रावन, मद्रास
१२. श्री श्रीवास नयमतजी जोशी, मानड तपिष
१३. अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन मद्रास)
१४. निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (पदेन मद्रास)

संगम सू प्रकाशित सहयोग री नूतों—प्रकाशन संस्था २ रँ जयाव में संगम-
 नवर्षालय में द्वाता मोकळा कागद आया, अर आरं है, जिणी मे संगम रँ नामो मे पुरो
 सहयोग देवण रा यवन है । ओ अंक यणो शुभ लक्षण है, अर राजस्थानी साहित्यकारा
 री हणी तरें जे संगम नै सहयोग मिलतो रँयो तो संगम निश्चित रूप सू अंक यणी
 उपयोगी संस्था यणनै साहित्यकारा अर साहित्य री रचामी सेवा कर सकती ।

‘जागती जोत’ र लेखकां सूं निवेदन

१. ‘जागती जोत’ मे छापण-सारू अग्रकाशित, मौलिक अर स्तरीय भेजो जावै ।
 २. रचना कागद र अेक कानी हासियो छोट’र साफ-साफ आखरां में । अयथा साफ टंकित, हुणी चायीजै ।
 ३. छापण-सारू स्त्रीकृत रचना री सूचना लेखक नी रचना-प्राप्ति सूं अेक र भोतर दे दी जाती ।
 ४. अस्त्रीकृत रचना पाछी मंगावणी हुवै तो उचित डाक-टिकट सगयोडो लिफाफो रचना र साथे आबणो चायीजै ।
 ५. स्त्रीकृत रचना बढ और किये अंक मे छपसी ओ बत्तावणो सम्भव नही हुसी । इन दिवस मे आयोडा पत्रां री उत्तर नही दियो जाती । स्त्रीकृत रचना र प्रकाशन खातर साबीद न करी जावै ।
 ६. पत्रिका मे छपियोकी हरेक रचना माथे पारिश्रमिक देवण री व्यवस्था है । रचना र प्रकाशित हुयां पाछे अेक महीने र भोतर पारिश्रमिक री राशि लेगक नी भेज दी जाती ।
 ७. छपण नी दी जावणवाली रचना मे समोधन करण री अधिकार संपादक-मदल नी हुसी ।
 ८. पत्रिका री संपादन-संबधी सगउो पत्र-व्यवहार संपादक, जाननी ओन, र टिपणै सूं ओर व्यवस्था-संबधी सगउो पत्र-व्यवहार मानद बनी र टिपणै सूं करणो जावै ।
- राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर (राजस्थान)

‘जागती जोत’ रँ स्वामित्व रो विवरण अर दूजी सूचनावां

- | | |
|--|--|
| १. प्रकाशन रो स्थान | —बीकानेर |
| २. प्रकाशन रो अवधि | —तिमाही |
| ३. मुद्रक रो नांव
राष्ट्रीयता
पतो | —रवि अम्रनाळ
—भारतीय
—माहनं प्रिन्टसं
११५३, बाग मुजफ्फरखान
आगरा-२ |
| ४. प्रकाशक रो नाम
राष्ट्रीयता
पतो | —श्रीलाल न० जोशी
—भारतीय
—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी), बीकानेर |
| ५. संपादक रो नांव
राष्ट्रीयता
पतो | —नरोत्तमदास स्वामी
—भारतीय
—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी), बीकानेर |
| ६. उण व्यक्तियां रा नाम
अर पता जिका समाचार-
पत्र रा अधिकारी है | —राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी), बीकानेर |

हैं, श्रीलाल न० जोशी, घोषित कल हें कँ ऊपर लिखियोड़ी विवरण म्हारी जाण-
कारी अर विश्वास मुजब सरो है ।

श्रीलाल न० जोशी

मानद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),
बीकानेर

राजस्थानी भाषा के विकास के विवरण का मुझे सूचना

- | | |
|---|--|
| १. विकास के स्तर | — बी.ए.ए. |
| २. विकास के अवधि | — १९५० |
| ३. मुद्रण के माध्यम | — ए.ए.ए. |
| राष्ट्रीयता | — भारतीय |
| पत्र | — भारत के विद्यार्थी |
| | १९५१, भाषा मुद्रणालय |
| | आदरा-२ |
| ४. प्रकाशक के नाम | — श्रीमान् न० जोशी |
| राष्ट्रीयता | — भारतीय |
| पत्र | — राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी), बीकानेर |
| ५. संपादक के नाम | — नरोत्तमदास स्वामी |
| राष्ट्रीयता | — भारतीय |
| पत्र | — राजस्थानी भाषा साहित्य संगम
(अकादमी), बीकानेर |
| ६. उक्त व्यक्तियों का नाम | — राजस्थानी भाषा साहित्य संगम |
| अथवा पता जिका समाचार-
पत्र का अधिकारी है | (अकादमी), बीकानेर |

हैं, श्रीलाल न० जोशी, घोषित करूँ हूँ कि ऊपर लिखियेडो विवरण म्हारी जाणकारी अरु विश्वास मुजब खरो है ।

श्रीलाल न० जोशी

भातद मंत्री

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी),
बीकानेर

